शेमुषी

प्रथमो भागः

नवमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

0961

प्रथमो भागः

नवमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0961 – शेमुषी (प्रथमो भागः)
नवमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

ISBN 81-7450-470-2

प्रथम संस्करण
जनवरी 2006 माघ 1927

पुनर्मुद्रण
जनवरी 2007 पौष 1928
दिसंबर 2007 आश्विन 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2012 माघ 1933
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937
जनवरी 2017 पौष 1938
दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939
मार्च 2019 फाल्गुन 1940
जनवरी 2020 पौष 1941
मार्च 2021 फाल्गुन 1942
नवंबर 2021 कार्तिक 1943

PD 20T RPS

₹ 50.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा आनंद ब्रदर्स, 1739, एच.एस.आई.आई.डी.सी इंडस्ट्रियल इस्टेट, राय, डिस्ट्रिक्ट सोनीपत (हरियाणा) द्वारा मुद्रित।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. क्कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनुप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*
सहायक संपादक : *ओम प्रकाश*
उत्पादन सहायक : *राजेश पिप्पल*

चित्रांकन
सुजीत सिंह

आवरण
आलोक हरि

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय-ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितशिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु सम्भाषणस्य, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां,

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

आभार
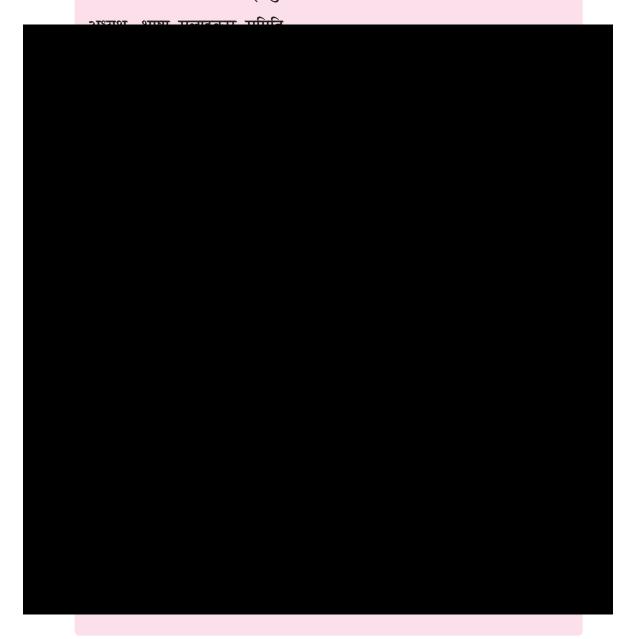
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं विभागीय सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है। अकादमिक सहयोग के लिए परिषद् देवर्षि कलानाथ शास्त्री, जयपुर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद् जानकीवल्लभ शास्त्री, वाई. महालिङ्ग शास्त्री तथा पद्मशास्त्री प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है, जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्य सामग्री संकलित की गई है।

पुस्तक की योजना-निर्माण से लेकर प्रकाशन पर्यन्त विविध कार्यों में यथासमय सक्रिय भूमिका निभाने के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तक समिति के समन्वयक कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष,* उनके सहयोगी कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर* एवं रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता* धन्यवाद के पात्र हैं। पुस्तक की पुनरीक्षण समिति (2018) के संयोजक तथा माननीय सदस्यों पी.एन. शास्त्री, *प्रोफ़ेसर* एवं *कुलपति,* राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान दिल्ली; रमेश कुमार पाण्डेय, *प्रोफ़ेसर* एवं *कुलपति,* ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ दिल्ली; रमेश भारद्वाज, *प्रोफ़ेसर,* संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय; ए.एस वेंकेटेशन, *टी.जी.टी.* संस्कृत, के.वि. चेन्नै; जी.एस. वासन, *टी.जी.टी.* संस्कृत, चेन्नै तथा चन्द्रशेखर शर्मा, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, ग्वालियर का अनेकविध मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है। एतदर्थ परिषद् सभी विद्वानों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। पुनरीक्षण कार्य को संपन्न कराने में विशेष सहयोग के लिए जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग; वेदप्रकाश मिश्र, असिस्टेंट *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग; रिंकेश भदूला, *(जे.पी.एफ.),* भाषा शिक्षा विभाग तथा अनीता एवं रेखा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर्स,* भाषा शिक्षा विभाग; नेहा पाल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर,* भाषा संपादन के लिए ममता गौड़, *संपादक (संविदा), प्रकाशन प्रभाग* साधुवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। इसका साहित्यिक प्रवाह वैदिक युग से आज तक अबाध गति से चल रहा है। श्रद्धावश लोग इसे देववाणी तथा सुरभारती भी कहते थे। यह अधिसंख्यक भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका मानी जाती है। राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व की भावना के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसमें रचित साहित्य का सत्य, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति, पृथ्वी-प्रेम, परोपकार, त्याग तथा सत्कर्म आदि भावनाओं के प्रसारण में अमूल्य योगदान है। संस्कृत का समकालीन साहित्य आधुनिक समस्याओं तथा मानव के संघर्षों को भी आत्मसात् करता है, जिससे विश्व के अन्य साहित्य की तुलना में संस्कृत की संवेदनशीलता को न्यूनतर नहीं माना जा सकता है।

प्राचीनकाल में, संस्कृत की रचनाएँ हजारों वर्षों तक मौखिक परम्परा में सुरक्षित रहीं तो आज की संस्कृत-कृतियों का वैज्ञानिक विकास तथा तकनीकी प्रगति के साथ समन्वय उन्हें अद्यतन बनाता है। यह गौरव का विषय है कि न्यूनतम चार हजार वर्षों की संस्कृत-साहित्य-धारा में भारतीय समाज का प्रत्यंकन प्रायः प्रामाणिक रूप से होता रहा है, जहाँ भारतीय संस्कृति की समन्वय-प्रवृत्ति परिलक्षित होती है।

संस्कृत को मात्र प्राचीनता के लिए ही पढ़ना पर्याप्त नहीं है, अपितु अपने देश के बहुभाषिक परिदृश्य में संस्कृत की महत्ता राष्ट्र की एकता के लिए सर्वोपरि है। आधुनिक भारतीय भाषाओं पर संस्कृत के व्याकरण, शब्द-सम्पत्ति तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पड़ा है। अन्य भाषाओं के समान आधुनिक संस्कृत भारतीय बहुभाषिकता का एक अभिन्न अंग है। जिस प्रकार बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में संस्कृत सहायक होती है उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता (Multi-lingualism) का संस्कृत सीखने में उपयोग किया जा सकता है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य के दो रूप प्राप्त होते हैं-वैदिक तथा लौकिक। **वैदिक साहित्य** के अन्तर्गत **संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक** तथा **उपनिषद्** ग्रन्थ आते हैं। **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अथर्ववेद**-इन चारों वेदों को **संहिता** कहते हैं। इन संहिताओं में जिन मंत्रों का संकलन है उनकी कर्मकाण्ड परक व्याख्या करने वाले ग्रन्थों को **'ब्राह्मण'** कहा जाता है। आरण्यकों की रचना वनों में हुई। इनमें वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतीकात्मक व्याख्या है। उपनिषदों

में वैदिक ज्ञान का प्रौढ़तम रूप प्राप्त होता है। इसलिए इनके सिद्धांतों को **'वेदान्त'** भी कहते हैं। वैदिक साहित्य को सही सन्दर्भ में समझने के लिए वेदाङ्गों की रचना हुई, वेदाङ्ग छह हैं-**शिक्षा** (उच्चारण-विज्ञान), **व्याकरण** (पद-विज्ञान), **छन्द** (पद्यात्मक मंत्रों की छन्द व्यवस्था), **निरुक्त** (अर्थ-विज्ञान), **ज्योतिष** (काल तथा खगोल का विज्ञान) तथा **कल्प** (कर्मकाण्ड तथा आचार का शास्त्र)। कहा गया है-

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

लौकिक संस्कृत साहित्य का आरम्भ आदिकवि वाल्मीकि के **रामायणम्** से हुआ जिसमें आदर्श महापुरुष राम के जीवन चरित का वर्णन है। इसे आदि काव्य भी कहा जाता है। प्रथम संस्कृत काव्य होने के अतिरिक्त रामायण परवर्ती संस्कृत कवियों के लिए प्रेरक तथा उपजीव्य ग्रन्थ है। इसमें सात काण्ड तथा 24000 श्लोक हैं। काण्डों का विभाजन सर्गों में हुआ है।

रामायण के अतिरिक्त महर्षि वेदव्यास-रचित एक लाख श्लोकों का **महाभारत** भी कवियों तथा साहित्यकारों के लिए कथानक-ग्रहण करने का आधार-ग्रन्थ रहा है। इसमें कौरवों तथा पाण्डवों की कथा है। दोनों के बीच ऐसे युद्ध का वर्णन है जहाँ अन्याय पर न्याय की विजय दिखाई गई है **(यतो धर्मस्ततो जयः)**। इसमें 18 **पर्व** हैं जिनके नाम मुख्य विषय-वस्तु के आधार पर दिये गये हैं। महाभारत में भारतीय जीवन-पद्धति के सभी पक्षों पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। कहा गया है कि जो इसमें वर्णित है, वही सर्वत्र साहित्य में पल्लवित है किन्तु जो इसमें प्रतिपादित नहीं वह अन्यत्र कहीं नहीं है-**यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।** इसके अतिरिक्त एक सामान्य लोकोक्ति भी प्रचलित है-**यन्न भारते तन्न भारते** (अर्थात् जो महाभारत में नहीं, वह भारत में नहीं)। **भगवद्गीता** महाभारत के भीष्मपर्व का एक अंश है जिसमें युद्ध से विरत अर्जुन को श्रीकृष्ण ने कर्मपथ के उपदेश दिये हैं।

रामायण तथा **महाभारत** के समान पुराणों का भी महत्त्व है। इनका विपुल साहित्य 18 पुराणों में विद्यमान है। इनमें प्राचीन भारत के जन-जन के लिए सभी ज्ञातव्य विषयों का संग्रह है। आरम्भ में इनमें पाँच मुख्य विषयों का प्रतिपादन करने का लक्ष्य था-**सर्ग** (जगत् की सृष्टि), **प्रतिसर्ग** (सृष्टि का प्रलय), **वंश** (देवों तथा ऋषियों की वंशावली), **मन्वन्तर** (विभिन्न युगों की घटनाओं का वर्णन) तथा **वंशानुचरित** (प्रसिद्ध राजाओं की वंश-परंपरा)। इसी पृष्ठभूमि में पुराणों के पाँच लक्षण कहे गये हैं-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

आगे चलकर पुराणों ने समस्त सांस्कृतिक पक्षों को आत्मसात् कर लिया। इसी कारण इनमें भारतीय समाज का प्रतिबिम्बन प्राप्त होता है। तीर्थयात्रा के महत्त्व, पर्वतों-वनों-नदियों के प्रति श्रद्धा-प्रदर्शन तथा सदाचार-वर्णन के कारण पुराणों ने भारत की सांस्कृतिक एकता तथा नैतिक आचरण के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।

इनके अनन्तर संस्कृत साहित्य के विविध रूपों के प्रस्फुटन एवं विकास का काल है। एक ओर नाटकों के अनेक रूपों का इतिहास है तो दूसरी ओर संस्कृत महाकाव्यों, लघुकाव्यों, गद्यकाव्यों तथा चम्पू (गद्य-पद्ययुक्त) काव्यों की दीर्घ परम्परा है जो आज तक अनवरत चल रही है। कुछ कवियों ने अनेक विधाओं में रचनाएँ की हैं जैसे संस्कृत के सबसे बड़े कवि कालिदास ने महाकाव्यों (रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्), गीतिकाव्यों (मेघदूतम्, ऋतुसंहारम्) तथा नाटकों (अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम् तथा विक्रमोर्वशीयम्) की रचना की।

अन्य प्राचीन नाटककारों में भास (13 नाटकों के लेखक), शूद्रक (मृच्छकटिकम्), विशाखदत्त (मुद्राराक्षसम्), हर्ष (3 नाटक), भवभूति (उत्तररामचरितम् जैसे 3 नाटक), भट्टनारायण (वेणीसंहारम्) इत्यादि हैं। कुछ नाटककारों ने प्रहसन आदि के द्वारा अपने युग के जन-जीवन के विकृत पक्ष पर व्यङ्ग्यपूर्ण दृष्टि डाली है। प्राचीन महाकवियों में अश्वघोष (बुद्धचरितम् और सौन्दरनन्दम्), भारवि (किरातार्जुनीयम्), भट्टि (रावणवधम्), माघ (शिशुपालवधम्), क्षेमेन्द्र (पाँच महाकाव्यों के अतिरिक्त अनेक व्यंग्यकाव्यों के लेखक कश्मीरी कवि), श्री हर्ष (नैषधीयचरितम्) इत्यादि हैं। बिल्हण (विक्रमाङ्कदेवचरितम्), कल्हण (राजतरङ्गिणी) आदि ने ऐतिहासिक काव्य लिखे हैं।

गीतिकाव्यों या लघुकाव्यों के प्राचीन लेखकों में भर्तृहरि (नीति, शृङ्गार और वैराग्य शतक), अमरुक (अमरुशतकम्), जयदेव (गीतगोविन्दम्), जगन्नाथ (भामिनीविलासः) इत्यादि प्रसिद्ध हैं। गद्यकवियों में सुबन्धु (वासवदत्ता), बाणभट्ट (हर्षचरितम् तथा कादम्बरी), दण्डी (दशकुमार-चरितम्), अम्बिकादत्त व्यास (शिवराजविजयम्) इत्यादि विख्यात हैं।

संस्कृत साहित्य की समीक्षा के विषय में भरतमुनि (नाट्यशास्त्रम्), भामह (काव्यालङ्कार), दण्डी (काव्यादर्श), वामन (काव्यालङ्कारसूत्र), आनन्दवर्धन (ध्वन्यालोक), मम्मट (काव्यप्रकाशः), विश्वनाथ (साहित्यदर्पण), जगन्नाथ (रसगङ्गाधरः) प्रभृति लेखकों की लम्बी परम्परा उपलब्ध है। इसी प्रकार व्याकरण, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, राजनीति, आयुर्वेद, ज्योतिष इत्यादि शास्त्रों की स्वतन्त्र एवं दीर्घ परम्परा चली है जिसमें सहस्राधिक ग्रन्थ संस्कृत के गौरव की वृद्धि करते हैं।

प्रस्तुत संकलन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए

वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। पाठ्यचर्या में निम्नांकित पाँच लक्ष्य रखे गये हैं–

1. भारमुक्त शिक्षा का कार्यक्रम।
2. शिक्षा की आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में प्रस्तुति।
3. जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध होना।
4. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।
5. कण्ठाग्र करने की परम्परागत पद्धति से हटकर छात्रों को चिन्तन के लिए प्रेरित करना।

संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप नवम कक्षा के लिए **शेमुषी** (प्रथमो भागः) नामक पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है। नवीन पाठ्यक्रम एवं वर्तमान पुस्तक की विशिष्टताओं में सर्वप्रथम उल्लेखनीय है कि इसमें संस्कृत को एक जीवन्त भाषा के रूप में देखा गया है जिसकी धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है। इसी दृष्टि से इसमें आधुनिक संस्कृत रचनाओं के समावेश के साथ ही साथ अन्य भाषाओं के साहित्य से अनूदित रचनाओं को भी ग्रहण किया गया है। पाठों के आरंभ में पाठ-संदर्भ दिये गये हैं, जिनसे छात्र पाठ-प्रसंग को सरलता से समझ सकेंगे। छात्रों को सीखने के अधिकाधिक अवसर देने के लिए पाठों के अन्त में विविध-प्रश्नों वाली अभ्यासचारिका दी गयी है।

छात्र पाठों को स्वयमेव समझ सकें इसके लिए 'शब्दार्थाः' शीर्षक के अन्तर्गत पाठ में आये सभी नवीन तथा कठिन शब्दों के संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में अर्थ दिये गये हैं। योग्यता-विस्तार के अन्तर्गत ऐसी सामग्री दी गयी है, जिससे छात्र ज्ञान के अग्रिम चरण की ओर सहज ही उन्मुख हो सकें। अध्यापकों के लिए यथेष्ट रूप से शिक्षण-संकेत भी दिये गये हैं ताकि निर्धारित पाठ्यबिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए अध्यापन किया जा सके। पाठों को दृश्य-विधि से स्पष्ट करने के लिए विषयानुकूल चित्रों का समावेश करके पुस्तक को आकर्षक बनाया गया है।

इस पुस्तक में कुल 12 पाठ रखे गये हैं जिनमें छह पाठ प्राचीन ग्रन्थों से तथा छह पाठ आधुनिक रचनाओं से हैं। आधुनिक पाठों में भी चार पाठ संस्कृत की मौलिक रचनाओं तथा दो पाठ दूसरी भाषाओं से अनुवाद के रूप में हैं। इस प्रकार इस पुस्तक में तीन प्रकार की पाठ-सामग्री है–

(क) संस्कृत की प्राचीन पुस्तकों से – लौहतुला, सूक्तिमौक्तिकम्, जटायोः शौर्यम्, कल्पतरुः, वाङ्मनःप्राणस्वरूपम् तथा प्रत्यभिज्ञानम्।

(ख) आधुनिक मौलिक रचनाओं से – गोदोहनम्, भारतीवसन्तगीतिः, भ्रान्तो बालः तथा सिकतासेतुः।

(ग) संस्कृत में अनूदित / निर्मित रचनाओं से–स्वर्णकाकः तथा पर्यावरणम्।

पाठ–सामग्री को यथासंभव मूलरूप में ही रखा गया है किन्तु छात्रों की सुविधा के लिए यत्र–तत्र सम्पादित कर उन्हें सरल बनाने का प्रयास किया गया है। संस्कृत वाङ्मय के जिन ग्रन्थों से सामग्री ली गयी है उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

1. **पञ्चतन्त्रम्** – सरल संस्कृत भाषा में नीति की शिक्षा देने वाले कथा–ग्रन्थों में पञ्चतन्त्रम् का अत्यधिक महत्त्व है। इसमें विष्णुशर्मा ने एक राजा के तीन मूर्ख पुत्रों को छह मास में राजनीति और व्यवहार में कुशल बनाने के लिए कथाएँ कही हैं। इसका विभाजन पाँच तन्त्रों (खण्डों) में है–मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारक। प्रत्येक तन्त्र में एक मुख्य कथा तथा उसके भीतर अवान्तर कथाएँ हैं। कथाओं को परस्पर ऐसा गूँथा गया है कि एक कथा के अन्त में दूसरी कथा का संकेत हो जाता है। इसका स्वरूप गद्य–पद्यात्मक है। सामान्यतः कथा गद्य में तथा नैतिक शिक्षा पद्य में है।
2. **मनुस्मृतिः** – मनु द्वारा प्रतिपादित प्राचीन भारतीय समाज की आचार–संहिता का यह पद्यात्मक ग्रन्थ 12 अध्यायों का है। इसमें प्राचीन भारतीय समाज के लिए पालन करने योग्य नियमों का व्यापक संकलन है।
3. **विदुरनीतिः** – महाभारत के उद्योग पर्व में कुरुवंशी विद्वान् विदुर द्वारा दिये गये उपदेशों का संग्रह है जो भगवद्गीता के समान स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में है। इसमें नौ अध्याय हैं।
4. **चाणक्यनीतिः** – इसके रचयिता चाणक्य हैं। इसमें 17 अध्याय तथा 340 श्लोक हैं। लोकव्यवहार की शिक्षा सरल श्लोकों में देने के कारण नीतिग्रन्थों में यह बहुत लोकप्रिय है।
5. **सुभाषितरत्नभाण्डागारम्** – अनेक कवियों द्वारा रचित तथा अज्ञातकर्तृक श्लोकों का संग्रह है। इसमें प्रायः दस हज़ार छोटे–बड़े श्लोक हैं।
6. **मृच्छकटिकम्** – शूद्रक द्वारा रचित 10 अंकों का सामाजिक नाटक (प्रकरण) है, जिसमें दरिद्र किन्तु कभी संपन्न स्थिति में रहे वाणिज्यजीवी ब्राह्मण चारुदत्त तथा गणिका वसन्तसेना की प्रेमकथा है। इसमें प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था तथा निरंकुश राजतन्त्र का चित्रण है।
7. **नीतिशतकम्** – भर्तृहरि रचित एक सौ से अधिक सरल तथा नीति–विषयक पद्यों का ग्रन्थ है। इसमें मूर्खों की असाध्यता, विद्वानों के महत्त्व, धन की शक्ति, मनस्विता इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।
8. **भामिनीविलासः** – संस्कृत भाषा के उत्कृष्ट कवि तथा काव्यशास्त्री आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा रचित स्फुट (मुक्तक) पद्यों का संग्रह है, जिसमें चार भाग (विलास)

हैं – अन्योक्ति, शृङ्गार, करुण तथा शान्त। प्रथम विलास में कवि ने सिंह, हंस, कमल, मधुकर, चन्दन, मेघ, समुद्र आदि को लक्षित कर सुन्दर तथा भावपूर्ण अन्योक्तियाँ दी हैं।

9. **हितोपदेशः** – नारायण पण्डित द्वारा रचित नीतिकथाओं की लोकप्रिय पुस्तक है। इसकी 43 कथाओं में 25 **पञ्चतन्त्र** से ही ली गई हैं। इसके चार भाग हैं–मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह तथा सन्धि। कथा कहने की इसकी पद्धति पञ्चतन्त्र के समान है।

10. **रामायणम्** – आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत भाषा का आदिकाव्य है, जिसमें मर्यादा पुरुष राम के जीवन का काव्यात्मक वर्णन है। यह सात काण्डों में विभक्त है– बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, युद्ध तथा उत्तर। प्रत्येक काण्ड सर्गों में विभक्त है।

11. **वेतालपञ्चविंशतिः** – अत्यन्त प्राचीन 25 लोककथाओं का संग्रह है। संस्कृत साहित्य में इन कथाओं का प्राचीनतम रूप क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेव के कथासरित्सागर में मिलता है। ये दोनों कथाग्रन्थ पैशाची प्राकृत में गुणाढ्य द्वारा रचित 'बड्डकहा' (बृहत्कथा) के संस्कृत पद्य रूपान्तर हैं। **'वेतालपञ्चविंशतिः'** के नाम से संस्कृत में दो स्वतंत्र संस्करण हैं। प्रथम संस्करण शिवदास कृत है जो मुख्यतः गद्यात्मक है, इसमें कहीं-कहीं पद्य भी हैं। दूसरा संस्करण जम्भलदत्त कृत है जो पूर्णतः गद्य रूप में है। इसकी लोकप्रियता का ही प्रमाण है कि इसकी कथाओं का भारत की प्रायः सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

12. **छान्दोग्योपनिषद्**– सामवेद की कौथुम शाखा से सम्बद्ध उपनिषद् है जो आठ अध्यायों में विभक्त है। इसमें अनेक रोचक कथाओं द्वारा दार्शनिक विषयों को स्पष्ट किया गया है।

13. **पञ्चरात्रम्**– इसके रचयिता भास हैं जिसका कथानक महाभारत से लिया गया है।

14. **कथासरित्सागर** – यह गुणाढ्यकृत प्राकृत कथाग्रन्थ (बृहत्कथा) का विशालतम संस्कृत संस्करण है। इसमें 18 लम्बक तथा 24000 श्लोक हैं। इसकी रचना कश्मीरी कवि सोमदेव ने राजा अनन्तदेव की पत्नी सूर्यमती के मनोरंजन के लिए की थी।

जिन आधुनिक रचनाओं को इस पाठ्यपुस्तक में स्थान दिया गया है उनके लेखकों में श्री **जानकीवल्लभ शास्त्री** संस्कृत तथा हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् और कवि के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। **काकली** तथा **बन्दीमन्दिरम्** इनकी आरम्भिक संस्कृत रचनाएँ हैं। **श्री वाई. महालिङ्ग शास्त्री** ने काव्य, नाटक, कथा आदि सभी प्रकार की रचनाएँ की

हैं। **'संस्कृत प्रौढपाठावलिः'** इनकी विविध कथाकृतियों का संकलन है। **पद्मशास्त्री** ने संस्कृत की कई विधाओं को समृद्ध किया। **विश्वकथाशतकम्** में संसार के विभिन्न देशों की एक सौ श्रेष्ठ कहानियों का संक्षिप्त संस्कृत रूपान्तर प्राप्त होता है।
आशा है कि यह भूमिका छात्रों को संस्कृत साहित्य के विविध रूपों के विकास के साथ-साथ संकलित पाठों के मूलग्रंथों तथा ग्रन्थकारों से परिचय प्रदान करेगी।

अध्यापकों से निवेदन

संस्कृत के प्रति छात्रों में रुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा में विद्यमान बहुभाषिकता को आधार के रूप में उपयोग करें। हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को माध्यम बनाते हुए संस्कृत भाषा में दक्ष होने के लिए छात्रों को उन्मुख करने का प्रयास करें।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्यपुस्तक में आए हुए प्रयोगों को आधार बनाकर करना समीचीन होगा। इससे छात्रों में कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता (Creativity) का अधिकाधिक विकास हो सकेगा।

ध्यातव्य बिन्दवः -

1. **भारतीवसन्तगीतिः** - शिक्षक छात्रों के उच्चारण व सस्वरवाचन/गायन पर जोर दें।
2. **स्वर्णकाकः** - कथा को पहले रोचक ढंग से प्रस्तुत करें। प्रत्ययों का सामान्यज्ञान पाठान्त में अवश्य दें।
3. **गोदोहनम्** - एकाङ्की पढ़ाते समय आधुनिक परिवेश से जोड़ें। समय पर किए जाने वाले कार्यों के लाभ तथा इसके विपरीत हानि होना निश्चित है। संवादों के माध्यम से अभिनय द्वारा इस पाठ को पढ़ाया जाए।
4. **कल्पतरुः** - पाठ के साथ-साथ विशेष्य-विशेषण, कारक और तद्धित प्रत्यय का ज्ञान कराएँ।
5. **सूक्तिमौक्तिकम्** - श्लोकों का सस्वरवाचन अवश्य सिखाएँ।
6. **भ्रान्तो बालः** - रोचक ढंग से कथा प्रस्तुत करें। तत्पुरुष समास व विभक्ति प्रयोग बताएँ।
7. **प्रत्यभिज्ञानम्** - नाट्ययुक्ति के सहारे कक्षानाटक के रूप में पाठ पढ़ाया जाए। महाभारत की कथा पृष्ठभूमि के रूप में बताएँ।
8. **लौहतुला** - रोचक ढंग से कथा शिक्षण करें व कथा का संदेश (न्याय की सूक्ष्म दृष्टि न्यायाधिकारी में होनी चाहिए) छात्रों को दें।

9. **सिकतासेतुः** – कथा की रोचकता बरकरार रखते हुए कथा का संदेश प्रभावी ढंग से दें।

10. **जटायोः शौर्यम्** – वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त परिचय छात्रों को दें और श्लोकों का सस्वर वाचन छात्रों से करवाएँ। स्त्रीप्रत्यय का परिचय दें।

11. **पर्यावरणम्** – प्राचीन भारत में पर्यावरण की सुरक्षा व वर्तमान में प्रदूषण के संकट से परिचित कराते हुए छात्रों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।

12. **वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्** – प्राचीन वाङ्मय (वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, पुराण आदि) का संक्षिप्त परिचय दें।

छात्रों की सुगमता को ध्यान में रखते हुए प्रत्यक्ष, व्याकरण एवं अनुवाद पद्धतियों की समन्वित विधि के साथ-साथ कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता को आधार बनाकर पाठों का अध्यापन करें ताकि संस्कृत अध्ययन को सरल से कठिन के क्रम में रोचक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

यद्यपि इस संकलन को छात्रों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि इसको और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सतत स्वागत करेंगे।

संपादक

विषयानुक्रमणिका

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

मङ्गलम्

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ।।1।।

यस्याश्चतस्त्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु ।।2।।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ।।3।।

1. जिस (भूमि) में महासागर, नदियाँ और जलाशय (झील, सरोवर आदि) विद्यमान हैं, जिसमें अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ उपजते हैं तथा कृषि, व्यापार आदि करने वाले लोग सामाजिक संगठन बना कर रहते हैं (कृष्टयः सं बभूवुः), जिस (भूमि) में ये साँस लेते (प्राणत्) प्राणी चलते-फिरते हैं; वह मातृभूमि हमें प्रथम भोज्य पदार्थ (खाद्य-पेय) प्रदान करे ।।1।।

2. जिस भूमि में चार दिशाएँ तथा उपदिशाएँ अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ (फल, शाक आदि) उपजाती हैं; जहाँ कृषि-कार्य करने वाले सामाजिक संगठन बनाकर रहते हैं (कृष्टयः सं बभूवुः); जो (भूमि) अनेक प्रकार के प्राणियों (साँस लेने वालों तथा चलने-फिरने वाले जीवों) को धारण करती है, वह मातृभूमि हमें गौ-आदि लाभप्रद पशुओं तथा खाद्य पदार्थों के विषय में सम्पन्न बना दे ।।2।।

3. अनेक प्रकार से विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले तथा अनेक धर्मों को मानने वाले जन-समुदाय को, एक ही घर में रहने वाले लोगों के समान, धारण करने वाली तथा कभी नष्ट न होने देने वाली (अनपस्फुरन्ती) स्थिर-जैसी यह पृथ्वी हमारे लिए धन की सहस्रों धाराओं का उसी प्रकार दोहन करे जैसे कोई गाय बिना किसी बाधा के दूध देती हो ।।3।।

प्रथमः पाठः

भारतीवसन्तगीतिः

अयं पाठः आधुनिकसंस्कृतकवेः पण्डितजानकीवल्लभशास्त्रिणः "**काकली**" इति गीतसंग्रहात् सङ्कलितोऽस्ति। प्रकृतेः सौन्दर्यम् अवलोक्य एव सरस्वत्याः वीणायाः मधुरझङ्कृतयः प्रभवितुं शक्यन्ते इति भावनापुरस्सरं कविः प्रकृतेः सौन्दर्यं वर्णयन् सरस्वतीं वीणावादनाय सम्प्रार्थयते।

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललित-नीति-लीनाम् ।
मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम् ।।1।।
निनादय...।।

वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे,
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम् ।।2।।
निनादय...।।

ललित-पल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे
मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम् ।।3।।
निनादय...।।

लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम् ।।4।। निनादय...।।

शब्दार्थाः

निनादय	नितरां वादय	गुंजित करो/बजाओ	Play (the musical instrument)
मृदुं	चारु, मधुरं	कोमल	Melodious
ललितनीतिलीनाम्	सुन्दरनीतिसंलग्नाम्	सुन्दर नीति में लीन	Merged in nice rules
मञ्जरी	आम्रकुसुमम्	आम्रपुष्प	Blossom of mango tree
पिञ्जरीभूतमालाः	पीतपङ्क्तयः	पीले वर्ण से युक्त पंक्तियाँ	Yellow rows
लसन्ति	शोभन्ते	सुशोभित हो रही हैं	Looking magnificent
इह	अत्र	यहाँ	Here
सरसाः	रसपूर्णाः	मधुर	Juicy
रसालाः	आम्राः	आम के पेड़	Mango trees
कलापाः	समूहाः	समूह	Groups
काकली	कोकिलानां ध्वनिः	कोयल की आवाज	Sound of cuckoo birds
सनीरे	सजले	जल से पूर्ण	Full of water
समीरे	वायौ	हवा में	In the wind
कलिन्दात्मजायाः	यमुनायाः	यमुना नदी के	Of the river Yamuna
सवानीरतीरे	वेतसयुक्ते तटे	बेंत की लता से युक्त तट पर	On the shore with bamboos
नताम्	नतिप्राप्ताम्	झुकी हुई	The bent
मधुमाधवीनाम्	मधुमाधवीलतानाम्	मधुर मालती लताओं का	Of Malti creepers
ललितपल्लवे	मनोहरपल्लवे	मन को आकर्षित करने वाले पत्ते	On an attractive leaf
पुष्पपुञ्जे	पुष्पसमूहे	पुष्पों के समूह पर	On the bunch of flowers
मलयमारुतोच्चुम्बिते	मलयानिलसंस्पृष्टे	चन्दन वृक्ष की सुगन्धित वायु से स्पर्श किये गये	Full of fragrance of sandal tree
मञ्जुकुञ्जे	शोभनलताविताने	सुन्दर लताओं से आच्छादित स्थान	In the summer house

स्वनन्तीं	ध्वनिं कुर्वतीम्	ध्वनि करती हुई	Creating sound
ततिं	पङ्क्तिम्	समूह को	The row
प्रेक्ष्य	दृष्ट्वा	देखकर	Seeing
मलिनाम्	कृष्णवर्णाम्	मलिन	The black
अलीनाम्	भ्रमराणाम्	भ्रमरों के	Of drones
सुमम्	कुसुमम्	पुष्प को	The flower
शान्तिशीलम्	शान्तियुक्तम्	शान्ति से युक्त	Peaceful
उच्छलेत्	ऊर्ध्वं गच्छेत्	उच्छलित हो उठे	Go up
कान्तसलिलम्	मनोहरजलम्	स्वच्छ जल	Clear water
सलीलम्	क्रीडासहितम्	खेल-खेल के साथ	In a playful manner
आकर्ण्य	श्रुत्वा	सुनकर	Listening

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) कविः कां सम्बोधयति?
(ख) कविः कां वादयितुं वाणीं प्रार्थयति?
(ग) कीदृशीं वीणां निनादयितुं प्रार्थयति?
(घ) गीतिं कथं गातुं कथयति?
(ङ) सरसाः रसालाः कदा लसन्ति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत-

(क) कविः वाणीं किं कथयति?
(ख) वसन्ते किं भवति?
(ग) सलिलं तव वीणामाकर्ण्य कथम् उच्चलेत्।
(घ) कविः कस्याः तीरे मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोक्य वीणां वादयितुं भगवतीं भारतीं कथयति?

3. 'क' स्तम्भे पदानि, 'ख' स्तम्भे तेषां पर्यायपदानि दत्तानि। तानि चित्वा पदानां समक्षे लिखत-

'क' स्तम्भः	**'ख' स्तम्भः**
(क) सरस्वती	(1) तीरे
(ख) आम्रम्	(2) अलीनाम्

(ग)	पवनः	(3)	समीरः
(घ)	तटे	(4)	वाणी
(ङ)	भ्रमराणाम्	(5)	रसालः

4. अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य संस्कृतभाषया वाक्यरचनां कुरुत–

(क) निनादय (ख) मन्दमन्दम्
(ग) मारुतः (घ) सलिलम्
(ङ) सुमनः

5. प्रथमश्लोकस्य आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत–

6. अधोलिखितपदानां विलोमपदानि लिखत–

(क) कठोरम् – ....
(ख) कटु – ....
(ग) शीघ्रम् – ....
(घ) प्राचीनम् – ....
(ङ) नीरसः – ....

परियोजनाकार्यम्

पाठेऽस्मिन् वीणायाः चर्चा अस्ति। अन्येषां पञ्चवाद्ययन्त्राणां चित्रं रचयित्वा संकलय्य वा तेषां नामानि लिखत।

यह गीत आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रख्यात कवि **पं. जानकी वल्लभ शास्त्री** की रचना **'काकली'** नामक गीतसंग्रह से संकलित है। इसमें सरस्वती की वन्दना करते हुए कामना की गई है कि हे सरस्वती! ऐसी वीणा बजाओ, जिससे मधुर मञ्जरियों से पीत पंक्तिवाले आम के वृक्ष, कोयल का कूजन, वायु का धीरे-धीरे बहना, अमराइयों में काले भ्रमरों का गुञ्जार और नदियों का (लीला के साथ बहता हुआ) जल, वसन्त ऋतु में मोहक हो उठे। स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखी गयी यह गीतिका एक नवीन चेतना का आवाहन करती है तथा ऐसे वीणास्वर की परिकल्पना करती है जो स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जनसमुदाय को प्रेरित करे।

अन्वय और हिन्दी भावार्थ

अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय। ललितनीतिलीनां गीतिं मृदुं गाय।

हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ, सुन्दर नीतियों से परिपूर्ण गीत का मधुर गान करो।

इह वसन्ते मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः सरसाः रसालाः लसन्ति। ललित-कोकिलाकाकलीनां कलापाः (विलसन्ति)। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

इस वसन्त में मधुर मञ्जरियों से पीली हो गयी सरस आम के वृक्षों की माला सुशोभित हो रही है। मनोहर काकली (बोली, कूक) वाली कोकिलों के समूह सुन्दर लग रहे हैं। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे सनीरे समीरे मन्दमन्दं वहति (सति) माधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोक्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

यमुना के वेतस लताओं से घिरे तट पर जल बिन्दुओं से पूरित वायु के मन्द मन्द बहने पर फूलों से झुकी हुई मधुमाधवी लता को देखकर, हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

ललितपल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे मञ्जुकुञ्जे मलय-मारुतोच्चुम्बिते स्वनन्तीम् अलीनां मलिनां ततिं प्रेक्ष्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

मलयपवन से स्पृष्ट ललित पल्लवों वाले वृक्षों, पुष्पपुञ्जों तथा सुन्दर कुञ्जों पर काले भौंरों की गुञ्जार करती हुई पंक्ति को देखकर, हे वाणी नवीन वीणा को बजाओ।

तव अदीनां वीणाम् आकर्ण्य लतानां नितान्तं शान्तिशीलं सुमं चलेत् नदीनां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छलेत्। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

तुम्हारी ओजस्विनी वीणा को सुनकर लताओं के नितान्त शान्त सुमन हिल उठें, नदियों का मनोहर जल क्रीडा करता हुआ उछल पड़े। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

प्रस्तुत गीत के समानान्तर गीत–

वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतन्त्र रव अमृत मन्त्र नव,
भारत में भर दे।
वीणावादिनि वर दे

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि **पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला** के गीत की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दी गई हैं, जिनमें सरस्वती से भारत के उत्कर्ष के लिये प्रार्थना की गई है। राष्ट्रकवि **मैथिलीशरणगुप्त** की रचना **"भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती"** भी ऐसे ही भावों से ओतप्रोत है।

पं॰ जानकीवल्लभ शास्त्री

पं॰ जानकी वल्लभ शास्त्री हिन्दी के छायावादी युग के कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। ये संस्कृत के रचनाकार एवं उत्कृष्ट अध्येता रहे। बाल्यकाल में ही शास्त्री जी की काव्य रचना में प्रवृत्ति बन गई थी। अपनी किशोरावस्था में ही इन्हें संस्कृत कवि के रूप में मान्यता प्राप्त हो चुकी थी। उन्नीस वर्ष की उम्र में इनकी संस्कृत कविताओं का संग्रह **'काकली'** का प्रकाशन हुआ।

शास्त्री जी ने संस्कृत साहित्य में आधुनिक विधा की रचनाओं का प्रारंभ किया। इनके द्वारा गीत, गजल, श्लोक, आदि विधाओं में लिखी गई संस्कृत कविताएँ बहुत लोकप्रिय हुईं। इनकी संस्कृत कविताओं में संगीतात्मकता और लय की विशेषता ने लोगों पर अप्रतिम प्रभाव डाला।

द्वितीयः पाठः

स्वर्णकाकः

प्रस्तुतः पाठः श्रीपद्मशास्त्रिणा विरचितात् "**विश्वकथाशतकम्**" इति कथासङ्ग्रहात् गृहीतोऽस्ति। अत्र विविधराष्ट्रेषु व्याप्तानां शतलोककथानां वर्णनं विद्यते। एषा कथा वर्म (म्याँमार) देशस्य श्रेष्ठा लोककथा अस्ति। अस्यां कथायां लोभस्य दुष्परिणामः तथा च त्यागस्य सुपरिणामः स्वर्णपक्षकाकमाध्यमेन वर्णितोऽस्ति।

पुरा कस्मिंश्चिद् ग्रामे एका निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत्। तस्याः च एका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत्। एकदा माता स्थाल्यां तण्डुलान् निक्षिप्य पुत्रीम् आदिशत्। "सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष।" किञ्चित् कालादनन्तरम् एको विचित्रः काकः समुड्डीय तस्याः समीपम् अगच्छत्।

नैतादृशः स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्णकाकस्तया पूर्वं दृष्टः। तं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा। तं निवारयन्ती सा प्रार्थयत्- "तण्डुलान् मा भक्षय। मदीया माता अतीव निर्धना वर्तते।" स्वर्णपक्षः काकः प्रोवाच, "मा शुचः। सूर्योदयात्प्राग् ग्रामाद्बहिः पिप्पलवृक्षमनु त्वया आगन्तव्यम्। अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।" प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।

सूर्योदयात्पूर्वमेव सा तत्रोपस्थिता। वृक्षस्योपरि विलोक्य सा च आश्चर्यचकिता सञ्जाता यत् तत्र स्वर्णमयः प्रासादो वर्तते। यदा काकः शयित्वा प्रबुद्धस्तदा तेन स्वर्णगवाक्षात्कथितं "हंहो बाले! त्वमागता, तिष्ठ, अहं त्वत्कृते सोपानमवतारयामि, तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयम् ताम्रमयं वा"? कन्या अवदत् "अहं निर्धनमातुः दुहिता अस्मि। ताम्रसोपानेनैव् आगमिष्यामि।" परं स्वर्णसोपानेन सा स्वर्ण-भवनम् आरोहत।
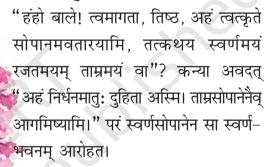
चिरकालं भवने चित्रविचित्रवस्तूनि सज्जितानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता। श्रान्तां तां विलोक्य काकः अवदत्-"पूर्वं लघुप्रातराशः क्रियताम्-वद त्वं स्वर्णस्थाल्यां भोजनं करिष्यसि किं वा रजतस्थाल्याम् उत ताम्रस्थाल्याम्"? बालिका अवदत्- ताम्रस्थाल्याम् एव अहं निर्धना भोजनं करिष्यामि तदा सा आश्चर्यचकिता सञ्जाता यदा स्वर्णकाकेन स्वर्णस्थाल्यां भोजनं परिवेषितम् न एतादृशम् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती। काकोऽवदत्- बालिके! अहमिच्छामि यत् त्वम् सर्वदा अत्रैव तिष्ठ परं तव माता तु एकाकिनी वर्तते। अतः त्वं शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ।

इत्युक्त्वा काकः कक्षाभ्यन्तरात् तिस्रः मञ्जूषाः निस्सार्य तां प्रत्यवदत्- "बालिके! यथेच्छं गृहाण मञ्जूषामेकाम्।" लघुतमां मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया कथितम् इयत् एव मदीयतण्डुलानां मूल्यम्।

गृहमागत्य तया मञ्जूषा समुद्घाटिता, तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता तद्दिनाद्धनिका च सञ्जाता।

तस्मिन्नेव ग्रामे एका अपरा लुब्धा वृद्धा न्यवसत्। तस्या अपि एका पुत्री आसीत्। ईर्ष्यया सा तस्य स्वर्णकाकस्य रहस्यम् ज्ञातवती। सूर्यातपे तण्डुलान् निक्षिप्य तयापि स्वसुता रक्षार्थं नियुक्ता। तथैव स्वर्णपक्षः काकः तण्डुलान् भक्षयन् तामपि तत्रैवाकारयत्। प्रातस्तत्र गत्वा सा काकं निर्भर्त्सयन्ती प्रावोचत्–"भो नीचकाक! अहमागता, मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ।" काकोऽब्रवीत्–"अहं त्वत्कृते सोपानम् अवतारयामि। तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयं ताम्रमयं वा।" गर्वितया बालिकया प्रोक्तम्–"स्वर्णमयेन सोपानेन अहम् आगच्छामि।" परं स्वर्णकाकस्तत्कृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्। स्वर्णकाकस्तां भोजनमपि ताम्रभाजने एव अकारयत्।

प्रतिनिवृत्तिकाले स्वर्णकाकेन कक्षाभ्यन्तरात् तिस्रः मञ्जूषाः तत्पुरः समुत्क्षिप्ताः। लोभाविष्टा सा बृहत्तमां मञ्जूषां गृहीतवती। गृहमागत्य सा तर्षिता यावद् मञ्जूषामुद्घाटयति तावत् तस्यां भीषणः कृष्णसर्पो विलोकितः। लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्। तदनन्तरं सा लोभं पर्यत्यजत्।

शब्दार्थाः

न्यवसत्	अवसत्	रहता था/रहती थी	(He/She) resided
दुहिता	सुता	पुत्री	Daughter
स्थाल्याम्	स्थालीपात्रे	थाली में	In a plate
खगेभ्यः	पक्षिभ्यः	पक्षियों से	From birds
समुड्डीय	उत्प्लुत्य	उड़कर	Flying
स्वर्णपक्षः	स्वर्णमयः पक्षः	सोने का पंख	Golden wing
रजतचञ्चुः	रजतमयः चञ्चुः	चाँदी की चोंच	Silver beak
तण्डुलान्	अक्षतान्	चावलों को	The rice
निवारयन्ती	वारणं कुर्वन्ती	रोकती हुई	Stopping
मा शुचः	शोकं मा कुरु	दुःख मत करो	Don't worry
प्रोवाच	अकथयत्	कहा	(He/She) said
प्रहर्षिता	प्रसन्ना	खुश हुई	She) became happy
प्रासादः	भवनम्	महल	Palace
गवाक्षात्	वातायनात्	खिड़की से	From the window
सोपानम्	सोपानम्	सीढ़ी	Stair
अवतारयामि	अवतीर्णं करोमि	उतारता हूँ	(I) hang
आससाद	प्राप्नोत्	पहुँचा	(He/She) reached
विलोक्य	दृष्ट्वा	देखकर	Looking
प्राह	उवाच	कहा	(He/She) said
प्रातराशः	कल्यवर्तः	सुबह का नाश्ता	Breakfast
व्याजहार	अकथयत्	कहा	(He/She) said
परिवेषितम्	परिवेषणं कृतम्	परोसा गया	Served
महार्हाणि	बहुमूल्यानि	बहुमूल्य	Costly
लुब्धा	लोभवशीभूता	लोभी	Greedy (f)
निर्भर्त्सयन्ती	भर्त्सनां कुर्वन्ती	निन्दा करती हुई	Scolding
पर्यत्यजत्	अत्यजत्	छोड़ दिया	Casted away

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) माता काम् आदिशत्?
(ख) स्वर्णकाकः कान् अखादत्?
(ग) प्रासादः कीदृशः वर्तते?
(घ) गृहमागत्य तया का समुद्घाटिता?
(ङ) लोभाविष्टा बालिका कीदृशीं मञ्जूषां नयति?

(अ) अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता कीदृशी आसीत्?
(ख) बालिकया पूर्वं कीदृशः काकः न दृष्टः आसीत्?
(ग) निर्धनायाः दुहिता मञ्जूषायां कानि अपश्यत्?
(घ) बालिका किं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता?
(ङ) गर्विता बालिका कीदृशं सोपानम् अयाचत कीदृशं च प्राप्नोत्।

2. (क) अधोलिखितानां शब्दानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत-

(*i*) पश्चात् – ....
(*ii*) हसितुम् – ....
(*iii*) अधः – ....
(*iv*) श्वेतः – ....
(*v*) सूर्यास्तः – ....
(*vi*) सुप्तः – ....

(ख) सन्धिं कुरुत-

(*i*) नि + अवसत् – ....
(*ii*) सूर्य + उदयः – ....
(*iii*) वृक्षस्य + उपरि – ....
(*iv*) हि + अकारयत् – ....
(*v*) च + एकाकिनी – ....
(*vi*) इति + उक्त्वा – ....

(*vii*) प्रति + अवदत् – ....
(*viii*) प्र + उक्तम् – ....
(*ix*) अत्र + एव – ....
(*x*) तत्र + उपस्थिता – ....
(*xi*) यथा + इच्छम् – ....

3. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) ग्रामे **निर्धना स्त्री** अवसत्।
(ख) **स्वर्णकाकं** निवारयन्ती बालिका प्रार्थयत्।
(ग) **सूर्योदयात्** पूर्वमेव बालिका तत्रोपस्थिता।
(घ) बालिका **निर्धनमातुः** दुहिता आसीत्।
(ङ) लुब्धा वृद्धा **स्वर्णकाकस्य** रहस्यमभिज्ञातवती।

4. प्रकृति-प्रत्यय-संयोगं कुरुत (पाठात् चित्वा वा लिखत)–

(क) वि + लोकृ + ल्यप् – ....
(ख) नि + क्षिप् + ल्यप् – ....
(ग) आ + गम् + ल्यप् – ....
(घ) दृश् + क्त्वा – ....
(ङ) शी + क्त्वा – ....
(च) लघु + तमप् – ....

5. प्रकृतिप्रत्यय-विभागं कुरुत–

(क) रोदितुम् – ....
(ख) दृष्ट्वा – ....
(ग) विलोक्य – ....
(घ) निक्षिप्य – ....
(ङ) आगत्य – ....
(च) शयित्वा – ....
(छ) लघुतमम् – ....

6. अधोलिखितानि कथनानि कः/का, कं/कां च कथयति–

कथनानि	कः/का	कं/काम्
(क) पूर्वं प्रातराशः क्रियताम्।	....	....

(ख) सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष। ....

(ग) तण्डुलान् मा भक्षय। ....

(घ) अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि। ....

(ङ) भो नीचकाक! अहमागता, मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ। ....

7. उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकगतेषु पदेषु पञ्चमीविभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

यथा- मूषकः बिलाद् बहिः निर्गच्छति (बिल)

(क) जनः .... बहिः आगच्छति। (ग्राम)

(ख) नद्यः .... निस्सरन्ति। (पर्वत)

(ग) .... पत्राणि पतन्ति। (वृक्ष)

(घ) बालकः .... बिभेति?। (सिंह)

(ङ) ईश्वरः .... त्रायते। (क्लेश)

(च) प्रभुः भक्तं .... निवारयति। (पाप)

योग्यताविस्तारः

यह पाठ **श्री पद्मशास्त्री** द्वारा रचित **"विश्वकथाशतकम्"** नामक कथासंग्रह से लिया गया है, जिसमें विभिन्न देशों की सौ लोक कथाओं का संग्रह है। यह वर्मा देश की एक श्रेष्ठ कथा है, जिसमें लोभ और उसके दुष्परिणाम के साथ-साथ त्याग और उसके सुपरिणाम का वर्णन, एक सुनहले पंखों वाले कौवे के माध्यम से किया गया है।

लेखक परिचय - इस कथा के लेखक पद्म शास्त्री हैं। ये साहित्यायुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न, शिक्षाशास्त्री और रसियन डिप्लोमा आदि उपाधियों से भूषित हैं। इन्हें विद्याभूषण व आशुकवि मानद उपाधियाँ भी प्राप्त हैं। इन्हें सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार समिति और राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा स्वर्णपदक प्राप्त है। इनकी अनेक रचनाएँ हैं, जिनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं -

1. सिनेमाशतकम्
2. स्वराज्यम् खण्डकाव्यम्
3. लेनिनामृतम् महाकाव्यम्
4. मदीया सोवियतयात्रा
5. पद्यपञ्चतन्त्रम्
6. बङ्गलादेशविजयः
7. लोकतन्त्रविजयः
8. विश्वकथाशतकम्
9. चायशतकम्
10. महावीरचरितामृतम्

1. **भाषिक-विस्तार** – "किसी भी काम को करके" इस अर्थ में 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा– पठित्वा – पठ् + क्त्वा = पढ़कर
गत्वा – गम् + क्त्वा = जाकर
खादित्वा – खाद् + क्त्वा = खाकर

इसी अर्थ में अगर धातु (क्रिया) से पहले उपसर्ग होता है तो ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। धातु से पूर्व उपसर्ग होने की स्थिति में कभी भी 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग नहीं हो सकता और उपसर्ग न होने की स्थिति में कभी भी ल्यप् प्रत्यय नहीं हो सकता है।

यथा– उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य
सम् + पूज् + ल्यप् = सम्पूज्य
वि + लोकृ (लोक) + ल्यप् = विलोक्य
आ + दा + ल्यप् = आदाय
निर् + गम् + ल्यप् = निर्गत्य

2. प्रश्नवाचक शब्दों को अनिश्चयवाचक बनाने के लिए चित् और चन निपातों का प्रयोग किया जाता है। ये निपात जब सर्वनामपदों के साथ लगते हैं तो सर्वनाम पद होते हैं और जब अव्यय पदों के साथ प्रयुक्त होते हैं तो अव्यय होते हैं।

यथा– कः = कौन

कः + चन = कश्चन = कोई	कः + चित् = कश्चित् = कोई
के + चन = केचन कोई (बहुवचन में)	के + चित् = केचित् (बहुवचन में)
का + चन = काचन (कोई स्त्री)	का + चित् = काचित् (कोई स्त्री)
काः + चन = काश्चन (कुछ स्त्रियाँ बहुवचन)	काः + चित् = काश्चित् (कुछ स्त्रियाँ बहुवचन में)

किम् शब्द के सभी वचनों, लिंगों व सभी विभक्तियों में चित् और चन का प्रयोग किया जा सकता है और उसे अनिश्चयवाचक बनाया जा सकता है। जैसे –

1. किञ्चित्	प्रथमा में
2. केनचित्	तृतीया में
3. केषाञ्चित् (केषाम् + चित्)	षष्ठी में
4. कस्मिंश्चित्	सप्तमी में
5. कस्याञ्चित्	सप्तमी (स्त्रीलिङ्ग में)

इसी तरह चित् के स्थान पर चन का प्रयोग होता है। चित् और चन जब अव्ययपदों में लग जाते हैं तो वे अव्यय हो जाते हैं। जैसे –

क्वचित्	क्वचन
कदाचित्	कदाचन

3. संस्कृत में एक से चतुर (चार) तक संख्यावाची शब्द पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, तथा नपुंसक लिङ्ग में अलग-अलग रूपों में होते हैं पर पञ्च (पाँच) से उनका रूप सभी लिङ्गों में एक सा होता है।

पुंलिङ्ग	**स्त्रीलिङ्ग**	**नपुंसकलिङ्ग**
एकः	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि

पुंलिङ्ग

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
हे गच्छन्	हे गच्छन्तौ	हे गच्छन्तः

स्त्रीलिङ्ग

गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्त्यः
गच्छन्तीम्	गच्छन्त्यौ	गच्छन्तीः
गच्छन्त्या	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभिः
गच्छन्त्यै	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
गच्छन्त्याः	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः

गच्छन्त्याः	गच्छन्त्योः	गच्छन्तीनाम्
गच्छन्त्याम्	गच्छन्त्योः	गच्छन्तीषु
हे गच्छन्ति	हे गच्छन्त्यौ	हे गच्छन्त्यः

नपुंसक लिङ्ग में

गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति
गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति

शेष पुंलिङ्गवत्

4. तरप् और तपम् प्रत्ययों में तर और तम शेष बचता है।

यथा – बलवत् + तरप् – बलवत्तर
लघु + तमप् – लघुतम

ये तुलनावाची प्रत्यय हैं। इनके उदाहरण देखें –

लघु	लघुतर	लघुतम
महत्	महत्तर	महत्तम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम

अध्येतव्यः ग्रन्थः-

विश्वकथाशतकम् (भागद्वयम्, 1987, 1988 पद्म शास्त्री, देवनागर प्रकाशन, जयपुर)

तृतीयः पाठः

गोदोहनम्

0961CH03

एष नाट्यांशः 'चतुर्व्यूहम्' इति पुस्तकात् संक्षिप्य सम्पाद्य च उद्धृतः। अस्मिन् नाटके एतादृशस्य जनस्य कथानकम् अस्ति यः धनवान् सुखाकांक्षी च भवितुम् इच्छुकः मासपर्यन्तं दुग्धदोहनादेव विरमति, येन मासान्ते धेनोः शरीरे सञ्चितं पर्याप्तं दुग्धम् एकवारमेव विक्रीय सम्पत्तिमर्जयितुं समर्थः भवेत्। परं मासान्ते यदा सः दुग्धदोहनाय प्रयतते तदा सः दुग्धबिन्दुम् अपि न प्राप्नोति। दुग्ध-प्राप्तिस्थाने सः धेनोः प्रहारैः रक्तरञ्जितः भवति, अवगच्छति च यत् दैनन्दिनं कार्यं यदि मासपर्यन्तं-संगृह्य क्रियते तदा लाभस्य स्थाने हानिरेव भवति।

(प्रथमं दृश्यम्)

(मल्लिका मोदकानि साधयन्ती मन्दस्वरेण शिवस्तुतिं करोति)

(ततः प्रविशति मोदकगन्धम् अनुभवन् प्रसन्नमना चन्दनः।)

चन्दनः – अहा! सुगन्धस्तु मनोहरः (विलोक्य) अये मोदकानि रच्यन्ते? (प्रसन्नः भूत्वा) आस्वादयामि तावत्। (मोदकं ग्रहीतुमिच्छति)

मल्लिका – (सक्रोधम्) विरम। विरम। मा स्पृश एतानि मोदकानि।

चन्दनः – किमर्थं क्रुध्यसि! तव हस्तनिर्मितानि मोदकानि दृष्ट्वा अहं जिह्वालोलुपतां नियन्त्रयितुम् अक्षमः अस्मि, किं न जानासि त्वमिदम्?

मल्लिका – सम्यग् जानामि नाथ! परम् एतानि मोदकानि पूजानिमित्तानि सन्ति।

चन्दनः – तर्हि, शीघ्रमेव पूजनं सम्पादय। प्रसादं च देहि।

मल्लिका – भोः! अत्र पूजनं न भविष्यति। अहं स्वसखीभिः सह श्वः प्रातः काशीविश्वनाथमन्दिरं गमिष्यामि, तत्र गङ्गास्नानं धर्मयात्राञ्च वयं करिष्यामः।

चन्दनः – सखिभिः सह! न मया सह! (विषादं नाटयति)

मल्लिका – आम्। चम्पा, गौरी, माया, मोहिनी, कपिलादयः सर्वाः गच्छन्ति। अतः, मया सह तवागमनस्य औचित्यं नास्ति। वयं सप्ताहान्ते प्रत्यागमिष्यामः। तावत्, गृह-व्यवस्थां, धेनोः दुग्धदोहनव्यवस्थाञ्च परिपालय।

(द्वितीयं दृश्यम्)

चन्दनः – अस्तु। गच्छ। सखीभिः सह धर्मयात्रया आनन्दिता च भव। अहं सर्वमपि परिपालयिष्यामि। शिवास्ते सन्तु पन्थानः!

चन्दनः – मल्लिका तु धर्मयात्रायै गता। अस्तु। दुग्धदोहनं कृत्वा ततः स्वप्रातराशस्य प्रबन्धं करिष्यामि। (स्त्रीवेषं धृत्वा, दुग्धपात्रहस्तः नन्दिन्याः समीपं गच्छति)

उमा – मातुलानि! मातुलानि!

चन्दनः – उमे! अहं तु मातुलः। तव मातुलानी तु गङ्गास्नानार्थं काशीं गता अस्ति। कथय! किं ते प्रियं करवाणि?

उमा – मातुल! पितामहः कथयति, मासानन्तरम् अस्मद् गृहे महोत्सवः भविष्यति। तत्र त्रिशत-सेटकमितं दुग्धम् अपेक्ष्यते। एषा व्यवस्था भवद्भिः करणीया।

चन्दनः – (प्रसन्नमनसा) त्रिशत-सेटककपरिमितं दुग्धम्! शोभनम्। दुग्धव्यवस्था भविष्यति एव इति पितामहं प्रति त्वया वक्तव्यम्।

उमा – धन्यवादः मातुल! याम्यधुना। *(सा निर्गता)*

(तृतीयं दृश्यम्)

चन्दनः – *(प्रसन्नो भूत्वा, अङ्गुलिषु गणयन्)* अहो! त्रिशत-सेटकं दुग्धम्! अनेन तु बहुधनं लप्स्ये। (नन्दिनीं दृष्ट्वा) भो नन्दिनि! तव कृपया तु अहं धनिकः भविष्यामि। *(प्रसन्नः सः धेनोः बहुसेवां करोति)*

चन्दनः – (चिन्तयति) मासान्ते एव दुग्धस्य आवश्यकता भवति। यदि प्रतिदिनं दोहनं करोमि तर्हि दुग्धं सुरक्षितं न तिष्ठति। इदानीं किं करवाणि? भवतु नाम मासान्ते एव सम्पूर्णतया दुग्धदोहनं करोमि।

(एवं क्रमेण सप्तदिनानि व्यतीतानि। सप्ताहान्ते मल्लिका प्रत्यागच्छति)

मल्लिका – *(प्रविश्य)* स्वामिन्! प्रत्यागता अहम्। आस्वादय प्रसादम्।

(चन्दनः मोदकानि खादति वदति च)

चन्दनः – मल्लिके! तव यात्रा तु सम्यक् सफला जाता? काशीविश्वनाथस्य कृपया प्रियं निवेदयामि।

मल्लिका – *(साश्चर्यम्)* एवम्। धर्मयात्रातिरिक्तं प्रियतरं किम्?

चन्दनः – ग्रामप्रमुखस्य गृहे मासान्ते महोत्सवः भविष्यति। तत्र त्रिशत–सेटकमितं दुग्धम् अस्माभिः दातव्यम् अस्ति।

मल्लिका – किन्तु एतावन्मात्रं दुग्धं कुतः प्राप्स्यामः?

चन्दनः – विचारय मल्लिके! प्रतिदिनं दोहनं कृत्वा दुग्धं स्थापयामः चेत् तत् सुरक्षितं न तिष्ठति। अत एव दुग्धदोहनं न क्रियते। उत्सवदिने एव समग्रं दुग्धं धोक्ष्यावः।

मल्लिका – स्वामिन्! त्वं तु चतुरतमः। अत्युत्तमः विचारः। अधुना दुग्धदोहनं विहाय केवलं नन्दिन्याः सेवाम् एव करिष्यावः। अनेन अधिकाधिकं दुग्धं मासान्ते प्राप्स्यावः।

(द्वावेव धेनोः सेवायां निरतौ भवतः। अस्मिन् क्रमे घासादिकं गुडादिकं च भोजयतः। कदाचित् विषाणयोः तैलं लेपयतः तिलकं धारयतः, रात्रौ नीराजनेनापि तोषयतः)

चन्दनः – मल्लिके! आगच्छ। कुम्भकारं प्रति चलावः। दुग्धार्थं पात्रप्रबन्धोऽपि करणीयः। *(द्वावेव निर्गतौ)*

(चतुर्थं दृश्यम्)

कुम्भकारः – *(घटरचनायां लीनः गायति)*

ज्ञात्वाऽपि जीविकाहेतोः रचयामि घटानहम्।
जीवनं भङ्गुरं सर्वं यथायं मृत्तिकाघटः॥

चन्दनः – नमस्करोमि तात! पञ्चदश घटान् इच्छामि। किं दास्यसि?

देवेश – कथं न? विक्रयणाय एव एते। गृहाण घटान्। पञ्चाशदुत्तरैकशतं रूप्यकाणि च देहि।

चन्दनः – साधु। परं मूल्यं तु दुग्धं विक्रीय एव दातुं शक्यते।

देवेशः – क्षम्यतां पुत्र! मूल्यं विना तु एकमपि घटं न दास्यामि।

मल्लिका - *(स्वाभूषणं दातुमिच्छति)* तात! यदि अधुनैव मूल्यम् आवश्यकं तर्हि, गृहाण एतत् आभूषणम्।

देवेशः - पुत्रिके! नाहं पापकर्म करोमि। कथमपि नेच्छामि त्वाम् आभूषणविहीनां कर्तुम्। नयतु यथाभिलषितं घटान्। दुग्धं विक्रीय एव घटमूल्यम् ददातु।

उभौ - धन्योऽसि तात! धन्योऽसि।

(पञ्चमं दृश्यम्)

(मासानन्तरं सन्ध्याकालः। एकत्र रिक्ताः नूतनघटाः सन्ति। दुग्धक्रेतारः अन्ये च ग्रामवासिनः अपरत्र आसीनाः)

चन्दनः - *(धेनुं प्रणम्य, मङ्गलाचरणं विधाय, मल्लिकाम् आह्वयति)* मल्लिके! सत्वरम् आगच्छ।

मल्लिका - आयामि नाथ! दोहनम् आरभस्व तावत्।

चन्दनः - (यदा धेनोः समीपं गत्वा दोग्धुम् इच्छति, तदा धेनुः पृष्ठपादेन प्रहरति। चन्दनश्च पात्रेण सह पतति) नन्दिनि! दुग्धं देहि। किं जातं ते? (पुनः प्रयासं

करोति) (नन्दिनी च पुनः पुनः पादप्रहारेण ताडयित्वा चन्दनं रक्तरञ्जितं करोति) हा! हतोऽस्मि। (चीत्कारं कुर्वन् पतति) (सर्वे आश्चर्येण चन्दनम् अन्योन्यं च पश्यन्ति)

मल्लिका - (चीत्कारं श्रुत्वा, झटिति प्रविश्य) नाथ! किं जातम्? कथं त्वं रक्तरञ्जितः?

चन्दनः - धेनुः दोग्धुम् अनुमतिम् एव न ददाति। दोहनप्रक्रियाम् आरभमाणम् एव ताडयति माम्।

(मल्लिका धेनुं स्नेहेन वात्सल्येन च आकार्य दोग्धुं प्रयतते। किन्तु, धेनुः दुग्धहीना एव इति अवगच्छति।)

मल्लिका - (चन्दनं प्रति) नाथ! अत्यनुचितं कृतम् आवाभ्याम् यत्, मासपर्यन्तं धेनोः दोहनं न कृतम्। सा पीडा अनुभवति। अत एव ताडयति।

चन्दनः - देवि! मयापि ज्ञातं यत्, अस्माभिः सर्वथा अनुचितमेव कृतं यत्, पूर्णमासपर्यन्तं दोहनं न कृतम्। अत एव, इयं दुग्धहीना जाता। सत्यमेव उक्तम्-

कार्यमद्यतनीयं यत् तदद्यैव विधीयताम्।
विपरीता गतिर्यस्य स कष्टं लभते ध्रुवम्॥

मल्लिका - आम् भर्तः! सत्यमेव। मयापि पठितं यत्-

सुविचार्य विधातव्यं कार्यं कल्याणकाङ्क्षिणा।
यः करोत्यविचार्यैतत् स विषीदति मानवः॥

किन्तु प्रत्यक्षम् अद्य एव अनुभूतम् एतत्।

सर्वे - दिनस्य कार्यं तस्मिन्नेव दिने कर्तव्यम्। यः एवं न करोति सः कष्टं लभते ध्रुवम्।

(जवनिका पतनम्)
(सर्वे मिलित्वा गायन्ति।)

आदानस्य प्रदानस्य कर्तव्यस्य च कर्मणः।
क्षिप्रमक्रियमाणस्य कालः पिबति तद्रसम्॥

श्लोकान्वयः-

1. यथा एष मृत्तिकाघटः- (तथा) सर्वं जीवनं भङ्गुरं ज्ञात्वा अपि अहंजीविकाहेतोः घटान् रचयामि।
2. यत् अद्यतनीयं कार्यं स्यात् तत् अद्यैव विधीयताम्। यस्य गतिः विपरीता (अस्ति) सः ध्रुवं कष्टं लभते।

3. कल्याणकाङ्क्षिणा कार्यं सुविचार्य (एव) विधातव्यम्। यः मानवः एतत् अविचार्य करोति सः विषीदति।
4. क्षिप्रम् अक्रियमाणस्य आदानस्य प्रदानस्य कर्तव्यस्य च कर्मणः तद्रसं कालः पिबति।

शब्दार्थाः

धेनुः	गौः	गाय	Cow
मन्दस्वरेण	निम्नस्वरेण	धीमी आवाज़ में	In low volume
मनोहरः	आकर्षकः	मनमोहक	Attractive
विरम	तिष्ठ	रुको	Stop
जिह्वालोलुपताम्	रसनालोभम्	जीभ का लालच	Fascination of tongue
अक्षमः	असमर्थः	असहाय	Incapable
धर्मयात्राम्	तीर्थयात्राम्	धार्मिक यात्रा	Pilgrimage
सेटकम्	एकलीटरमितम्	एक लीटर	One liter
प्रत्यागता	प्रत्यायाता	लौट आई	Came Back
साश्चर्यम्	सविस्मयम्	हैरानी से	With astonishment
दुग्धदोहनम्	पयोदोहनम्	दूध दुहना	Milking
निरतौ	संलग्नौ	दोनो जुटे हुए	Both involved
भङ्गुरम्	भञ्जनशीलं	टूटकर समाप्त होने वाला	Breakable
विक्रीय	विक्रयं कृत्वा	बेचकर	Selling
रिक्ताः	शून्याः	खाली	Empty
रक्तरञ्जितम्	शोणिताप्लावितम्	खून से सना	Wet with blood
अन्योन्यम्	परस्परम्	आपस में	To each other
अनुमतिम्	आज्ञा	अनुमति	Permission
शुष्कम्	नीरसम्	सूखा	Dry
ध्रुवम्	निश्चितम्	निश्चित रूप से	Certainly
कल्याणकाङ्क्षिणा	कल्याणेच्छुकेन	कल्याण चाहने वाले के द्वारा	By well wisher
विषीदति	दुःखम् आप्नोति	दुखी होता है	Gets agony
जवनिका	यवनिका	पर्दा	Curtain
क्षिप्रम्	द्रुतम्	शीघ्रता से	Quickly

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत–

(क) मल्लिका पूजार्थं सखीभिः सह कुत्र गच्छति स्म?
(ख) उमायाः पितामहेन कतिसेटकमितं दुग्धम् अपेक्ष्यते स्म?
(ग) कुम्भकारः घटान् किमर्थं रचयति?
(घ) कानि चन्दनस्य जिह्वालोलुपतां वर्धयन्ति स्म?
(ङ) नन्दिन्याः पादप्रहारैः कः रक्तरञ्जितः अभवत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत–

(क) मल्लिका चन्दनश्च मासपर्यन्तं धेनोः सेवां कथम् अकुरुताम्?
(ख) कालः कस्य रसं पिबति?
(ग) घटमूल्यार्थं यदा मल्लिका स्वाभूषणं दातुं प्रयतते तदा कुम्भकारः किं वदति?
(घ) मल्लिकया किं दृष्ट्वा धेनोः ताडनस्य वास्तविकं कारणं ज्ञातम्?
(ङ) मासपर्यन्तं धेनोः अदोहनस्य किं कारणमासीत्?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –

(क) मल्लिका <u>सखीभिः</u> सह धर्मयात्रायै गच्छति स्म।
(ख) चन्दनः दुग्धदोहनं कृत्वा एव <u>स्वप्रातराशस्य</u> प्रबन्धम् अकरोत्।
(ग) <u>मोदकानि</u> पूजानिमित्तानि रचितानि आसन्?
(घ) मल्लिका स्वपतिं <u>चतुरतमं</u> मन्यते?
(ङ) <u>नन्दिनी</u> पादाभ्यां ताडयित्वा चन्दनं रक्तरञ्जितं करोति?

4. मञ्जूषायाः सहायतया भावार्थे रिक्तस्थानानि पूरयत–

गृहव्यवस्थायै, उत्पादयेत्, समर्थकः, धर्मयात्रायाः, मङ्गलकामनाम्, कल्याणकारिणः॥

यदा चन्दनः स्वपत्न्याः काशीविश्वनाथं प्रति .... विषये जानाति तदा सः क्रोधितः न भवति यत् तस्याः पत्नी तं ....कथयित्वा सखीभिः सह भ्रमणाय गच्छति अपि तु तस्याः यात्रायाः कृते .... कुर्वन् कथयति यत् तव मार्गाः शिवाः अर्थात् .... भवन्तु। मार्गे काचिदपि बाधा तव कृते समस्यां न ....। एतेन सिध्यति यत् चन्दनः नारीस्वतन्त्रतायाः .... आसीत्।

5. घटनाक्रमानुसारं लिखत -

(क) सा सखीभिः सह तीर्थयात्रायै काशीविश्वनाथमन्दिरं गच्छति।
(ख) उभौ नन्दिन्याः सर्वविधपरिचर्यां कुरुतः।
(ग) उमा मासान्ते उत्सवार्थं दुग्धस्य आवश्यकताविषये चन्दनं सूचयति।
(घ) मल्लिका पूजार्थं मोदकानि रचयति।
(ङ) उत्सवदिने यदा दोग्धुं प्रयत्नं करोति तदा नन्दिनी पादेन प्रहरति।
(च) कार्याणि समये करणीयानि इति चन्दनः नन्दिन्याः पादप्रहारेण अवगच्छति।
(छ) चन्दनः उत्सवसमये अधिकं दुग्धं प्राप्तुं मासपर्यन्तं दोहनं न करोति।
(ज) चन्दनस्य पत्नी तीर्थयात्रां समाप्य गृहं प्रत्यागच्छति।

6. अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं प्रति कथयति इति प्रदत्तस्थाने लिखत-

उदाहरणम्-	**कः/का**	**कं/काम्**
स्वामिन्! प्रत्यागता अहम्। आस्वादय प्रसादम्।	मल्लिका	चन्दनं प्रति
(क) धन्यवाद मातुल! याम्यधुना।	....	....
(ख) त्रिसेटकमितं दुग्धम्। शोभनम्। व्यवस्था भविष्यति।	....	....
(ग) मूल्यं तु दुग्धं विक्रीयैव दातुं शक्यते।	....	....
(घ) पुत्रिके! नाहं पापकर्म करोमि।	....	....
(ङ) देवि! मयापि ज्ञातं यदस्माभिः सर्वथानुचितं कृतम्।	....	....

7. पाठस्य आधारेण प्रदत्तपदानां सन्धिं/सन्धिच्छेदं वा कुरुत -

(क) शिवास्ते = ... + ...
(ख) मनः हरः = ... + ...
(ग) सप्ताहान्ते = ... + ...
(घ) नेच्छामि = ... + ...
(ङ) अत्युत्तमः = ... + ...

(अ) पाठाधारेण अधोलिखितपदानां प्रकृतिं प्रत्ययं च संयोज्य/विभज्य वा लिखत-

(क) करणीयम् = ... + ...
(ख) वि+क्री+ल्यप् = ...
(ग) पठितम् = ... + ...
(घ) तड्य+क्त्वा = ...
(ङ) दोग्धुम् = ... + ...

योग्यताविस्तारः

'गोदोहनम्' एकांकी में एक ऐसे व्यक्ति का कथानक है जो धनवान् और सुखी बनने की इच्छा से अपनी गाय से एक महीने तक दूध निकालना बन्द कर देता है, ताकि महीने भर के दूध को एक साथ निकालकर बेचकर धनवान् बन सके। इस प्रकार एक मास पश्चात् जब वह गाय को दुहने का प्रयास करता है तब अत्यधिक दूध का तो कहना ही क्या, उसे दूध की एक बूँद भी नहीं मिलती, अपि तु दूध के स्थान पर उसे मिलते हैं गाय के पैरों के प्रहार, जिससे आहत और रक्तरञ्जित होकर वह ज़मीन पर गिर पड़ता है। इस घटना से वहाँ उपस्थित सभी यह समझ जाते हैं कि यथासमय किया हुआ कार्य ही फलदायी होता है।

भाव-विस्तारः

उपायं चिन्तयेत् प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत्।
पश्यतो बकमूर्खस्य नकुलेन हताः बकाः॥

बुद्धिमान व्यक्ति उपाय पर विचार करते हुए अपाय अर्थात् उपाय से होने वाली हानि के विषय में भी सोचे क्योंकि हानिरहित उपाय ही कार्य सिद्ध करता है, अपाय युक्त उपाय नहीं जैसे कि अपने बच्चों को साँप द्वारा खाए जाते हुए देखकर एक बगुले ने नेवले का प्रबन्ध साँप को खाने के लिए किया जो कि साँप को खाने के साथ-साथ सभी बगुलों को भी बच्चों सहित खा गया। अतः ऐसा उपाय सदैव हानिकारक होता है, जिसके अपाय पर विचार न किया जाए।

"अविवेकः परमापदां पदम्"

गोदोहनम् - एकाङ्की पढ़ाते समय संदर्भ को आधुनिक परिवेश से जोड़ें तथा छात्रों को समझाएँ कि कोई भी कार्य यदि नियत समय पर न करके कई दिनों के पश्चात् एक साथ करने के लिए संगृहीत किया जाता रहता है तो उससे होने वाला लाभ-हानि में परिवर्तित हो सकता है।
अतः हमें सदैव अपने सभी कार्य यथासमय करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। पाठ की कथा नाटकीयता के साथ ही छात्रों को यह भी बताएँ कि इस नाटक से तात्कालिक समाज का परिचय भी मिलता है कि घर की व्यवस्था स्त्री-पुरुष मिलकर ही करते थे तथा स्त्री को स्वतन्त्र निर्णय लेने का भी पूर्ण अधिकार प्राप्त था।

0961CH04

चतुर्थः पाठः

कल्पतरुः

प्रस्तुतः पाठः "**वेतालपञ्चविंशतिः**" इति प्रसिद्धकथासङ्ग्रहात् सम्पादनं कृत्वा संगृहीतोऽस्ति। अत्र मनोरञ्जकघटनाभिः विस्मयकारिघटनाभिश्च जीवनमूल्यानां निरूपणं वर्तते। अस्यां कथायां पूर्वकालतः एव स्वगृहोद्याने स्थितात् कल्पवृक्षेण जीमूतवाहनः लौकिकपदार्थान् न याचते। अपि तु सः सांसारिकप्राणिनां दुःखानि दूरीकर्तुं वरं याचते। यतो हि लोकभोग्याः भौतिकपदार्थाः जलतरङ्गवद् अनित्याः सन्ति। अस्मिन् संसारे केवलं परोपकारः एव सर्वोत्कृष्टं चिरस्थायि तत्त्वम् अस्ति।

अस्ति हिमवान् नाम सर्वरत्नभूमिः नगेन्द्रः। तस्य सानोः उपरि विभाति कञ्चनपुरं नाम नगरम्। तत्र जीमूतकेतुः इति श्रीमान् विद्याधरपतिः वसति स्म। तस्य गृहोद्याने कुलक्रमागतः कल्पतरुः स्थितः। स राजा जीमूतकेतुः तं कल्पतरुम् आराध्य तत्प्रसादात् च बोधिसत्वांशसम्भवं जीमूतवाहनं नाम पुत्रं प्राप्नोत्। सः जीमूतवाहनः महान् दानवीरः सर्वभूतानुकम्पी च अभवत्। तस्य गुणैः प्रसन्नः स्वसचिवैश्च प्रेरितः राजा कालेन सम्प्राप्तयौवनं तं यौवराज्ये अभिषिक्तवान्। कदाचित् हितैषिणः पितृमन्त्रिणः यौवराज्ये स्थितं तं जीमूतवाहनम् उक्तवन्तः– "युवराज! योऽयं सर्वकामदः कल्पतरुः तवोद्याने तिष्ठति स तव सदा पूज्यः। अस्मिन् अनुकूले स्थिते सति शक्रोऽपि अस्मान् बाधितुं न शक्नुयात्" इति।

एतत् आकर्ण्य जीमूतवाहनः अचिन्तयत् – "अहो ईदृशम् अमरपादपं प्राप्यापि अस्माकं पूर्वैः पुरुषैः किमपि तादृशं फलं न प्राप्तम्। किन्तु केवलं कैश्चिदेव कृपणैः कश्चिदेव अर्थः अर्थितः। तदहम् अस्मात् कल्पतरोः अभीष्टं साधयामि" इति। एवम् आलोच्य सः पितुः अन्तिकम् आगच्छत्। आगत्य च सुखमासीनं पितरम् एकान्ते न्यवेदयत्– "तात! त्वं तु जानासि एव यदस्मिन् संसारसागरे आशरीरम् इदं सर्वं धनं वीचिवत् चञ्चलम्। एकः परोपकार एव अस्मिन् संसारे अनश्वरः यो युगान्तपर्यन्तं यशः प्रसूते। तद् अस्माभिः ईदृशः कल्पतरुः किमर्थं

रक्ष्यते? यैश्च पूर्वैरयं 'मम मम' इति आग्रहेण रक्षितः, ते इदानीं कुत्र गताः? तेषां कस्यायम्? अस्य वा के ते? तस्मात् परोपकारैकफलसिद्धये त्वदाज्ञया इमं कल्पपादपम् आराधयामि।

अथ पित्रा 'तथा' इति अभ्यनुज्ञातः स जीमूतवाहनः कल्पतरुम् उपगम्य उवाच – "देव! त्वया अस्मत्पूर्वेषाम् अभीष्टाः कामाः पूरिताः, तन्ममैकं कामं पूरय। यथा पृथिवीम् अदरिद्राम् पश्यामि, तथा करोतु देव" इति। एवंवादिनि जीमूतवाहने "त्यक्तस्त्वया एषोऽहं यातोऽस्मि" इति वाक् तस्मात् तरोः उदभूत्।

क्षणेन च स कल्पतरुः दिवं समुत्पत्य भुवि तथा वसूनि अवर्षत् यथा न कोऽपि दुर्गत आसीत्। ततस्तस्य जीमूतवाहनस्य सर्वजीवानुकम्पया सर्वत्र यशः प्रथितम्।

शब्दार्थाः

हिमवान्	हिमालयः	हिमालय	The Himalaya
नगेन्द्रः	पर्वतराजः	पर्वतों का राजा	King of mountains
सानोः	शिखरस्य	शिखर के, चोटी के	Of the mountain peak
कुलक्रमागतः	कुलक्रमाद् आगतः कुलपरम्परया सम्प्राप्तः	कुल-परम्परा से प्राप्त हुआ	Inherited
यौवराज्ये	युवराजपदे	युवराज के पद पर	on the post of the crown prince
शक्रः	इन्द्रः	इन्द्र	Indra
अर्थितः	याचितः	माँगा	Begged
अन्तिकम्	समीपम्	पास में	Near
वीचिवत्	तरङ्गवत्	तरङ्ग की तरह	Like a tide
अभ्यनुज्ञातः	अनुमतः	अनुमति पाया हुआ	Permitted
अदरिद्राम्	दरिद्रहीनाम्	दरिद्रता से रहित अर्थात् सम्पन्न	Without poverty (f)
दिवम्	स्वर्गम्	स्वर्ग	To the heaven
वसूनि	धनानि	धन	Money
उपगम्य	समीपं गत्वा	पास में जाकर	Going near
दुर्गतः	दुर्गतिम् आपन्नः	पीड़ित, निर्धन	Caught by misfortune
सर्वजीवानुकम्पया	सर्वजीवेभ्यःकृपया	सभी जीवों के प्रति कृपा से	By kindness to All beings
प्रथितम्	प्रसिद्धम्	प्रसिद्ध हो गया	Became famous

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत-**

   (क) जीमूतवाहनः कस्य पुत्रः अस्ति?

   (ख) संसारेऽस्मिन् कः अनश्वरः भवति?

(ग) जीमूतवाहनः परोपकारैकफलसिद्धये कम् आराधयति?
(घ) जीमूतवाहनस्य सर्वभूतानुकम्पया सर्वत्र किं प्रथितम्?
(ङ) कल्पतरुः भुवि कानि अवर्षत्?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) कञ्चनपुरं नाम नगरं कुत्र विभाति स्म?
(ख) जीमूतवाहनः कीदृशः आसीत्?
(ग) कल्पतरोः वैशिष्ट्यमाकर्ण्य जीमूतवाहनः किम् अचिन्तयत्?
(घ) हितैषिणः मन्त्रिणः जीमूतवाहनं किम् उक्तवन्तः?
(ङ) जीमूतवाहनः कल्पतरुम् उपगम्य किम् उवाच?

3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानि कस्मै प्रयुक्तानि?

(क) **तस्य** सानोरुपरि विभाति कञ्चनपुरं नाम नगरम्।
(ख) राजा सम्प्राप्तयौवनं **तं** यौवराज्ये अभिषिक्तवान्?
(ग) **अयं** तव सदा पूज्यः।
(घ) तात! **त्वं** तु जानासि यत् धनं वीचिवच्चञ्चलम्।

4. अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं पाठात् चित्वा लिखत -

(क) पर्वतः	–	....	(ख) भूपतिः	–	....
(ग) इन्द्रः	–	....	(घ) धनम्	–	....
(ङ) गञ्छितम्	–	....	(च) समीपम्	–	....
(छ) धरित्रीम्	–	....	(ज) कल्याणम्	–	....
(झ) वाणी	–	....	(ञ) वृक्षः	–	....

5. 'क' स्तम्भे विशेषणानि 'ख' स्तम्भे च विशेष्याणि दत्तानि। तानि समुचितं योजयत-

'क' स्तम्भ	**'ख' स्तम्भ**
कुलक्रमागतः	परोपकारः
दानवीरः	मन्त्रिभिः
हितैषिभिः	जीमूतवाहनः
वीचिवच्चञ्चलम्	कल्पतरुः
अनश्वरः	धनम्

6. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) **तरोः** कृपया सः पुत्रम् प्राप्नोत्।
(ख) सः **कल्पतरुं** न्यवेदयत्।
(ग) **धनवृष्ट्या** कोऽपि दरिद्रः नातिष्ठत्।
(घ) कल्पतरुः **पृथिव्यां** धनानि अवर्षत्।
(ङ) **जीवानुकम्पया** जीमूतवाहनस्य यशः प्रासरत्।

7. (क) "स्वस्ति तुभ्यम्" स्वस्तिशब्दस्य योगे चतुर्थी विभक्ति भवति इत्यनेन नियमेन अत्र चतुर्थी विभक्तिः प्रयुक्ता। एवमेव (कोष्ठकगतेषु पदेषु) चतुर्थीविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) स्वस्ति .... (राजा)
(ख) स्वस्ति .... (प्रजा)
(ग) स्वस्ति .... (छात्र)
(घ) स्वस्ति .... (सर्वजन)

(ख) कोष्ठकगतेषु पदेषु षष्ठीं विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) तस्य .... उद्याने कल्पतरुः आसीत्। (गृह)
(ख) सः .... अन्तिकम् अगच्छत्। (पितृ)
(ग) .... यशः सर्वत्र प्रथितम् (जीमूतवाहन)
(घ) अयं .... तरुः? (किम्)

योग्यताविस्तारः

यह पाठ **'वेतालपञ्चविंशतिः'** नामक कथा संग्रह से लिया गया है, जिसमें मनोरञ्जक एवम् आश्चर्यजनक घटनाओं के माध्यम से जीवनमूल्यों का निरूपण किया गया है। इस कथा में जीमूतवाहन अपने पूर्वजों के काल से गृहोद्यान में आरोपित कल्पवृक्ष से सांसारिक द्रव्यों को न माँगकर संसार के प्राणियों के दु:खों को दूर करने का वरदान माँगता है क्योंकि, धन तो पानी की लहर के समान चंचल है, केवल परोपकार ही इस संसार का सर्वोत्कृष्ट तथा चिरस्थायी तत्त्व है।

(क) ग्रन्थ परिचय – "वेतालपञ्चविंशतिका" पच्चीस कथाओं का संग्रह है। इस नाम की दो रचनाएँ पाई जाती हैं। एक शिवदास (13वीं शताब्दी) द्वारा लिखित ग्रन्थ है, जिसमें गद्य और पद्य दोनों विधाओं का प्रयोग किया गया है। दूसरी जम्भलदत्त की रचना है जो केवल गद्यमयी है। इस कथा में कहा गया है कि राजा विक्रम को प्रतिवर्ष कोई तांत्रिक सोने का एक फल

देता है। उसी तांत्रिक के कहने पर राजा विक्रम श्मशान से शव लाता है। जिस पर सवार होकर एक वेताल मार्ग में राजा के मनोरञ्जन के लिए कथा सुनाता है। कथा सुनते समय राजा को मौन रहने का निर्देश देता है। कहानी के अन्त में वेताल राजा से कहानी पर आधारित एक प्रश्न पूछता है। राजा उसका सही उत्तर देता है। शर्त के अनुसार वेताल पुनः श्मशान पहुँच जाता है। इस तरह पच्चीस बार ऐसी ही घटनाओं की आवृत्ति होती है और वेताल राजा को एक-एक करके पच्चीस कथाएँ सुनाता है। ये कथाएँ अत्यन्त रोचक, भावप्रधान और विवेक की परीक्षा लेने वाली हैं।

(ख) क्तक्तवतुप्रयोगः-

क्त - इस प्रत्यय का प्रयोग सामान्यतः कर्मवाच्य में होता है।

क्तवतु - इस प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है।

क्तप्रत्ययः-

- जीमूतवाहनः हितैषिभिः मन्त्रिभिः **उक्तः**।
- कृपणैः कश्चिदेव अर्थः **अर्थितः**।
- त्वया अस्मत्कामाः **पूरिताः**।
- तस्य यशः **प्रथितम्** (कर्तृवाच्य में क्त)

क्तवतुप्रत्ययः-

- सः पुत्रं यौवराज्यपदेऽ**भिषिक्तवान्**।
- एतदाकर्ण्य जीमूतवाहनः **चिन्तितवान्**।
- स सुखासीनं पितरं **निवेदितवान्**।
- जीमूतवाहनः कल्पतरुम् **उक्तवान्**।

(ग) लोककल्याण-कामना-विषयक कतिपय श्लोक-

- सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥
- सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥
- न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

अध्येतव्यः ग्रन्थः

वेतालपञ्चविंशतिकथा, अनुवादक, दामोदर झा, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1968

0961CH05

पञ्चमः पाठः

सूक्तिमौक्तिकम्

प्रस्तुतः पाठः नैतिकशिक्षाणां प्रदायकरूपेण विन्यस्तोवर्तते। अस्मिन् पाठे विविधग्रन्थेभ्यः नानानैतिकशिक्षाप्रदानिपद्यानि सं गृहीतानि सन्ति। अत्र सदाचरणस्य महिमा, प्रियवाण्याः आवश्यकता, परोपकारिणां स्वभावः, गुणार्जनस्य प्रेरणा, मित्रतायाः स्वरूपम्, श्रेष्ठसङ्गतेः प्रशंसा तथा च सत्सङ्गतेः प्रभावः इत्यादीनां विषयाणां निरूपणम् अस्ति। संस्कृतसाहित्ये नीतिग्रन्थानां समृद्धा परम्परा दृश्यते। तत्र प्रतिपादितशिक्षाणाम् अनुपालनं कृत्वा वयं स्व जीवनसफली कर्तुं शक्नुमः।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः॥1॥

–मनुस्मृतिः

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥2॥

–विदुरनीतिः

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥3॥

–चाणक्यनीतिः

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहः
परोपकाराय सतां विभूतयः॥4॥

–सुभाषितरत्नभाण्डागारम्

गुणेष्वेव हि कर्तव्यः प्रयत्नः पुरुषैः सदा।
गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि नेश्वरैरगुणैः समः।।5।।

–मृच्छकटिकम्

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।।6।।

–नीतिशतकम्

यत्रापि कुत्रापि गता भवेयु–
र्हंसा महीमण्डलमण्डनाय।
हानिस्तु तेषां हि सरोवराणां
येषां मरालैः सह विप्रयोगः।।7।।

–भामिनीविलासः

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।।8।।

–हितोपदेशः

शब्दार्थाः

वित्तम्	धनम्	धन, ऐश्वर्य	Money
वृत्तम्	आचरणम्	आचरण, चरित्र	Conduct
अक्षीणः	न क्षीणः, सम्पन्नः	नष्ट न हुआ	Not exhasted
धर्मसर्वस्वम्	कर्तव्यसारः	धर्म (कर्तव्यबोध) का सब कुछ	Gist of righteous ness
प्रतिकूलानि	विपरीतानि	अनुकूल नहीं	Aversive
तुष्यन्ति	तोषम् अनुभवन्ति	सन्तुष्ट होते हैं	Become satatisfied

वक्तव्यम्	कथनीयम्	कहना चाहिए	Worth saying
वारिवाहाः	मेघाः	जल वहन करने वाले बादल	Clouds
विभूतयः	समृद्धयः	सम्पत्तियाँ	Riches
गुणयुक्तः	गुणवान्, गुणसम्पन्नः	गुणों से युक्त	Meritorious
अगुणैः	गुणरहितैः	गुणहीनों से	With people without attributes
आरम्भगुर्वी	आदौ दीर्घा	आरम्भ में लम्बी	Bigger in the beginning
क्षयिणी	क्षयशीला	घटती स्वभाव वाली	Reducing
वृद्धिमती	वृद्धिम् उपगता	लम्बी होती हुई, लम्बी हुई	Increasing
पूर्वार्द्धपरार्द्ध-भिन्ना	पूर्वार्द्धेन परार्द्धेन च पृथग्भूता	पूर्वाह्ण और अपराह्ण (छाया)की तरह अलग-अलग	Different
खलसज्जनानाम्	दुर्जनसुजनानाम्	दुष्टों और सज्जनों की	Of bad and good people
महीमण्डल-मण्डनाय	पृथिवीमण्डलाल-ङ्करणाय	पृथ्वी को सुशोभित करने के लिए	For emblazoning the earth
मरालैः	हंसैः	हंसों से	With swans
विप्रयोगः	वियोगः	अलग होना	Separation
गुणज्ञेषु	गुणज्ञातृषु जनेषु	गुणों को जानने वालों में	Among connoisseuss
आस्वाद्यतोयाः	स्वादनीयजलसम्पन्नाः	स्वाद्युक्त जल वाली	Filled with tasty water
आसाद्य	प्राप्य	पाकर	Reaching
अपेयाः	न पेयाः, न पानयोग्याः	न पीने योग्य	Undrinkable

अन्वयः-

1. वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तम् एति च याति च।
   वित्ततः क्षीणः अक्षीणः (भवति) वृत्ततः (क्षीणः) तु हतः हतः।।
2. धर्मसर्वस्वं श्रूयतां श्रुत्वा च एव अवधार्यताम् आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

3. सर्वे जन्तवः प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति। तस्मात् तत् एव वक्तव्यम् वचने दरिद्रता का?
4. नद्यः स्वयम् एव अम्भः न पिबन्ति, वृक्षाः स्वयं फलानि न खादन्ति। वारिवाहाः खलु सस्यं न अदन्ति, सतां विभूतयः परोपकाराय (एव भवन्ति)।।
5. पुरुषैः सदा गुणेषु एव हि प्रयत्नः कर्तव्यः। गुणयुक्तः दरिद्रः अपि अगुणैः ईश्वरैः समः न (न भवति)।।
6. आरम्भगुर्वी (भवति) क्रमेण क्षयिणी (भवति), पुरा लघ्वी (भवति) पश्चात् च वृद्धिमती (भवति) दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्ध-छाया इव खलसज्जनानां मैत्री भिन्ना (भवति)।।
7. हंसाः यत्र अपि कुत्र अपि महीमण्डलमण्डनाय गताः भवेयुः। हानिः तु तेषां सरोवराणां हि (भवति) येषां (सरोवराणाम्) मरालैः सह विप्रयोगः भवति।।
8. गुणज्ञेषु गुणाः गुणाः भवन्ति, ते (गुणाः) निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति। आस्वाद्यतोयाः नद्यः प्रवहन्ति, (ताः एव नद्यः) समुद्रम् आसाद्य अपेयाः भवन्ति।।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) वित्ततः क्षीणः कीदृशः भवति?
(ख) कस्य प्रतिकूलानि कार्याणि परेषां न समाचरेत्?
(ग) कुत्र दरिद्रता न भवेत्?
(घ) वृक्षाः स्वयं कानि न खादन्ति?
(ङ) का पुरा लघ्वी भवति?

2. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) यत्नेन किं रक्षेत् वित्तं वृत्तं वा?
(ख) अस्माभिः (किं न समाचरेत्) कीदृशम् आचरणं न कर्त्तव्यम्?
(ग) जन्तवः केन तुष्यन्ति?
(घ) सज्जनानां मैत्री कीदृशी भवति?
(ङ) सरोवराणां हानिः कदा भवति?

3. 'क' स्तम्भे विशेषणानि 'ख' स्तम्भे च विशेष्याणि दत्तानि, तानि यथोचितं योजयत-

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(क) आस्वाद्यतोयाः	(1) खलानां मैत्री
(ख) गुणयुक्तः	(2) सज्जनानां मैत्री
(ग) दिनस्य पूर्वार्द्धभिन्ना	(3) नद्यः
(घ) दिनस्य परार्द्धभिन्ना	(4) दरिद्रः

4. अधोलिखितयोः श्लोकयोः आशयं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत–

(क) आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।।

(ख) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

5. अधोलिखितपदेभ्यः भिन्नप्रकृतिकं पदं चित्वा लिखत–

(क) वक्तव्यम्, कर्तव्यम्, सर्वस्वम्, हन्तव्यम्।
(ख) यत्नेन, वचने, प्रियवाक्यप्रदानेन, मरालेन।
(ग) श्रूयताम्, अवधार्यताम्, धनवताम्, क्षम्यताम्।
(घ) जन्तवः, नद्यः, विभूतयः, परितः।

6. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्नवाक्यनिर्माणं कुरुत–

(क) **वृत्ततः** क्षीणः हतः भवति।
(ख) **धर्मसर्वस्वं** श्रुत्वा अवधार्यताम्।
(ग) **वृक्षाः** फलं न खादन्ति।
(घ) **खलानाम्** मैत्री आरम्भगुर्वी भवति।

7. अधोलिखितानि वाक्यानि लोट्लकारे परिवर्तयत–

यथा– सः पाठं पठति। – सः पाठं पठतु।
(क) नद्यः आस्वाद्यतोयाः सन्ति। – ....
(ख) सः सदैव प्रियवाक्यं वदति। – ....
(ग) त्वं परेषां प्रतिकूलानि न समाचरसि। – ....
(घ) ते वृत्तं यत्नेन संरक्षन्ति।– ....
(ङ) अहं परोपकाराय कार्यं करोमि। – ....

परियोजनाकार्यम्

(क) परोपकारविषयकं श्लोकद्वयम् अन्विष्य स्मृत्वा च कक्षायां सस्वरं पठ।
(ख) नद्याः एकं सुन्दरं चित्रं निर्माय संकलय्य वा वर्णयत यत् तस्याः तीरे मनुष्याः पशवः खगाश्च निर्विघ्नं जलं पिबन्ति।

योग्यताविस्तारः

संस्कृत साहित्य में नीति-ग्रन्थों द्वारा नैतिक शिक्षाएँ दी गई हैं, जिनका उपयोग करके मनुष्य अपने जीवन को सफल और समृद्ध बना सकता है। ऐसे ही बहुमूल्य सुभाषित यहाँ संकलित हैं, जिनमें सदाचरण की महत्ता, प्रियवाणी की आवश्यकता, परोपकारी पुरुष का स्वभाव, गुणार्जन की प्रेरणा,

मित्रता का स्वरूप और उत्तम पुरुष के सम्पर्क से होने वाली शोभा की प्रशंसा और सत्संगति की महिमा आदि विषयों का प्रतिपादन किया गया है।संस्कृत-साहित्य में सारगर्भित, लौकिक, पारलौकिक एवं नैतिकमूल्यों वाले सुभाषितों की बहुलता है जो देखने में छोटे प्रतीत होते हैं किन्तु गम्भीर भाव वाले होते हैं। मानव-जीवन में इनका अतीव महत्त्व है।

भावविस्तारः

(क) **आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।**
खारे समुद्र में मिलने पर स्वादिष्ट जलवाली नदियों का जल अपेय हो जाता है। इसी भावसाम्य के आधार पर कहा गया है कि **"संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति।"**

(ख) **छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।**
दुष्ट व्यक्ति मित्रता करता है और सज्जन व्यक्ति भी मित्रता करता है। परन्तु दोनों की मैत्री, दिन के पूर्वार्द्ध एवं परार्द्ध कालीन छाया की भाँति होती है। वास्तव में दुष्ट व्यक्ति की मैत्री के लिए श्लोक का प्रथम चरण **"आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण"** कहा गया है तथा सज्जन की मैत्री के लिए द्वितीय चरण **'लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्'** कहा गया है।

भाषिकविस्तारः

(1) **वित्ततः** - वित्त शब्द से तसिल् प्रत्यय किया गया है। पंचमी विभक्ति के अर्थ में लगने वाले तसिल् प्रत्यय का तः ही शेष रहता है। उदाहरणार्थ- सागर + तसिल् = सागरतः, प्रयाग + तसिल् = प्रयागतः, देहली + तसिल् = देहलीतः आदि। इसी प्रकार **वृत्ततः** शब्द में भी तसिल् प्रत्यय लगा करके वृत्ततः शब्द बनाया गया है।

(2) **उपसर्ग** - क्रिया के पूर्व जुड़ने वाले प्र, परा आदि शब्दों को उपसर्ग कहा जाता है।
जैसे - 'हृ' धातु से उपसर्गों का योग होने पर निम्नलिखित रूप बनते हैं

प्र + हृ - प्रहरति, प्रहार (हमला करना)
वि + हृ - विहरति, विहार (भ्रमण करना)
उप + हृ - उपहरति, उपहार (भेंट देना)
सम् + हृ - संहरति, संहार (मारना)

(3) शब्दों को स्त्रीलिङ्ग में परिवर्तित करने के लिए स्त्री प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। इन प्रत्ययों में टाप् व ङीप् मुख्य हैं।
जैसे- बाल + टाप् - बाला
अध्यापक + टाप् - अध्यापिका
लघु + ङीप् - लघ्वी
गुरु + ङीप् - गुर्वी

षष्ठः पाठः

भ्रान्तो बालः

प्रस्तुतः पाठः "**संस्कृत-प्रौढपाठावलिः**" इति कथाग्रन्थात् सम्पादनं कृत्वा सङ्गृहीतोऽस्ति। अस्यां कथायाम् एकः तादृशः बालः चित्रितोऽस्ति, यस्य रुचिः स्वाध्यायापेक्षया क्रीडने अधिका भवति। सः सर्वदा क्रीडनार्थमेव अभिलषति परञ्च तस्य सखायः स्वस्व-कर्मणि संलग्नाः भवन्ति। अस्मात् कारणात् ते अनेन सह न क्रीडन्ति। अतः एकाकी सः नैराश्यं प्राप्य विचिन्तयति यत् स एव रिक्तः सन् इतस्ततः भ्रमति। कालान्तरे बोधो भवति यत् सर्वेऽपि स्व-स्वकार्यं कुर्वन्तः सन्ति अतो मयापि तदेव कर्तव्यं येन मम कालः सार्थकः स्यात्।

भ्रान्तः कश्चन बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुम् अगच्छत्। किन्तु तेन सह केलिभिः कालं क्षेप्तुं तदा कोऽपि न वयस्येषु उपलभ्यमान आसीत्। यतः ते सर्वेऽपि पूर्वदिनपाठान् स्मृत्वा विद्यालयगमनाय त्वरमाणाः अभवन्। तन्द्रालुः बालः लज्जया तेषां दृष्टिपथमपि परिहरन् एकाकी किमपि उद्यानं प्राविशत्।

सः अचिन्तयत् – "विरमन्तु एते वराकाः पुस्तकदासाः। अहं तु आत्मानं विनोदयिष्यामि। सम्प्रति विद्यालयं गत्वा भूयः क्रुद्धस्य उपाध्यायस्य मुखं द्रष्टुं नैव इच्छामि। एते निष्कुटवासिनः प्राणिन एव मम वयस्याः सन्तु इति।

अथ सः पुष्पोद्यानं व्रजन्तं मधुकरं दृष्ट्वा तं क्रीडितुम् द्वित्रिवारम् आह्वयत्। तथापि, सः मधुकरः अस्य बालस्य आह्वानं तिरस्कृतवान्। ततो भूयो भूयः हठमाचरति बाले सः मधुकरः अगायत् – "वयं हि मधुसंग्रहव्यग्रा" इति।

तदा स बालः 'अलं भाषणेन अनेन मिथ्यागर्वितेन कीटेन' इति विचिन्त्य अन्यत्र दत्तदृष्टिः चञ्च्वा तृणशलाकादिकम् आददानम् एकं चटकम् अपश्यत्, अवदत् च–"अयि चटकपोत! मानुषस्य मम मित्रं भविष्यसि। एहि क्रीडावः। एतत् शुष्कं तृणं त्यज स्वादून् भक्ष्यकवलान् ते दास्यामि" इति। स तु "मया वटद्रुमस्य शाखायां नीडं कार्यम्" इत्युक्त्वा स्वकर्मव्यग्रः अभवत्।

तदा खिन्नो बालकः एते पक्षिणो मानुषेषु नोपगच्छन्ति। तद् अन्वेषयामि अपरं मानुषोचितम् विनोदयितारम् इति विचिन्त्य पलायमानं कमपि श्वानम् अवलोकयत्। प्रीतो बालः तम् इत्थं समबोधयत् – रे मानुषाणां मित्र! किं पर्यटसि अस्मिन् निदाघदिवसे? इदं प्रच्छायशीतलं तरुमूलम् आश्रयस्व। अहमपि क्रीडासहायं त्वामेवानुरूपं पश्यामीति। कुक्कुरः प्रत्यवदत्–

यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य।
रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि।। इति।
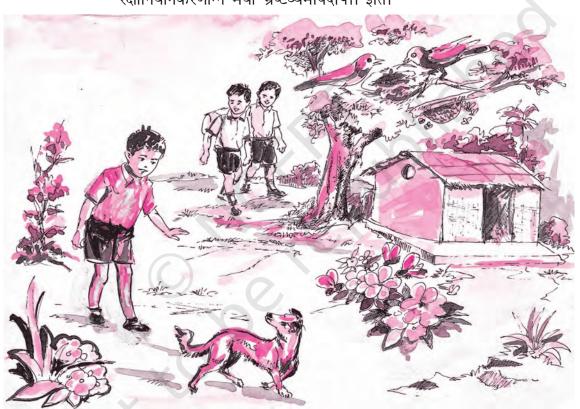
सर्वैः एवं निषिद्धः स बालो भग्नमनोरथः सन्–'कथमस्मिन् जगति प्रत्येकं स्व–स्वकार्ये निमग्नो भवति। न कोऽपि अहमिव वृथा कालक्षेपं सहते। नम एतेभ्यः यैः मे तन्द्रालुतायां कुत्सा समापादिता। अथ स्वोचितम् अहमपि करोमि इति विचार्य त्वरितं पाठशालाम् अगच्छत्।

ततः प्रभृति स विद्याव्यसनी भूत्वा महतीं वैदुषीं प्रथां सम्पदं च अलभत।

शब्दार्थाः

भ्रान्तः	भ्रमयुक्तः	भ्रमित	Confused
क्रीडितुम्	खेलितुम्	खेलने के लिए	To play
केलिभिः	क्रीडाभिः	खेल द्वारा	By plays
कालं क्षेप्तुम्	समयं यापयितुम्	समय बिताने के लिए	To pass the time
त्वरमाणाः	त्वरां कुर्वन्तः, त्वरयन्तः	शीघ्रता करते हुए	Hasteful
तन्द्रालुः	अलसः, अक्रियः	आलसी	Lazy
दृष्टिपथम्	दृष्टिमार्गम्	निगाह में	In vision
पुस्तकदासाः	पुस्तकानां दासाः	पुस्तकों के गुलाम	Slaves of books
उपाध्यायस्य	आचार्यस्य	गुरू के	Of the teacher
निष्कुटवासिनः	वृक्षकोटरनिवासिनः	वृक्ष के कोटर में रहने वाले	Residents of the tree hollow
आह्वानम्	आमन्त्रणम्	बुलावा	Calling
हठमाचरति	आग्रहपूर्वकं व्यवहारं कुर्वति सति	हठ करने पर	On showing stubbornness
मधुसंग्रहव्यग्राः	पुष्परससंकलनतत्पराः	पुष्प के रस के संग्रह में लगे हुए	Busy in collect-ing honey
भूयो भूयः	पुनः पुनः	बार-बार	Again and again
मिथ्यागर्वितेन	व्यर्थाहङ्कारयुक्तेन	झूठे गर्व वाले	With false pride
चटकम्	पक्षी	चिड़िया	Sparrow
चञ्च्वा	चञ्चुपुटेन	चोंच से	By beak
आददानम्	गृह्णन्तम्	ग्रहण करते हुए को	The collecting
स्वादूनि	स्वादिष्टानि	स्वादयुक्त	Tasty
भक्ष्यकवलानि	भक्षणीयग्रासाः	खाने के लिए उपयुक्त कौर	Eatable

स्वकर्मव्यग्रः	स्वकीयकार्येषु तत्परः	अपने कार्यों में संलग्न	Busy in own duty
अन्वेषयामि	अन्वेषणं करोमि	खोजता हूँ	I search
विनोदयितारम्	मनोरञ्जनकारिणम्	मनोरंजन करने वाले को	The amusive
पलायमानम्	धावन्तम्	भागते हुए	Running
अवलोकयत्	अपश्यत्	देखा	(He/She) saw
समबोधयत्	संबोधितवान्	संबोधित किया	(He/She) addressed
निदाघदिवसे	ग्रीष्मदिने	गर्मी के दिन में	On a summer day
अनुरूपम्	योग्यम्	उपयुक्त	Apprepriate
कुक्कुरः	श्वा	कुत्ता	Dog
रक्षानियोगकरणात्	सुरक्षाकार्यवशात्	रक्षा के कार्य में लगे होने से	Due the involvment in guarding
भ्रष्टव्यम्	पतितव्यम्	हटना चाहिए	Should be distracted
ईषदपि	अल्पमात्रम् अपि	थोड़ा-सा भी	Even a little bit
निषिद्धः	अस्वीकृतः	मना किया गया	Clandestine
भग्नमनोरथः	खण्डितकामः	टूटी इच्छाओं वाला	With broken desires
कालक्षेपम्	समयस्य यापनम्	समय बिताना	To pass the time
तन्द्रालुतायाम्	तन्द्रालुजनस्य भावे, अलसत्वे	आलस्य में	In laziness
कुत्सा	घृणा, भर्त्सना	घृणाभाव	Distaste
विद्याव्यसनी	अध्ययनरतः	विद्या में रत रहने वाला	Studious
प्रथाम्	प्रसिद्धिम्	ख्याति, प्रसिद्धि	Fame

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   (क) कः तन्द्रालुः भवति?
   (ख) बालकः कुत्र व्रजन्तं मधुकरम् अपश्यत्?
   (ग) के मधुसंग्रहव्यग्राः अभवन्?
   (घ) चटकः कया तृणशलाकादिकम् आददाति?
   (ङ) चटकः कस्य शाखायां नीडं रचयति?
   (च) बालकः कीदृशं श्वानं पश्यति?
   (छ) श्वा कीदृशे दिवसे पर्यटति।
2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   (क) बालः कदा क्रीडितुम् अगच्छत्?
   (ख) बालस्य मित्राणि किमर्थं त्वरमाणा अभवन्?
   (ग) मधुकरः बालकस्य आह्वानं केन कारणेन तिरस्कृतवान्?
   (घ) बालकः कीदृशं चटकम् अपश्यत्?
   (ङ) बालकः चटकाय क्रीडनार्थं कीदृशं लोभं दत्तवान्?
   (च) खिन्नः बालकः श्वानं किम् अकथयत्?
   (छ) भग्नमनोरथः बालः किम् अचिन्तयत्?
3. **निम्नलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत–**
   यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य।
   रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि॥
4. **"भ्रान्तो बालः" इति कथायाः सारांशं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत।**
5. **स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –**
   (क) **स्वादून्** भक्ष्यकवलान् ते दास्यामि।
   (ख) चटकः **स्वकर्मणि** व्यग्रः आसीत्।
   (ग) कुक्कुरः **मानुषाणां** मित्रम् अस्ति।
   (घ) स **महतीं** वैदुषीं लब्धवान्।
   (ङ) **रक्षानियोगकरणात्** मया न भ्रष्टव्यम् इति।

6. **"एतेभ्यः नमः" - इति उदाहरणमनुसृत्य नमः इत्यस्य योगे चतुर्थी विभक्तेः प्रयोगं कृत्वा पञ्चवाक्यानि रचयत।**

7. **'क' स्तम्भे समस्तपदानि 'ख' स्तम्भे च तेषां विग्रहवाक्यानि दत्तानि, तानि यथासमक्षं लिखत-**

'क' स्तम्भ	**'ख' स्तम्भ**
(क) दृष्टिपथम्	(1) पुष्पाणाम् उद्यानम्
(ख) पुस्तकदासाः	(2) विद्यायाः व्यसनी
(ग) विद्याव्यसनी	(3) दृष्टेः पन्थाः
(घ) पुष्पोद्यानम्	(4) पुस्तकानां दासाः

(अ) अधोलिखितेषु पदयुग्मेषु एकं विशेष्यपदम् अपरञ्च विशेषणपदम्। विशेषणपदम् विशेष्यपदं च पृथक्-पृथक् चित्वा लिखत-

		विशेषणम्	**विशेष्यम्**
(क) खिन्नः बालः	–	....	....
(ख) पलायमानं श्वानम्	–	....	....
(ग) प्रीतः बालकः	–	....	....
(घ) स्वादून् भक्ष्यकवलान्	–	....	....
(ङ) त्वरमाणाः वयस्याः	–	....	....

परियोजनाकार्यम्

(क) एकस्मिन् स्फोरकपत्रे (chart-paper) एकस्य उद्यानस्य चित्रं निर्माय संकलय्य वा पञ्चवाक्येषु तस्य वर्णनं कुरुत।

(ख) "परिश्रमस्य महत्त्वम्" इति विषये हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा पञ्चवाक्यानि लिखत।

प्रस्तुत पाठ **'संस्कृत प्रौढपाठावलिः'** नामक ग्रन्थ से सम्पादित कर लिया गया है। इस कथा में एक ऐसे बालक का चित्रण है, जिसका मन अध्ययन की अपेक्षा खेल–कूद में लगा रहता है। यहाँ तक कि वह खेलने के लिए पशु–पक्षियों तक का आवाहन (आह्वान) करता है किन्तु कोई उसके साथ

खेलने के लिए तैयार नहीं होता। इससे वह बहुत निराश होता है। अन्ततः उसे बोध होता है कि सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं। केवल वही बिना किसी काम के इधर-उधर घूमता रहता है। वह निश्चय करता है कि अब व्यर्थ में समय गँवाना छोड़कर वह अपना कार्य करेगा।

(1) **यस्य च भावेन भावलक्षणम्**-जहाँ एक क्रिया के होने से दूसरी क्रिया के होने का ज्ञान हो तो पहली क्रिया के कर्त्ता में सप्तमी विभक्ति होती है। इसे 'सति सप्तमी' या 'भावे सप्तमी' भी कहते हैं।

यथा- **उदिते सवितरि** कमलं विकसति।

गर्जति मेघे मयूरः अनृत्यत्।

नृत्यति शिवे नृत्यन्ति शिवगणाः।

हठमाचरति बाले भ्रमरः अगायत्।

उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।

(2) **अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः**-जिस समास में पूर्व और उत्तर पदों से भिन्न किसी अन्य पद के अर्थ का प्राधान्य होता है वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

यथा- **पीताम्बरः** - पीतम् अम्बरं यस्य सः (विष्णुः)।

नीलकण्ठः - नीलः कण्ठः यस्य सः (शिवः)।

अनुचिन्तितपूर्वदिनपाठाः - अनुचिन्तिताः पूर्वदिनस्य पाठाः यैः ते।

विघ्नितमनोरथः - विघ्नितः मनोरथः यस्य सः।

दत्तदृष्टिः - दत्ता दृष्टिः येन सः।

सप्तमः पाठः

प्रत्यभिज्ञानम्

प्रस्तुतोऽयं पाठः महाकविभासप्रणीतत् **"पञ्चरात्रम्"** इति नाटकात् सम्पाद्य सङ्गृहीतोऽस्ति। अत्र नाटकांशे दुर्योधनादिना राज्ञः विराटस्य गावः अपहृताः, तासाम् उन्मोचनार्थम् विराटपुत्रः उत्तरः, अस्य सारथिरूपेण बृहन्नलावेषधारी अर्जुनश्च उभावपि गतवन्तौ। तत्पक्षतः भीष्मादिना सह अर्जुनपुत्रः अभिमन्युरपि युद्धं कृतवान्, युद्धे कौरवाणां पराजयः अभवत्। अस्मिन्नेव क्षणे राजभवने सूचना सम्प्राप्ता यद् वल्लभ इति वेषधारिणा भीमेन रणभूमौ अभिमन्युः आबद्धः। गृहीतः अभिमन्युः अर्जुनभीमौ न प्रत्यभिजानाति, तेन स उभाभ्यां सह सरोषं वार्तालापं करोति। ततः उभौ अभिमन्युं राजसभायां नयतः, तत्र उपस्थितः राजकुमारः उत्तरः उभयोः रहस्यं बोधयति। अनेन छद्मवेषधारिणां पाण्डवानाम् अभिज्ञानं भवति।

भटः – जयतु महाराजः!

राजा – अपूर्व इव ते हर्षो ब्रूहि,
केनासि विस्मितः?

भटः – अश्रद्धेयं प्रियं प्राप्तं
सौभद्रो ग्रहणं गतः॥

राजा – कथमिदानीं गृहीतः?

भटः – रथमासाद्य निश्शङ्कं
बाहुभ्यामवतारितः।

राजा – केन?

भटः – यः किल एष नरेन्द्रेण विनियुक्तो महानसे। (अभिमन्युमुद्दिश्य) इत इतः कुमारः।

अभिमन्युः – भोः को नु खल्वेषः? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः।

अभिमन्युः – अये! अयमपरः कः विभात्युमावेषमिवाश्रितो हरः।

बृहन्नला – आर्य, अभिभाषणकौतूहलं मे महत्। वाचालयत्वेनमार्यः।

वल्लभः – (*अपवार्य*) बाढम् (*प्रकाशम्*) अभिमन्यो!

अभिमन्युः – अभिमन्युर्नाम?

वल्लभः – रुष्यत्येष मया, त्वमेवैनमभिभाषय।

बृहन्नला – अभिमन्यो!

अभिमन्युः – कथं कथम्। अभिमन्युर्नामाहम्। भोः! किमत्र विराटनगरे क्षत्रियवंशोद्भूताः नीचैः अपि नामभिः अभिभाष्यन्ते अथवा अहं शत्रुवशं गतः। अत एव तिरस्क्रियते।

बृहन्नला – अभिमन्यो! सुखमास्ते ते जननी?

अभिमन्युः – कथं कथम्? जननी नाम? किं भवान् मे पिता अथवा पितृव्यः? कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छति?

बृहन्नला – अभिमन्यो! अपि कुशली देवकीपुत्रः केशवः?

अभिमन्युः – कथं कथम्? तत्र भवन्तमपि नाम्ना। अथ किम् अथ किम्?
(*बृहन्नलावल्लभौ परस्परमवलोकयतः*)

अभिमन्युः – कथमिदानीं सावज्ञमिव मां हस्यते?

बृहन्नला – न खलु किञ्चित्।
पार्थं पितरमुद्दिश्य मातुलं च जनार्दनम्।
तरुणस्य कृतास्त्रस्य युक्तो युद्धपराजयः।।

अभिमन्युः – अलं स्वच्छन्दप्रलापेन! अस्माकं कुले आत्मस्तवं कर्तुमनुचितम्। रणभूमौ हतेषु शरान् पश्य, मदृते अन्यत् नाम न भविष्यति।

बृहन्नला – एवं वाक्यशौण्डीर्यम्। किमर्थं तेन पदातिना गृहीतः?

अभिमन्युः – अशस्त्रं मामभिगतः। पितरम् अर्जुनं स्मरन् अहं कथं हन्याम्। अशस्त्रेषु मादृशाः न प्रहरन्ति। अतः अशस्त्रोऽयं मां वञ्चयित्वा गृहीतवान्।

राजा – त्वर्यतां त्वर्यतामभिमन्युः।

बृहन्नला – इत इतः कुमारः। एष महाराजः। उपसर्पतु कुमारः।

अभिमन्युः – आः। कस्य महाराजः?

राजा – एह्येहि पुत्र! कथं न मामभिवादयसि? (*आत्मगतम्*) अहो! उत्सिक्तः खल्वयं क्षत्रियकुमारः। अहमस्य दर्पप्रशमनं करोमि। (*प्रकाशम्*) अथ केनायं गृहीतः?

भीमसेनः – महाराज! मया।

अभिमन्युः – अशस्त्रेणेत्यभिधीयताम्।

भीमसेनः – शान्तं पापम्। धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते। मम तु भुजौ एव प्रहरणम्।

अभिमन्युः – मा तावद् भोः! किं भवान् मध्यमः तातः यः तस्य सदृशं वचः वदति।

भगवान् – पुत्र! कोऽयं मध्यमो नाम?

अभिमन्युः – योक्त्रयित्वा जरासन्धं कण्ठश्लिष्टेन बाहुना।
असह्यं कर्म तत् कृत्वा नीतः कृष्णोऽतदर्हताम्।।

राजा – न ते क्षेपेण रुष्यामि, रुष्यता भवता रमे।
किमुक्त्वा नापराद्धोऽहं, कथं तिष्ठति यात्विति।।

अभिमन्युः – यद्यहमनुग्राह्यः –
पादयोः समुदाचारः क्रियतां निग्रहोचितः।
बाहुभ्यामाहृतं भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति।।
(*ततः प्रविशत्युत्तरः*)

उत्तरः – तात! अभिवादये!

राजा – आयुष्मान् भव पुत्र। पूजिताः कृतकर्माणो योधपुरुषाः।

उत्तरः – पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा।

राजा – पुत्र! कस्मै?

उत्तरः – इहात्रभवते धनञ्जयाय।

राजा – कथं धनञ्जयायेति?

उत्तरः – अथ किम्
श्मशानाद्धनुरादाय तूणीराक्षयसायके।
नृपा भीष्मादयो भग्ना वयं च परिरक्षिताः।।

राजा – एवमेतत्।

उत्तरः – व्यपनयतु भवाञ्छङ्काम्। अयमेव अस्ति धनुर्धरः धनञ्जयः।

बृहन्नला – यद्यहं अर्जुनः तर्हि अयं भीमसेनः अयं च राजा युधिष्ठिरः।

अभिमन्युः – इहात्रभवन्तो मे पितरः। तेन खलु ...

न रुष्यन्ति मया क्षिप्ता हसन्तश्च क्षिपन्ति माम्।
दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं पितरो येन दर्शिताः।।

(इति क्रमेण सर्वान् प्रणमति, सर्वे च तम् आलिङ्गन्ति।)

शब्दार्थाः

प्रत्यभिज्ञानम्	पुनः ज्ञानम्, संस्कार-जन्यं ज्ञानम्, पुनः स्मृतिः	पहचान	Identity
अपूर्वः	अविद्यमानपूर्वः	जो पहले न हुआ हो	Strange
अश्रद्धेयम्	न श्रद्धेयम्	श्रद्धा के अयोग्य	Unbelivable
सौभद्रः	सुभद्रायाः पुत्रः, अभिमन्युः	अभिमन्यु	Son of subhadra
आसाद्य	प्राप्य	पाकर, पहुँचकर	Reaching
निश्शङ्कम्	शङ्कया रहितम्	बिना किसी हिचक के	Unhesitating
भुजैकनियन्त्रितः	एकेन एव बाहुना संयतः	एक ही हाथ से पकड़ा गया	Held by
विभाति	शोभते	सुशोभित होता है	Magnifies
कौतूहलम्	जिज्ञासा	जानने की उत्कण्ठा	Quriosity
अपवार्य	दूरीकृत्य	हटाकर	Getting aside
रुष्यति	क्रुद्धः भवति	क्रोधित होता है	Gets angry
वाचालयतु	वक्तुं प्रेरयतु	बोलने को प्रेरित करें	Make (him/ her) talk
तिरस्क्रियते	उपेक्ष्यते	उपेक्षा की जाती है	Being isalted
पितृव्यः	पितुःभ्राता	चाचा	Uncle
अवलोकयतः	पश्यतः	देखते हैं (द्विवचन)	Both of them see
सावज्ञम्	अपमानेन सहितम्	उपेक्षा करते हुए	With inattention
वाक्यशौण्डीर्यम्	वाचिकं वीरत्वम्	वाणी की वीरता	Braveness in speech
पदातिः	पादाभ्याम् अतति	पैदल चलने वाला	Waken
उपसर्पतु	समीपं गच्छतु	पास जाओ	Go near
एहि	आगच्छ	आओ	Come
उत्सिक्तः	गर्वोद्धतः, अहङ्कारी	गर्व से युक्त	Proud
दर्प-प्रशमनम्	गर्वस्य शमनम्	घमंड को शान्त करना	Pacifying of pride

गृहीतः	ग्रहणे कृतः	पकड़ा गया	Caught
प्रहरणम्	शस्त्रम्	हथियार	Weapon
योक्त्रयित्वा	बद्ध्वा	बाँधकर	Tying
क्षेपेण	निन्दावचनेन	निन्दा से	By insult
रमे (√ रम्)	प्रीतो भवामि	प्रसन्न होता हूँ	I am happy
यातु	गच्छतु	जाओ	(He/she) may go
समुदाचारः	शिष्टाचारः	सभ्य आचरण	Mannerliness
अनुग्राह्यः	अनुग्रहस्य योग्यम्	कृपा के योग्य	Worth obliging
निग्रहोचितम्	बन्धनोचित	कैद के लिए उचित	Fit for arresting
तूणीर	बाणकोशः	तरकस	Quiver
व्यपनयतु	दूरीकरोतु	दूर करें	(He/she) may remove
क्षिप्ताः	व्यङ्ग्येन सम्बोधिताः	आक्षेप किये जाने पर	Reprobated
दिष्ट्या	भाग्येन	भाग्य से	Fortunately
गोग्रहणम्	धेनूनाम् अपहरणम्	गायों का अपहरण	Stealing of cows
स्वन्तम् (सु + अन्तम्)	सुखान्तम्	सुखान्त	Comedy

अन्वयः

1. पितरं पार्थं मातुलं जनार्दनं च उद्दिश्य कृतास्त्रस्य तरुणस्य युद्धपराजयः युक्तः।
2. कण्ठश्लिष्टेन बाहुना जरासन्धं योक्त्रयित्वा तत् असह्यं कर्म कृत्वा कृष्णः (भीमेन) अतदर्हतां नीतः।
3. रुष्यता भवता रमे ते क्षेपेण न रुष्यामि, किम् उक्त्वा अहं नापराद्धः, कथं (भवान्) तिष्ठति यातु इति।
4. पादयोः निग्रहोचितः समुदाचारः क्रियताम्, बाहुभ्याम् आहतं (माम्) भीमः बाहुभ्याम् एवं नेष्यति।
5. श्मशानात् तूणीराक्षयसायके धनुः आदाय भीष्मादयः नृपाः भग्नाः वयं च परिरक्षिताः।
6. मया क्षिप्ताः (अपि) न रुष्यन्ति, हसन्तः च मां क्षिपन्ति दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं (भवति) येन पितरः दर्शिताः।

पात्रपरिचयः?

भटः - विराटराजस्य सेवकः
राजा - विराटराजः
भगवान् - युधिष्ठिरः
वल्लभः- भीमसेनः
बृहन्नला- अर्जुनः
अभिमन्युः- अर्जुनस्य पुत्रः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) कः उमावेषमिवाश्रितः भवति?
(ख) कस्याः अभिभाषणकौतूहलं महत् भवति?
(ग) अस्माकं कुले किमनुचितम्?
(घ) कः दर्पप्रशमनं कर्तुमिच्छति?
(ङ) कः अशस्त्रः आसीत्?
(च) कया गोग्रहणम् अभवत्?
(छ) कः ग्रहणं गतः आसीत्?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) भटः कस्य ग्रहणम् अकरोत्?
(ख) अभिमन्युः कथं गृहीतः आसीत्?
(ग) कः वल्लभ-बृहन्नलयोः प्रश्नस्य उत्तरं न ददाति?
(घ) अभिमन्युः स्वग्रहणे किमर्थम् आत्मानं वञ्चितम् अनुभवति?
(ङ) कस्मात् कारणात् अभिमन्युः गोग्रहणं सुखान्तं मन्यते?

3. अधोलिखितवाक्येषु प्रकटितभावं चिनुत-

(क) भोः को नु खल्वेषः? येन भुजैकनियन्त्रितो बलाधिकेनापि न पीडितः अस्मि। (विस्मयः, भयम्, जिज्ञासा)
(ख) कथं कथं! अभिमन्युर्नामाहम्। (आत्मप्रशंसा, स्वाभिमानः, दैन्यम्)
(ग) कथं मां पितृवदाक्रम्य स्त्रीगतां कथां पृच्छसे? (लज्जा, क्रोधः, प्रसन्नता)
(घ) धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते मम तु भुजौ एव प्रहरणम्। (अन्धविश्वासः, शौर्यम्, उत्साहः)

(ङ) बाहुभ्यामाहृतं भीमः बाहुभ्यामेव नेष्यति। (आत्मविश्वासः, निराशा, वाक्संयमः)
(च) दिष्ट्या गोग्रहणं स्वन्तं पितरो येन दर्शिताः। (क्षमा, हर्षः, धैर्यम्)

4. यथास्थानं रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत-

(क)	खलु + एषः	=	....
(ख)	बल + ... + अपि	=	बलाधिकेनापि
(ग)	विभाति + उमावेषम् + इव + आश्रितः	=	बिभात्युमावेषम्
(घ)	.... + एनम्	=	वाचालयत्वेनम्
(ङ)	रुष्यति + एष	=	रुष्यत्येष
(च)	त्वमेव + एनम्	=	....
(छ)	यातु + ...	=	यात्विति
(ज)	.... + इति	=	धनञ्जयायेति

5. अधोलिखितानि वचनानि कः कं प्रति कथयति-

		कः	कं प्रति
यथा -	आर्य, अभिभाषणकौतूहलं मे महत्	बृहन्नला	भीमसेनम्
(क)	कथमिदानीं सावज्ञमिव मां हस्यते	....	....
(ख)	अशस्त्रेणेत्यभिधीयताम्	....	....
(ग)	पूज्यतमस्य क्रियतां पूजा	....	....
(घ)	पुत्र! कोऽयं मध्यमो नाम	....	....
(ङ)	शान्तं पापम्! धनुस्तु दुर्बलैः एव गृह्यते	....	....

6. अधोलिखितानि स्थूलानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि-

(क) वाचालयतु **एनम्** आर्यः।
(ख) किमर्थं **तेन** पदातिना गृहीतः।
(ग) कथं न **माम्** अभिवादयसि।
(घ) **मम** तु भुजौ एव प्रहरणम्।
(ङ) अपूर्व इव अत्र **ते** हर्षो ब्रूहि केन विस्मितः असि?

7. श्लोकानाम् अपूर्णः अन्वयः अधोदत्तः। पाठमाधृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) पार्थं पितरं मातुलं .... च उद्दिश्य कृतास्त्रस्य तरुणस्य .... युक्तः।

(ख) कण्ठश्लिष्टेन .... जरासन्धं योक्त्रयित्वा तत् असह्यं .... कृत्वा (भीमेन) कृष्णः अतदर्हतां नीतः।

(ग) रुष्यता .... रमे। ते क्षेपेण न रुष्यामि, किं .... अहं नापराद्धः, कथं (भवान्) तिष्ठति, यातु इति।

(घ) पादयोः निग्रहोचितः समुदाचारः .... । बाहुभ्याम् आहृतम् (माम्) .... बाहुभ्याम् एव नेष्यति।

(अ) अधोलिखितेभ्यः पदेभ्यः उपसर्गान् विचित्य लिखत–

	पदानि		**उपसर्गः**
	यथा–आसाद्य		**आ**
(क)	अवतारितः	–	....
(ख)	विभाति	–	....
(ग)	अभिभाषय	–	....
(घ)	उद्भूताः	–	....
(ङ)	उत्सिक्तः	–	....
(च)	प्रहरन्ति	–	....
(छ)	उपसर्पतु	–	....
(ज)	परिरक्षिताः	–	....
(झ)	प्रणमति	–	....

योग्यताविस्तारः

प्रस्तुत पाठ भासरचित **'पञ्चरात्रम्'** नामक नाटक से सम्पादित कर, लिया गया है। दुर्योधन आदि कौरव वीरों ने राजा विराट की गायों का अपहरण कर लिया। विराट-पुत्र उत्तर बृहन्नला (छद्मवेषी अर्जुन) को सारथी बनाकर कौरवों से युद्ध करने जाता है। कौरवों की ओर से अभिमन्यु (अर्जुन-पुत्र) भी युद्ध करता है। युद्ध में कौरवों की पराजय होती है। इसी बीच विराट को सूचना मिलती है, वल्लभ (छद्मवेषी भीम) ने रणभूमि में अभिमन्यु को पकड़ लिया है। अभिमन्यु भीम तथा अर्जुन को नहीं पहचान पाता और उनसे उग्रतापूर्वक बातचीत करता है। दोनों अभिमन्यु को महाराज विराट के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। वहीं भगवान नाम से कहे जाने वाले पाण्डवाग्रज युधिष्ठिर भी उपस्थित हैं। अभिमन्यु उन्हें प्रणाम नहीं करता। उसी समय राजकुमार उत्तर वहाँ पहुँचता है, जिसके रहस्योद्घाटन से अर्जुन तथा भीम आदि पाण्डवों के छद्मवेष का उद्घाटन हो जाता है।

कवि परिचय

संस्कृत नाटककारों में "महाकवि भास" का नाम अग्रगण्य है। भास रचित तेरह रूपक निम्नलिखित हैं–

दूतवाक्यम्, कर्णभारम्, दूतघटोत्कचम्, उरुभङ्गम्, मध्यमव्यायोगः, पञ्चरात्रम्, अभिषेकनाटकम्, बालचरितम्, अविमारकम्, प्रतिमानाटकम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, स्वप्नवासवदत्तम् तथा चारुदत्तम्।

ग्रन्थ परिचय

पञ्चरात्रम् की कथावस्तु महाभारत के विराट पर्व पर आधारित है। पाण्डवों के अज्ञातवास के समय दुर्योधन एक यज्ञ करता है और यज्ञ की समाप्ति पर आचार्य द्रोण को गुरुदक्षिणा देना चाहता है। द्रोण गुरुदक्षिणा के रूप में पाण्डवों का राज्याधिकार चाहते हैं। दुर्योधन कहता है कि यदि गुरु द्रोणाचार्य पाँच रातों में पाण्डवों का पता लगा दें तो उनकी पैतृक सम्पत्ति का भाग उन्हें दिया जा सकता है। इसी आधार पर इस नाटक का नाम 'पञ्चरात्रम्' है।

भावविस्तारः

तरुणस्य कृतास्त्रस्य युक्तो युद्धपराजयः

अज्ञातवास में बृहन्नला के रूप में अर्जुन को बहुत समय के बाद पुत्र-मिलन का अवसर प्राप्त हुआ। वह अपने पुत्र से बात करना चाहता है परन्तु (अपने अपहरण से) क्षुब्ध अभिमन्यु उनके साथ बात करना ही नहीं चाहता। तब अर्जुन उसे उत्तेजित करने की भावना से इस प्रकार के व्यङ्ग्यात्मक वचन कहते हैं–

तुम्हारे पिता अर्जुन हैं, मामा श्री कृष्ण हैं तथा तुम शस्त्रविद्या से सम्पन्न होने के साथ ही साथ तरुण भी हो, तुम्हारे लिए युद्ध में परास्त होना उचित है।

मम तु भुजौ एव प्रहरणम्

अभिमन्यु क्षुब्ध है कि उसे धोखे से शस्त्रविहीन भीम ने निगृहीत किया है। भीम इसका स्पष्टीकरण करता है कि अस्त्र-शस्त्र तो दुर्बल व्यक्तियों द्वारा ग्रहण किये जाते हैं। मेरी तो भुजा ही मेरा शस्त्र है। अतः मुझे किसी अन्य आयुध की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार का भाव अन्य नाटकों में भी उपलब्ध है, जैसे –

(क) अयं तु दक्षिणो बाहुरायुधं सदृशं मम। (मध्यमव्यायोगः)
(ख) भीमस्यानुकरिष्यामि शस्त्रं बाहुर्भविष्यति। (मृच्छकटिकम्)
(ग) वयमपि च भुजायुद्धप्रधानाः। (अविमारकम्)

नीतः कृष्णोऽतदर्हताम्

श्री कृष्ण ने जरासन्ध के जामाता (दामाद) कंस का वध किया था। इससे क्रुद्ध जरासन्ध ने यदुवंशियों के विनाश की प्रतिज्ञा की थी। इसलिए उसने बार-बार मथुरा पर आक्रमण भी किया था। उसने श्री कृष्ण को कई बार पकड़ा भी परन्तु किसी न किसी प्रकार श्री कृष्ण वहाँ से निकल गये। वस्तुतः उचित अवसर पाकर श्री कृष्ण जरासन्ध को मारना चाहते थे, परन्तु भीम ने जरासन्ध का वध करके उनकी पात्रता स्वयं ले ली। जो कार्य श्री कृष्ण द्वारा करणीय था उसे भीमसेन ने कर दिया और श्री कृष्ण को जरासन्ध के वध का अवसर ही नहीं दिया।
प्रत्यय से बने शब्द विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं।

भाषिकविस्तारः

यथा-	धातु	प्रत्यय	मूल शब्द	पुं.	स्त्री.	नपुं.
	पठ्	क्त	पठित	पठितः	पठिता	पठितम्
	गम्	क्त	गत	गतः	गता	गतम्
	दृश्	क्त	दृष्ट	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्

'क्तवतु' भी भूतकालिक प्रत्यय है। इसका प्रयोग सदैव कर्तृवाच्य में होता है। क्तवतु प्रत्ययान्त शब्द भी तीनों लिङ्गों में होते हैं।

यथा- पठ् + क्तवतु = पठितवत्

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पु.	**प्र. वि.**	पठितवान्	पठितवन्तौ	पठितवन्तः
स्त्री.	**प्र. वि.**	पठितवती	पठितवत्यौ	पठितवत्यः
नपुं.	**प्र. वि.**	पठितवत्	पठितवती	पठितवन्ति

वाच्यपरिवर्तनम्

(क)	येन	पितरः	दर्शिताः। (कर्मवाच्य)
	यत्	पितॄन्	दर्शितवत्। (कर्तृवाच्य)
(ख)	भवद्भिः	वयं	परिरक्षिताः। (कर्मवाच्य)
	भवन्तः	अस्मान्	परिरक्षितवन्तः। (कर्तृवाच्य)
(ग)	केन	अयं	गृहीतः? (कर्मवाच्य)
	कः	इमं	गृहीतवान्? (कर्तृवाच्य)

0961CH08

अष्टमः पाठः

लौहतुला

अयं पाठः विष्णुशर्मविरचितस्य **"पञ्चतन्त्रम्"** इति कथाग्रन्थस्य मित्रभेदनामकात् तन्त्रात् सम्पाद्य्यः गृहीतः अंशः अस्ति। अस्यां कथायाम् एकः जीर्णधननामकः वणिक् विदेशात् व्यापारं कृत्वा प्रति निवृत्य न्यासरूपेण प्रदत्तां तुलां धनिकात् प्रति याचते। परञ्च सः धनिकः वदति यत् तस्य तुला तु मूषकैः भक्षिता, ततः सः वणिक् धनिकस्य पुत्रं स्नानार्थं नदीं प्रति नयति, तं तत्र नीत्वा च सः एकस्यां गुहायां गोपितवान्। अथ तस्मिन् प्रत्यावृते तेन सह पुत्रम् अदृष्ट्वा धनिकः पृच्छति मम शिशुः कुत्रास्ति? सः वदति यत् तव पुत्रः श्येनेन अपहृतः। तदा उभौ विवदमानौ न्यायालयं प्रति गतौ, यत्र न्यायाधिकारिणः न्यायं कृतवन्तः।

आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः। स च विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्–

यत्र देशेऽथवा स्थाने भोगा भुक्ताः स्ववीर्यतः।
तस्मिन् विभवहीनो यो वसेत् स पुरुषाधमः।।

तस्य च गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुला आसीत्। तां च कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेपभूतां कृत्वा देशान्तरं प्रस्थितः। ततः सुचिरं कालं देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनः स्वपुरम् आगत्य तं श्रेष्ठिनम् अवदत्–"भोः श्रेष्ठिन्! दीयतां मे सा निक्षेपतुला।" सोऽवदत्–"भोः! नास्ति सा, त्वदीया तुला मूषकैः भक्षिता" इति।

जीर्णधनः अवदत्–"भोः श्रेष्ठिन्! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैः भक्षिता। ईदृशः एव अयं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति। परमहं नद्यां स्नानार्थं गमिष्यामि। तत् त्वम् आत्मीयं एनं शिशुं धनदेवनामानं मया सह स्नानोपकरणहस्तं प्रेषय" इति।

स श्रेष्ठी स्वपुत्रम् अवदत्–"वत्स! पितृव्योऽयं तव, स्नानार्थं यास्यति, तद् अनेन साकं गच्छ" इति।

अथासौ श्रेष्ठिपुत्रः धनदेवः स्नानोपकरणमादाय प्रहृष्टमनाः तेन अभ्यागतेन सह प्रस्थितः। तथानुष्ठिते स वणिक् स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं बृहत्शिलया पिधाय सत्त्वरं गृहमागतः।

सः श्रेष्ठी पृष्टवान्–"भोः! अभ्यागत! कथ्यतां कुत्र मे शिशुः यः त्वया सह नदीं गतः"? इति।

स अवदत्–"तव पुत्रः नदीतटात् श्येनेन हृतः' इति। श्रेष्ठी अवदत् – "मिथ्यावादिन्! किं क्वचित् श्येनो बालं हर्तुं शक्नोति? तत् समर्पय मे सुतम् अन्यथा राजकुले निवेदयिष्यामि।" इति।

सोऽकथयत्–"भोः सत्यवादिन्! यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषका अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति। तदर्पय मे तुलाम्, यदि दारकेण प्रयोजनम्।" इति।

एवं विवदमानौ तौ द्वावपि राजकुलं गतौ। तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण अवदत्–"भोः! वञ्चितोऽहम्! वञ्चितोऽहम्! अब्रह्मण्यम्! अनेन चौरेण मम शिशुः अपहृतः' इति।

अथ धर्माधिकारिणः तम् अवदन् –“भोः! समर्प्यतां श्रेष्ठिसुतः”।

सोऽवदत्–“किं करोमि? पश्यतो मे नदीतटात् श्येनेन शिशुः अपहृतः”। इति।

तच्छ्रुत्वा ते अवदन्–भोः! भवता सत्यं नाभिहितम्–किं श्येनः शिशुं हर्तुं समर्थो भवति?

सोऽवदत्–भोः भोः! श्रूयतां मद्वचः–

तुलां लौहसहस्रस्य यत्र खादन्ति मूषकाः।
राजन्तत्र हरेच्छ्येनो बालकं, नात्र संशयः।।

ते अपृच्छन्–“कथमेतत्”।

ततः स श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं न्यवेदयत्। ततः, न्यायाधिकारिणः विहस्य, तौ द्वावपि सम्बोध्य तुला–शिशुप्रदानेन तोषितवन्तः।

शब्दार्थाः

अधिष्ठाने	स्थाने	स्थान पर	At establishment
विभवक्षयात्	धनाभावात्	धन के अभाव के कारण	Due to loss of weather
स्ववीर्यतः	स्वपराक्रमेण	अपने पराक्रम से	With own effort
लौहघटिता तुला	लौहनिर्मिता तुला	लोहे से बनी हुई तराजू	Iron balance
निक्षेपः	न्यासः	धरोहर	Deposit
भ्रान्त्वा	भ्रमणं कृत्वा (देशाटनं कृत्वा)	पर्यटन करके	After visit
त्वदीया	तव, भवदीया	तुम्हारी	Yours (f)
ईदृशः	एतादृशः	ऐसा ही	Like this
एनम्	एतम्/एनम् च पुंसि द्वितीयैकवचने उभे एव रूपे भवतः।	इसे, एतत् शब्द पुं. द्वि. वि. ए. व. में एतत्/एनम् दोनों ही रूप होते हैं।	This (m)

आत्मीयम्	आत्मसम्बन्धि	अपना	Own
स्नानोपकरणहस्तम्	स्नानसामग्री हस्ते यस्य सः, तम्	स्नान की सामग्री से युक्त हाथ वाला।	Having paraphernalia
समर्पय	देहि	दो	Surrender
विवदमानौ	कलहं कुर्वन्तौ	झगड़ा करते हुए	Both of them
तारस्वरेण	उच्चस्वरेण	जोर से	Loudly
अवदन्	उक्तवन्तः	बोले	(They) said
अभिहितम्	कथितम्	कहा गया	Told
मद्वचः	मम वचनानि	मेरी बातें	My statement
आदितः	प्रारम्भतः	आरम्भ से	From the beginning
न्यवेदयत्	निवेदनमकरोत्	निवेदन किया	(He/she) requested
विहस्य	हसित्वा	हँसकर	Laughing
संबोध्य	बोधयित्वा	समझा बुझाकर	Addressing

1. एकपदेन उत्तरं लिखत–

(क) वणिक्पुत्रस्य किं नाम आसीत्?

(ख) तुला कैः भक्षिता आसीत्?

(ग) तुला कीदृशी आसीत्?

(घ) पुत्रः केन हृतः इति जीर्णधनः वदति?

(ङ) विवदमानौ तौ द्वावपि कुत्र गतौ?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) देशान्तरं गन्तुमिच्छन् वणिक्पुत्रः किं व्यचिन्तयत्?

(ख) स्वतुलां याचमानं जीर्णधनं श्रेष्ठी किम् अकथयत्?

(ग) जीर्णधनः गिरिगुहाद्वारं कया पिधाय गृहमागतः?

(घ) स्नानानन्तरं पुत्रविषये पृष्टः वणिक्पुत्रः श्रेष्ठिनं किम् अवदत्?

(ङ) धर्माधिकारिणः जीर्णधनश्रेष्ठिनौ कथं तोषितवन्तः?

3. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) **जीर्णधनः** विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्।
(ख) श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमादाय **अभ्यागतेन** सह प्रस्थितः।
(ग) वणिक् गिरिगुहां **बृहच्छिलया** आच्छादितवान्।
(घ) सभ्यैः तौ परस्परं संबोध्य **तुला-शिशु-प्रदानेन** सन्तोषितौ।

4. अधोलिखितानां श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः, पाठमाधृत्य तं पूरयत–

(क) यत्र देशे अथवा स्थाने स्ववीर्यतः भोगाः भुक्ता ....।
(ख) राजन्! यत्र लौहसहस्रस्य तुलां मूषकाः खादन्ति ....।

5. तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत यत्र–

(क) ल्यप् प्रत्ययः नास्ति
विहस्य, लौहसहस्रस्य, संबोध्य, आदाय
(ख) यत्र द्वितीया विभक्तिः नास्ति
श्रेष्ठिनम्, स्नानोपकरणम्, सत्त्वरम्, कार्यकारणम्
(ग) यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति
पश्यतः, स्ववीर्यतः, श्रेष्ठिनः सभ्यानाम्

6. सन्धिना सन्धिविच्छेदेन वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) श्रेष्ठ्याह = ... + आह
(ख) .... = द्वौ + अपि
(ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष + ...
(घ) .... = यथा + इच्छया
(ङ) स्नानोपकरणम् = ... + उपकरणम्
(च) .... = स्नान + अर्थम्

7. समस्तपदं विग्रहं वा लिखत–

	विग्रहः		**समस्तपदम्**
(क)	स्नानस्य उपकरणम्	=	....
(ख)	....	=	गिरिगुहायाम्

(ग) धर्मस्य अधिकारी = ...

(घ) .... = विभवहीना:

(अ) यथापेक्षम् अधोलिखितानां शब्दानां सहायतया ''लौहतुला'' इति कथाया: सारांशं संस्कृतभाषया लिखत–

वणिक्पुत्र:	स्नानार्थम्
लौहतुला	अयाचत्
वृत्तान्तं	ज्ञात्वा
श्रेष्ठिनं	प्रत्यागत:
गत:	प्रदानम्

योग्यताविस्तार:

यह पाठ **विष्णुशर्मा** द्वारा रचित **'पञ्चतन्त्रम्'** नामक कथाग्रन्थ के **'मित्रभेद'** नामक तन्त्र से सङ्कलित है। इसमें विदेश से लौटकर जीर्णधन नामक व्यापारी अपनी धरोहर (तराजू) को सेठ से माँगता है। 'तराजू चूहे खा गये हैं' ऐसा सुनकर जीर्णधन उसके पुत्र को स्नान के बहाने नदी तट पर ले जाकर गुफा में छिपा देता है। सेठ द्वारा अपने पुत्र के विषय में पूछने पर जीर्णधन कहता है कि 'पुत्र को बाज उठा ले गया है।' इस प्रकार विवाद करते हुए दोनों न्यायालय पहुँचते हैं जहाँ धर्माधिकारी उन्हें समुचित न्याय प्रदान करते हैं।

ग्रन्थ परिचय

महाकवि **विष्णुशर्मा** (200 ई. से 600 ई. के मध्य) ने राजा अमरशक्ति के पुत्रों को राजनीति में पारंगत करने के उद्देश्य से **'पञ्चतन्त्रम्'** नामक सुप्रसिद्ध कथाग्रन्थ की रचना की थी। यह ग्रन्थ पाँच भागों में विभाजित है। इन्हीं भागों को 'तन्त्र' कहा गया है। पञ्चतन्त्र के पाँच तन्त्र हैं–मित्रभेद:, मित्रसंप्राप्ति:, काकोलूकीयम्, लब्धप्रणाश: और अपरीक्षितकारकम्। इस ग्रन्थ में अत्यन्त सरल शब्दों में लघु कथाएँ दी गयी हैं। इनके माध्यम से ही लेखक ने नीति के गूढ़ तत्त्वों का प्रतिपादन किया है।

भावविस्तार:

'लौहतुला' नामक कथा में दी गयी शिक्षा के सन्दर्भ में इन सूक्तियों को भी देखा जाना चाहिए।

1. न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद् रिपु:।
   व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।।
2. आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

भाषिकविस्तारः

1. **तसिल् प्रत्यय**–पञ्चमी विभिक्त के अर्थ में तसिल् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा– ग्रामात् – ग्रामतः (ग्राम + तसिल्)
आदेः – आदितः (आदि + तसिल्)

यथा– छात्रः **विद्यालयात्** आगच्छति।
छात्रः **विद्यालयतः** आगच्छति।

इसी प्रकार – गृह + तसिल् – गृहतः – गृहात्।
तन्त्र + तसिल् – तन्त्रतः – तन्त्रात्।
प्रथम + तसिल् – प्रथमतः – प्रथमात्।
आरम्भ + तसिल् – आरम्भतः – आरम्भात्।

2. **अभितः परितः उभयतः, सर्वतः, समया, निकषा, 'हा' और प्रति के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।**

यथा– **गृहम्** अभितः वृक्षाः सन्ति।
विद्यालयम् परितः द्रुमाः सन्ति।
ग्रामम् उभयतः नद्यौ प्रवहतः।
हा **दुराचारिणम्**।
क्रीडाक्षेत्रम् निकषा तरणतालम् अस्ति।
बालकः **विद्यालयम्** प्रति गच्छति।
नगरम् समया औषधालयः विद्यते।
ग्रामम् सर्वतः गोचारणभूमिः अस्ति।

0961CH09

नवमः पाठः

सिकतासेतुः

प्रस्तुतः नाट्यांशः सोमदेवविरचितस्य **"कथासरित्सागरः"** इति नाम्नः कथा ग्रन्थस्य सप्तमाध्यायोपरि आधारितोऽस्ति। अस्मिन् नाट्यांशे तपसा विद्यां प्राप्तुं यत्नशीलः कश्चित् तपोदत्तनामकः कुमारः चित्रितः अस्ति। तस्य मार्गदर्शनाय पुरुषवेषधारी देवराजः इन्द्रः तत्र आगतवान्। तत्र आगत्य देवराजः सिकताभिः सेतुनिर्माणार्थं प्रयतते। एतद् दृष्ट्वा तपोदत्तः प्रहसन् वदति किमर्थं भो ! बालुकाभिः जलबन्धं निर्मासि? ततो देवराजः प्रतिवक्ति यद् अध्ययनं श्रवणं पठनं विना यदि त्वं विद्यां प्राप्तुं शक्नोषि तदा अहमपि बालुकाभिः सेतुनिर्माणं कर्तुं शक्नोमि। देवराजस्य अभिप्रायं ज्ञात्वा तपोदत्तः विद्याप्राप्तिकामः गुरुकुलं गतवान्।

(*ततः प्रविशति तपस्यारतः तपोदत्तः*)

तपोदत्तः – अहमस्मि तपोदत्तः। बाल्ये पितृचरणैः क्लेश्यमानोऽपि विद्यां नाऽधीतवानस्मि। तस्मात् सर्वैः कुटुम्बिभिः मित्रैः ज्ञातिजनैश्च गर्हितोऽभवम्।

(*ऊर्ध्वं निःश्वस्य*)

हा विधे! किम् इदं मया कृतम्? कीदृशी दुर्बुद्धिः आसीत् तदा। एतदपि न चिन्तितं यत्–

परिधानैरलङ्कारैर्भूषितोऽपि न शोभते।
नरो निर्मणिभोगीव सभायां यदि वा गृहे।।1।।

(*किञ्चिद् विमृश्य*)

भवतु, किम् एतेन? दिवसे मार्गभ्रान्तः सन्ध्यां यावद् यदि गृहमुपैति तदपि वरम्। नाऽसौ भ्रान्तो मन्यते। अतोऽहम् इदानीं तपश्चर्यया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्मि।

(*जलोच्छलनध्वनिः श्रूयते*)

अये कुतोऽयं कल्लोलोच्छलनध्वनिः? महामत्स्यो मकरो वा भवेत्। पश्यामि तावत्।

(*पुरुषमेकं सिकताभिः सेतुनिर्माण-प्रयासं कुर्वाणं दृष्ट्वा सहासम्*)

हन्त! नास्त्यभावो जगति मूर्खाणाम्! तीव्रप्रवाहायां नद्यां मूढोऽयं सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते!

(*साट्टहासं पार्श्वमुपेत्य*)

भो महाशय! किमिदं विधीयते! अलमलं तव श्रमेण। पश्य,

रामो बबन्ध यं सेतुं शिलाभिर्मकरालये।
विदधद् बालुकाभिस्तं यासि त्वमतिरामताम्।।2।।

चिन्तय तावत्। सिकताभिः क्वचित्सेतुः कर्तुं युज्यते?

पुरुषः – भोस्तपस्विन्! कथं माम् अवरोधं करोषि। प्रयत्नेन किं न सिद्धं भवति? कावश्यकता शिलानाम्? सिकताभिरेव सेतुं करिष्यामि स्वसंकल्पदृढतया।

तपोदत्तः – आश्चर्यम्! किम् सिकताभिरेव सेतुं करिष्यसि? सिकताः जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किम्? भवता चिन्तितं न वा?

पुरुषः – (*सोत्प्रासम्*) चिन्तितं चिन्तितम्। सम्यक् चिन्तितम्। नाहं सोपानसहायतया अधि-रोढुं विश्वसिमि। समुत्प्लुत्यैव गन्तुं क्षमोऽस्मि।

तपोदत्तः – (*सव्यङ्ग्यम्*)
साधु साधु! आञ्जनेयमप्यतिक्रामसि!

पुरुषः – (*सविमर्शम्*)
कोऽत्र सन्देहः? किञ्च,
विना लिप्यक्षरज्ञानं तपोभिरेव केवलम्।
यदि विद्या वशे स्युस्ते, सेतुरेष तथा मम॥3॥

तपोदत्तः – (*सवैलक्ष्यम् आत्मगतम्*)
अये! मामेवोद्दिश्य भद्रपुरुषोऽयम् अधिक्षिपति! नूनं सत्यमत्र पश्यामि। अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषामि! तदियं भगवत्याः शारदाया अवमानना। गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः। पुरुषार्थैरेव लक्ष्यं प्राप्यते।
(*प्रकाशम्*)
भो नरोत्तम! नाऽहं जाने यत् कोऽस्ति भवान्। परन्तु भवद्भिः उन्मीलितं मे नयनयुगलम्। तपोमात्रेण विद्यामवाप्तुं प्रयतमानः अहमपि सिकताभिरेव सेतुनिर्माणप्रयासं करोमि। तदिदानीं विद्याध्ययनाय गुरुकुलमेव गच्छामि।
(*सप्रणामं गच्छति*)

शब्दार्थाः

सिकता	बालुका	रेत	Sand
सेतुः	जलबन्धः	पुल	Bridge
तपस्यारतः	तपः कुर्वन्	तपस्या में लीन	Performing penance
पितृचरणैः	तातपादैः	पिताजी के द्वारा	By father
क्लेश्यमानः	संताप्यमानः	व्याकुल किया जाता हुआ	Troubled
अधीतवान्	अध्ययनं कृतवान्	पढ़ा	(He) Studied
कुटुम्बिभिः	परिवारजनैः	कुटुम्बियों द्वारा	By family members
ज्ञातिजनैः	बन्धुबान्धवैः	बन्धु-बान्धवों द्वारा	By paternel family members
गर्हितः	निन्दितः	अपमानित	Instulted

निःश्वस्य	दीर्घश्वासं त्यक्त्वा	लम्बी साँस छोड़कर	Exhaling
दुर्बुद्धिः	दुर्मतिः	दुष्ट बुद्धिवाला	Foolishness
परिधानैः	वस्त्रैः	कपड़ों से, पहनावों से	By dress
मार्गभ्रान्तः	पथभ्रष्टः	राह से भटका हुआ	Astray
उपैति	प्राप्नोति, समीपं गच्छति	जाता है, समीप जाता है	(He/she) goes near
तपश्चर्यया	तपसा	तपस्या के द्वारा	By performing penance
जलोच्छलनध्वनिः	जलोर्ध्वगतेः शब्दः	पानी के उछलने की आवाज	Sound of water
कल्लोलोच्छलनः- ध्वनिः	तरङ्गोच्छलनस्य शब्दः	तरंगों के उछलने की ध्वनि	Sound of splash of tides
कुर्वाणम्	कुर्वन्तम्	करते हुए	Performing
सहासम्	हासपूर्वकम्	हँसते हुए	Laughingly
सोत्प्रासम्	उपहासपूर्वकम्	खिल्ली उड़ाते हुए, चुटकी लेते हुए	Ridiculing
साट्टहासम्	अट्टहासपूर्वकम्	जोर से हँसकर	With a loud laughter
अट्टम्	अट्टालिकाम्	अटारी को	High building
अधिरोढुम्	उपरि गन्तुम्	चढ़ने के लिए	For going up
आञ्जनेयम्	हनुमन्तम्	अञ्जनिपुत्र हनुमान् को	To son of Anjani (Hanuman)
सविमर्शम्	विचारसहितम्	सोच-विचार कर	With thought
सवैलक्ष्यम्	सलज्जम्	लज्जापूर्वक	With shyness
वैदुष्यम्	पाण्डित्यम्	विद्वत्ता	Esudition
उन्मीलितम्	उद्घाटितम्	खोल दी	Opened (n.)

अन्वयः

निर्मणिभोगीव नरः सभायां यदि वा गृहे परिधानैः अलङ्कारैः भूषितः अपि (विद्यां विना) न शोभते।।1।।

रामः मकरालये यं सेतुं शिलाभिः बबन्ध, तं बालुकाभिः विदधत् त्वम् अतिरामतां यासि।।2।।

यदि विद्या लिप्यक्षरज्ञानं विना केवलं तपोभिः एव ते वशे स्युः तथा एषः सेतुः मम (स्यात्)।।3।।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) कः बाल्ये विद्यां न अधीतवान्?
(ख) तपोदत्तः कया विद्याम् अवाप्तुं प्रवृत्तः अस्ति?
(ग) मकरालये कः शिलाभिः सेतुं बबन्ध?
(घ) मार्गभ्रान्तः सन्ध्यां कुत्र उपैति?
(ङ) पुरुषः सिकताभिः किं करोति?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) अनधीतः तपोदत्तः कैः गर्हितोऽभवत्?
(ख) तपोदत्तः केन प्रकारेण विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽभवत्?
(ग) तपोदत्तः पुरुषस्य कां चेष्टां दृष्ट्वा अहसत्?
(घ) तपोमात्रेण विद्यां प्राप्तुं तस्य प्रयासः कीदृशः कथितः?
(ङ) अन्ते तपोदत्तः विद्याग्रहणाय कुत्र गतः?

3. भिन्नवर्गीयं पदं चिनुत-

यथा- अधिरोढुम्, गन्तुम्, **सेतुम्,** निर्मातुम्।

(क) निःश्वस्य, चिन्तय, विमृश्य, उपेत्य।
(ख) विश्वसिमि, पश्यामि, करिष्यामि, अभिलषामि।
(ग) तपोभिः, दुर्बुद्धिः, सिकताभिः, कुटुम्बिभिः।

4. (क) रेखाङ्कितानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि?

(*i*) अलमलं <u>तव</u> श्रमेण।
(*ii*) न <u>अहं</u> सोपानमार्गैरट्टमधिरोढुं विश्वसिमि।
(*iii*) चिन्तितं <u>भवता</u> न वा।
(*iv*) गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो <u>मया</u> करणीयः।
(*v*) भवद्भिः उन्मीलितं <u>मे</u> नयनयुगलम्।

(ख) अधोलिखितानि कथनानि कः कं प्रति कथयति?

कथनानि	कः	कम्
(*i*) हा विधे! किमिदं मया कृतम्?	....	....
(*ii*) भो महाशय! किमिदं विधीयते।	....	....
(*iii*) भोस्तपस्विन्! कथं माम् उपरुणत्सि।	....	....

(*iv*) सिकताः जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किम्? ....
(*v*) नाहं जाने कोऽस्ति भवान्? ....

5. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) तपोदत्तः **तपश्चर्यया** विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्ति।
(ख) **तपोदत्तः** कुटुम्बिभिः मित्रैः गर्हितः अभवत्।
(ग) पुरुषः **नद्यां** सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते।
(घ) तपोदत्तः **अक्षरज्ञानं** विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलषति।
(ङ) तपोदत्तः **विद्याध्ययनाय** गुरुकुलम् अगच्छत्।
(च) **गुरुगृहं** गत्वैव विद्याभ्यासः करणीयः।

6. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितविग्रहपदानां समस्तपदानि लिखत–

विग्रहपदानि	**समस्तपदानि**
यथा– संकल्पस्य सातत्येन	संकल्पसातत्येन
(क) अक्षराणां ज्ञानम्	....
(ख) सिकतायाः सेतुः	....
(ग) पितुः चरणैः	....
(घ) गुरोः गृहम्	....
(ङ) विद्यायाः अभ्यासः	....

(अ) उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं कुरुत–

समस्तपदानि	**विग्रहः**
यथा– नयनयुगलम्	नयनयोः युगलम्
(क) जलप्रवाहे	....
(ख) तपश्चर्यया	....
(ग) जलोच्छलनध्वनिः	....
(घ) सेतुनिर्माणप्रयासः	....

7. उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकात् पदम् आदाय नूतनं वाक्यद्वयं रचयत–

(क) **यथा**– अलं चिन्तया। ('अलम्' योगे तृतीया)

(*i*) .... (भय)
(*ii*) .... (कोलाहल)

(ख) **यथा**– माम् अनु स गच्छति। ('अनु' योगे द्वितीया)

(*i*) .... (गृह)

(*ii*) .... (पर्वत)

(ग) **यथा**– अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यं प्राप्तुमभिलषसि। ('विना' योगे द्वितीया)

(*i*) .... (परिश्रम)

(*ii*) .... (अभ्यास)

(घ) **यथा**– सन्ध्यां यावत् गृहमुपैति। ('यावत्' योगे द्वितीया)

(*i*) .... (मास)

(*ii*) .... (वर्ष)

योग्यताविस्तारः

यह नाट्यांश **सोमदेवरचित कथासरित्सागर** के सप्तम लम्बक (अध्याय) पर आधारित है। यहाँ तपोबल से विद्या पाने के लिए प्रयत्नशील तपोदत्त नामक एक बालक की कथा का वर्णन है। उसके समुचित मार्गदर्शन के लिए वेष बदलकर इंद्र उसके पास आते हैं और पास ही गंगा में बालू से सेतुनिर्माण के कार्य में लग जाते हैं। उन्हें वैसा करते देख तपोदत्त उनका उपहास करता हुआ कहता है–'अरे! किसलिए गंगा के जल में व्यर्थ ही बालू से पुल बनाने का प्रयत्न कर रहे हो?' इंद्र उन्हें उत्तर देते हैं–यदि पढ़ने, सुनने और अक्षरों की लिपि के अभ्यास के बिना तुम विद्या पा सकते हो तो बालू से पुल बनाना भी संभव है।

(क) **कवि परिचय** – कथासरित्सागर के रचयिता कश्मीर निवासी **श्री सोमदेव भट्ट** हैं। ये कश्मीर के राजा श्री अनन्तदेव के सभापण्डित थे। कवि ने रानी सूर्यमती के मनो-विनोद के लिए कथासरित्सागर नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ का मूल, महाकवि गुणाढ्य की बृहत्कथा (प्राकृत भाषा का ग्रन्थ) है।

(ख) **ग्रन्थ परिचय** – कथासरित्सागर अनेक कथाओं का महासमुद्र है। इस ग्रन्थ में अठारह लम्बक हैं। मूलकथा की पुष्टि के लिए अनेक उपकथाएँ वर्णित की गई हैं। प्रस्तुत कथा रत्नप्रभा नामक लम्बक से सङ्कलित की गई है। ज्ञान-प्राप्ति केवल तपस्या से नहीं, बल्कि गुरु के समीप जाकर अध्ययनादि कार्यों के करने से होती है। यही इस कथा का सार है।

(ग) **पर्यायवाचिनः शब्दाः**–

इदानीम् – अधुना, साम्प्रतम्, सम्प्रति।
जलम् – वारि, उदकम्, सलिलम्।
नदी – सरित्, तटिनी, तरङ्गिणी।
पुरुषार्थः – उद्योगः, उद्यमः, परिश्रमः।

(घ) **विलोमशब्दाः-**

दुर्बुद्धिः - सुबुद्धिः
गर्हितः - प्रशंसितः
प्रवृत्तः - निवृत्तः
अभ्यासः - अनभ्यासः
सत्यम् - असत्यम्

(ङ) **आत्मगतम्** - नाटकों में प्रयुक्त यह एक पारिभाषिक शब्द है। जब नट या अभिनेता रंगमञ्च पर अपने कथन को दूसरों को सुनाना नहीं चाहता, मन में ही सोचता है तब उसके कथन को 'आत्मगतम्' कहा जाता है।

(च) **प्रकाशम्** - जब नट या अभिनेता के संवाद रंगमञ्च पर दर्शकों के सामने प्रकट किये जाते हैं, तब उन संवादों को 'प्रकाशम्' शब्द से सूचित किया जाता है।

(छ) **अतिरामता** - राम से आगे बढ़ जाने की स्थिति को 'अतिरामता' कहा गया है-रामम् अतिक्रान्तः = अतिरामः, तस्य भावः = **अतिरामता**। राम ने शिलाओं से समुद्र में सेतु का निर्माण किया था। विप्र-रूपधारी इन्द्र को सिकता-कणों से सेतु बनाते देख तपोदत्त उनका उपहास करते हुए कहता है कि तुम राम से आगे बढ़ जाना चाहते हो।

निम्नलिखित कहावतों को पाठ में आए हुए संस्कृत वाक्यांश में पहचानिये-

(*i*) सुबह का भूला शाम को घर लौट आये, तो भूला नहीं कहलाता है।
(*ii*) मेरी आँखें खुल गईं।

(ज) **आञ्जनेयम्** - अञ्जना के पुत्र होने के कारण हनुमान् को आञ्जनेय कहा जाता है। हनुमान् उछलकर कहीं भी जाने में समर्थ थे। इसलिए इन्द्र के यह कहने पर कि मैं सीढ़ी से जाने में विश्वास नहीं करता हूँ अपितु उछलकर ही जाने में समर्थ हूँ, तपोदत्त फिर से उपहास करते हुए कहता है कि पहले आपने पुल निर्माण में राम को लाँघ लिया और अब उछलने में हनुमान् को भी लाँघने की इच्छा कर रहे हैं।

(झ) **अक्षरज्ञानस्य माहात्म्यम्-**

(*i*) विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।
(*ii*) किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।
(*iii*) यः पठति लिखति पश्यति परिपृच्छति पण्डितानुपाश्रयते।
तस्य दिवाकरकिरणैः नलिनीदलमिव विकास्यते बुद्धिः।।

दशमः पाठः

जटायोः शौर्यम्

0961CH10

प्रस्तुतोऽयं पाठ्यांशः महर्षिवाल्मीकिविरचितस्य **"रामायणम्"** इत्यस्य ग्रन्थस्य अरण्यकाण्डात् समुद्धृतोऽस्ति। अत्र जटायु-रावणयोः युद्धस्य वर्णनम् अस्ति। पक्षिराजोजटायुः पञ्चवटीकानने विलपन्त्याः सीतायाः करुणक्रन्दनं श्रुत्वा तत्र गच्छति। सः सीतापहरणे निरतं रावणं तस्मात् निन्द्यकर्मणः निवृत्त्यर्थं प्रबोधयति । परञ्च अपरिवर्तितमतिः रावणः तमेव अपसारयति। ततः पक्षिराजः तुण्डेन पादाभ्याञ्च प्रहरति, स्वनखैः रावणस्य गात्राणि विदारयति, एवञ्च बहुविधा-क्रमणेन रावणः भग्नधन्वा हतसारथिः हताश्वः व्रणी विरथश्च सञ्जातः। खगाधिपस्य पुनः पुनः अतिशयप्रहारैः व्रणी महाबली रावणः मूर्च्छितो भवति।

सा तदा करुणा वाचो विलपन्ती सुदुःखिता।
वनस्पतिगतं गृध्रं ददर्शायतलोचना ।।1।।

जटायो पश्य मामार्य ह्रियमाणामनाथवत्।
अनेन राक्षसेन्द्रेणाकरुणं पापकर्मणा ।।2।।

तं शब्दमवसुप्तस्तु जटायुरथ शुश्रुवे।
निरीक्ष्य रावणं क्षिप्रं वैदेहीं च ददर्श सः ।।3।।

ततः पर्वतशृङ्गाभस्तीक्ष्णतुण्डः खगोत्तमः।
वनस्पतिगतः श्रीमान्व्याजहार शुभां गिरम् ।।4।।

निवर्तय मतिं नीचां परदाराभिमर्शनात्।
न तत्समाचरेद्धीरो यत्परोऽस्य विगर्हयेत् ।।5।।

वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथः कवची शरी।
न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे गमिष्यसि ।।6।।

तस्य तीक्ष्णनखाभ्यां तु चरणाभ्यां महाबलः।
चकार बहुधा गात्रे व्रणान् पतगसत्तमः ।।7।।

ततोऽस्य सशरं चापं मुक्तामणिविभूषितम्।
चरणाभ्यां महातेजा बभञ्जा पतगेश्वरः ।।8।।

स भग्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
तलेनाभिजघानाशु जटायुं क्रोधमूर्च्छितः ।।9।।

जटायुस्तमतिक्रम्य तुण्डेनास्य खगाधिपः।
वामबाहून् दश तदा व्यपाहरदरिन्दमः ।।10।।

शब्दार्थाः

ह्रियमाणाम्	नीयमानाम्	ले जाई जाती/अपहरण की जाती हुई	Being kidnapped
राक्षसेन्द्रेण	दानवपतिना	राक्षसों के राजा द्वारा	By the king of demons
परदाराभिमर्शनात्	परस्त्रीस्पर्शात्	पराई स्त्री के स्पर्श से	From touching the other's wife
विगर्हयेत्	निन्द्यात्	निन्दा करनी चाहिए	(He/she) may criticize
धन्वी	धनुर्धरः	धनुर्धर	Archer
कवची	कवचधारी	कवच धारण किए हुए	Armed
शरी	बाणधरः	बाण को लिए हुए	Holding arrows
व्याजहार	अकथयत्	कहा	(He/she) said
निवर्तय	वारणं कुरु	मना करो, रोको	(you) stop
व्यपाहरत्	उत्खातवान्	उखाड़ दिया	Removed
व्रणान्	प्रहारजनितस्फोटान्	प्रहार (चोट) से होने वाले घावों को	Wounds
बभञ्ज	भग्नं कृतवान्	तोड़ दिया	Broke
पतगेश्वरः	जटायुः	जटायु (पक्षिराज)	The king of birds
भग्नधन्वा	भग्नः धनुः यस्य सः	टूटे हुए धनुष वाला	Holding broken arch
हताश्वः	हताः अश्वाः यस्य सः	मारे गए घोड़ों वाला	Whose horses are dead
अभिजघान	आक्रान्तवान्	हमला किया	Attacked
आशु	शीघ्रम्	शीघ्र ही	Quickly
तुण्डेन	मुखेन, चञ्च्वा	चोंच के द्वारा	By beak
खगाधिपः	पक्षिराजः	पक्षियों का राजा	King of birds
अरिन्दमः	शत्रुदमनः, शत्रुनाशकः	शत्रुओं को नष्ट करने वाला	Destroyer of enemies

अन्वयः

तदा सुदुःखिता करुणाः वाचः विलपन्ती आयतलोचना सा (सीता) वनस्पतिगतं गृध्रं ददर्श ॥1॥

(हे) आर्य जटायो! अनेन पापकर्मणा राक्षसेन्द्रेण अनाथवत् अकरुणं ह्रियमाणां मां पश्य ॥2॥

अथ सः अवसुप्तः जटायुः तु तं शब्दं शुश्रुवे, क्षिप्तं रावणं निरीक्ष्य वैदेहीं च ददर्श ॥3॥

ततः वनस्पतिगतः पर्वतशृङ्गाभः तीक्ष्णतुण्डः श्रीमान् खगोत्तमः शुभां गिरं व्याजहार ॥4॥

(हे रावण!) परदारभिमर्शनात् नीचां मतिं निवर्तय, धीरः तत् न समाचरेत्, यत् अस्य परः विगर्हयेत् ॥5॥

अहं (जटायुः) वृद्धः, त्वं (तु) सरथः, कवची, युवा, अपि च मे (जीविते सतिः) वैदेहीम् आदाय कुशली न गमिष्यसि ॥6॥

महाबलः पतगसत्तमः (जटायुः) तु तीक्ष्णनखाभ्यां चरणाभ्यां तस्य गात्रे बहुधा व्रणान् चकार ॥7॥

ततः महातेजाः पतगोत्तमः (जटायुः) अस्य (रावणस्य) मुक्तामणिविभूषितं सशरं चापं चरणाभ्यां बभञ्च॥8॥

सः भग्नधन्वा हताश्वः हतसारथिः विरथः क्रोधमूर्च्छितः (रावणः) आशु तलेन जटायुम् अभिजघान ॥9॥

अरिन्दमः खगाधिपः जटायुः तम् अतिक्रम्य अस्य दश वामबाहून् व्यपाहरत् ॥110॥

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) आयतलोचना का अस्ति?
(ख) सा कं ददर्श?
(ग) खगोत्तमः कीदृशीं गिरं व्याजहार?
(घ) जटायुः काभ्यां रावणस्य गात्रे व्रणं चकार?
(ङ) अरिन्दमः खगाधिपः कति बाहून् व्यपाहरत्?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) "जटायो! पश्य" इति का वदति?
(ख) जटायुः रावणं किं कथयति?
(ग) क्रोधवशात् रावणः किं कर्तुम् उद्यतः अभवत्?
(घ) पतगेश्वरः रावणस्य कीदृशं चापं सशरं बभञ्ज?
(ङ) जटायुः केन वामबाहुं दंशति?

3. उदाहरणमनुसृत्य णिनि-प्रत्ययप्रयोगं कृत्वा पदानि रचयत-

यथा-	गुण	+	णिनि	-	गुणिन् (गुणी)
	दान	+	णिनि	-	दानिन् (दानी)
(क)	कवच	+	णिनि	-	....
(ख)	शर	+	णिनि	-	....
(ग)	कुशल	+	णिनि	-	....

(घ) धन + णिनि – ....
(ङ) दण्ड + णिनि – ....

(अ) रावणस्य जटायोश्च विशेषणानि सम्मिलितरूपेण लिखितानि तानि पृथक्-पृथक् कृत्वा लिखत–

युवा, सशरः, वृद्धः, हताश्वः, महाबलः, पतगसत्तमः, भग्नधन्वा, महागृध्रः, खगाधिपः, क्रोधमूर्च्छितः, पतगेश्वरः, सरथः, कवची, शरी

यथा–

रावणः	**जटायुः**
युवा	वृद्धः
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

4. 'क' स्तम्भे लिखितानां पदानां पर्यायाः 'ख' स्तम्भे लिखिताः। तान् यथासमक्षं योजयत–

क	**ख**
कवची	अपतत्
आशु	पक्षिश्रेष्ठः
विरथः	पृथिव्याम्
पपात	कवचधारी
भुवि	शीघ्रम्
पतगसत्तमः	रथविहीनः

5. अधोलिखितानां पदानां/विलोमपदानि मञ्जूषायां दत्तेषु पदेषु चित्वा यथासमक्षं लिखत–

मन्दम् पुण्यकर्मणा हसन्ती अनार्य अनतिक्रम्य
देवेन्द्रेण प्रशंसेत् दक्षिणेन युवा

पदानि	**विलोमशब्दाः**
(क) विलपन्ती	....
(ख) आर्य	....

(ग) राक्षसेन्द्रेण ....
(घ) पापकर्मणा ....
(ङ) क्षिप्रम् ....
(च) विगर्हयेत् ....
(छ) वृद्धः ....
(ज) वामेन ....
(झ) अतिक्रम्य ....

6. (अ) अधोलिखितानि विशेषणपदानि प्रयुज्य संस्कृतवाक्यानि रचयत–

(क) शुभाम् .... (ख) खगाधिपः ....
(ग) हतसारथिः .... (घ) वामेन ....
(ङ) कवची ....

(आ) उदाहरणमनुसृत्य समस्तं पदं रचयत–

यथा– त्रयाणां लोकानां समाहारः – त्रिलोकी

(क) पञ्चानां वटानां समाहारः – ....
(ख) सप्तानां पदानां समाहारः – ....
(ग) अष्टानां भुजानां समाहारः – ....
(घ) चतुर्णां मुखानां समाहारः – ....

योग्यताविस्तारः

यह पाठ्यांश आदिकवि वाल्मीकि-प्रणीत रामायणम् के अरण्यकाण्ड से उद्धृत किया गया है जिसमें जटायु और रावण के युद्ध का वर्णन है। पंचवटी कानन में सीता का करुण विलाप सुनकर पक्षिश्रेष्ठ जटायु उनकी रक्षा के लिए दौड़े। वे महाबली जटायु अपने तीखे नखों तथा पञ्जों से रावण के शरीर में अनेक घाव कर देते हैं, जिसके कारण रावण विरथ होकर पृथ्वी पर गिर पड़ता है। कुछ ही क्षणों बाद क्रोधांध रावण जटायु पर प्राणघातक प्रहार करता है परंतु पक्षिश्रेष्ठ जटायु उससे अपना बचाव कर उस पर चञ्चु-प्रहार करते हैं, उसके बायें भाग की दशों भुजाओं को क्षत-विक्षत कर देते हैं।

(क) कवि परिचय

महर्षि वाल्मीकि आदिकाव्य रामायण के रचयिता हैं। कहा जाता है कि वाल्मीकि का हृदय, एक व्याध द्वारा क्रीडारत क्रौञ्चयुगल (पक्षियों के जोड़े) में से एक के मार दिये जाने पर उसकी सहचरी के विलाप को सुनकर द्रवित हो गया तथा उनके मुख से शाप के रूप में जो वाणी निकली वह श्लोक के रूप में थी। वही श्लोक लौकिक संस्कृत का आदिश्लोक माना जाता है–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

(ख) भाव विस्तार

जटायु–सूर्य के सारथी अरुण के दो पुत्र थे–सम्पाती और जटायु। जटायु पञ्चवटी वन के पक्षियों का राजा था जहाँ अपने पराक्रम एवं बुद्धिकौशल से शासन करता था। पञ्चवटी में रावण द्वारा अपहरण की गयी सीता के विलाप को सुनकर जटायु ने सीता की रक्षा के लिए रावण के साथ युद्ध किया और वीरगति पाई। इस प्रकार राज–धर्म की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले जटायु को भारतीय संस्कृति का महान् नायक माना जाता है।

(ग) सीता विषयक सूचना देते हुए जटायु ने राम से जो वचन कहे वे इस प्रकार हैं–

यामोषधीमिवायुष्मन्नन्वेषसि महावने।
सा च देवी मम प्राणाः रावणेनोभयं हृतम्॥

भाषिकविस्तारः

(क) वाक्य प्रयोग

- गिरम् – छात्रः मधुरां **गिरम्** उवाच।
- पतगेश्वरः – पक्षिराजः जटायुः **पतगेश्वरः** अपि कथ्यते।
- शरी – **शरी** रावणः निःशस्त्रेण जटायुना आक्रान्तः।
- विधूय – वीरः शत्रुप्रहारान् **विधूय** अग्रे अगच्छत्।
- व्रणान् – चिकित्सकः औषधेन **व्रणान्** विरोपितान् अकरोत्।
- व्यपाहरत् – जटायुः रावणस्य बाहून् **व्यपाहरत्**।
- आशु – स्वकार्यम् **आशु** सम्पादय।

(ख) स्त्रीप्रत्यय–

टाप् प्रत्यय–करुणा, दुःखिता, शुभा, निम्ना, रक्षणीया
ङीप् प्रत्यय–विलपन्ती, यशस्विनी, वैदेही, कमलपत्राक्षी
ति प्रत्यय–युवतिः

पुंल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग पद निर्माण में टाप्–ङीप्–ति प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। टाप् प्रत्यय का 'आ' तथा ङीप् प्रत्यय का 'ई' शेष रहता है।

यथा–

- मूषक + टाप् = मूषिका
- बालक + टाप् = बालिका
- वत्स + टाप् = वत्सा
- हसन् + ङीप् = हसन्ती
- मानिन् + ङीप् = मानिनी
- विद्वस् + ङीप् = विदुषी
- श्रीमत् + ङीप् = श्रीमती
- युवन् + ति = युवतिः

0961CH11

एकादशः पाठः

पर्यावरणम्

प्रस्तुतोऽयं पाठ्यांशः "**पर्यावरणम्**" पर्यावरणविषयकः लघुनिबन्धोऽस्ति। अत्याधुनिकजीवनशैल्यां प्रदूषणं प्राणिनां पुरतः अभिशापरूपेण समायातम्। नदीनां वारि मलिनं सञ्जातम्। शनैः शनैः धरा निर्वना जायमाना अस्ति। यन्त्रेभ्यो निःसृतेन वायुना वातावरणं विषाक्तं रुजाकारकं च भवति। वृक्षाभावात् प्रदूषणकारणाच्च बहूनां पशुपक्षिणां जीवनमेव सङ्कटापन्नं दृश्यते। वनस्पतीनाम् अभावदशायां न केवलं वन्यप्राणिनाम् अपि तु अस्माकं समेषामेव जीवनं स्थातुं नैव शक्यते। पादपाः अस्मभ्यं न केवलं शुद्धवायुमेव यच्छन्ति अपितु ते अस्माकं कृते जीवने उपयोगाय पत्राणि पुष्पाणि फलानि काष्ठानि औषधीः छायां च वितरन्ति। अस्माद् हेतोः अस्माकं कर्तव्यम् अस्ति यद् वयं वृक्षारोपणं तेषां संरक्षणम्, जलशुचिताकरणम्, ऊर्जायाः संरक्षणम्, उद्यान-तडागादीनाम् शुचितापूर्वकं पर्यावरणसंरक्षणार्थं प्रयत्नं कुर्याम। अनेनैव अस्माकं सर्वेषां जीवनम् अनामयं सुखावहञ्च भविष्यति।

प्रकृतिः समेषां प्राणिनां संरक्षणाय यतते। इयं सर्वान् पुष्णाति विविधैः प्रकारैः, सुखसाधनैः च तर्पयति। पृथिवी, जलम्, तेजः, वायुः, आकाशः च अस्याः प्रमुखाणि तत्त्वानि। तान्येव मिलित्वा पृथक्तया वाऽस्माकं पर्यावरणं रचयन्ति। आव्रियते परितः समन्तात् लोकः अनेन इति पर्यावरणम्। यथा अजातश्शिशुः मातृगर्भे सुरक्षितः तिष्ठति तथैव मानवः पर्यावरणकुक्षौ। परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणम् अस्मभ्यं सांसारिकं जीवनसुखं, सद्विचारं, सत्यसङ्कल्पं माङ्गलिकसामग्रीञ्च प्रददाति। प्रकृतिकोपैः आतङ्कितो जनः किं कर्तुं प्रभवति? जलप्लावनैः, अग्निभयैः, भूकम्पैः, वात्याचक्रैः, उल्कापातादिभिश्च सन्तप्तस्य मानवस्य क्व मङ्गलम्?

अत एव अस्माभिः प्रकृतिः रक्षणीया। तेन च पर्यावरणं रक्षितं भविष्यति। प्राचीनकाले लोकमङ्गलाशंसिन ऋषयो वने निवसन्ति स्म। यतो हि वने सुरक्षितं पर्यावरणमुपलभ्यते स्म। तत्र विविधा विहगाः कलकूजनैःश्रोत्ररसायनं ददति।

सरितो गिरिनिर्झराश्च अमृतस्वादु निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति। वृक्षा लताश्च फलानि पुष्पाणि इन्धनकाष्ठानि च बाहुल्येन समुपहरन्ति। शीतलमन्दसुगन्धवनपवना औषधकल्पं प्राणवायुं वितरन्ति।

परन्तु स्वार्थान्धो मानवः तदेव पर्यावरणम् अद्य नाशयति। स्वल्पलाभाय जना बहुमूल्यानि वस्तूनि नाशयन्ति। जनाः यन्त्रागाराणां विषाक्तं जलं नद्यां निपातयन्ति। तेन मत्स्यादीनां जलचराणां च क्षणेनैव नाशो भवति। नदीजलमपि तत्सर्वथाऽपेयं जायते। मानवाः व्यापारवर्धनाय वनवृक्षान् निर्विवेकं छिन्दन्ति। तस्मात् अवृष्टिः प्रवर्धते, वनपशवश्च शरणरहिता ग्रामेषु उपद्रवं विदधति। शुद्धवायुरपि वृक्षकर्तनात् सङ्कटापन्नो जायते। एवं हि स्वार्थान्धमानवैः विकृतिम् उपगता प्रकृतिः एव सर्वेषां विनाशकर्त्री भवति। विकृतिमुपगते पर्यावरणे विविधाः रोगाः भीषणसमस्याश्च सम्भवन्ति। तत्सर्वमिदानीं चिन्तनीयं प्रतिभाति।

धर्मो रक्षति रक्षितः इत्यार्षवचनम्। पर्यावरणरक्षणमपि धर्मस्यैवाङ्गमिति ऋषयः प्रतिपादितवन्तः। अत एव वापीकूपतडागादिनिर्माणं देवायतन-विश्रामगृहादिस्थापनञ्च

धर्मसिद्धेः स्रोतो रूपेण अङ्गीकृतम्। कुक्कुर-सूकर-सर्प-नकुलादि-स्थलचराः, मत्स्य-कच्छप-मकरप्रभृतयः जलचराश्च अपि रक्षणीयाः, यतः ते स्थलमलानाम् अपनोदिनः जलमलानाम् अपहारिणश्च। प्रकृतिरक्षया एव लोकरक्षा सम्भवति इत्यत्र नास्ति संशयः।

शब्दार्थाः

समेषाम्	सर्वेषाम्	सब का	Over all
पुष्णाति	पोषणं करोति	पुष्ट करता है	Nurtures
अजातः शिशुः	अनुत्पन्नजातकः	अजन्मा शिशु	Unborn child
कुक्षौ	गर्भे	गर्भ में	In womb
जलप्लावनैः	जलौघैः	बाढ़ से	By floods
वात्याचक्रैः	वातचक्रैः	आँधी, बवंडर	By windstorms
लोकमङ्गलाशंसिनः	समाजकल्याणकामाः	जनता के कल्याण को चाहने वाले	Well wisher of the society
श्रोत्ररसायनम्	कर्णामृतम्	कान को अच्छा लगने वाला	Nector for ears
गिरिनिर्झराः	पर्वतानां प्रपाताः	पहाड़ों से निकलने वाले झरने	Spring falls
यन्त्रागाराणाम्	यन्त्रालयानाम्	कारखानों के	Of miles
अपेयम्	पातुम् अयोग्यम्	न पीने योग्य	Undrinkable
वृक्षकर्तनात्	वृक्षाणाम् उच्छेदात्	पेड़ों के काटने से	From cutting trees
देवायतनम्	देवालयः, मन्दिरम्	मन्दिर	Temple
स्थलमलापनोदिनः	भूमिमलापसारिणः	भूमि की गन्दगी को दूर करने वाले	Removers of the garbage from the Earth

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत-**

    (क) मानवः कुत्र सुरक्षितः तिष्ठति?

    (ख) सुरक्षितं पर्यावरणं कुत्र उपलभ्यते स्म?

(ग) आर्षवचनं किमस्ति?
(घ) पर्यावरणमपि कस्य अङ्गमिति ऋषयः प्रतिपादितवन्तः?
(ङ) लोकरक्षा कया सम्भवति?
(च) अजातशिशुः कुत्र सुरक्षितः तिष्ठति?
(छ) प्रकृतिः केषां संरक्षणाय यतते?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–
(क) प्रकृतेः प्रमुखतत्त्वानि कानि सन्ति?
(ख) स्वार्थान्धः मानवः किं करोति?
(ग) पर्यावरणे विकृते जाते किं भवति?
(घ) अस्माभिः पर्यावरणस्य रक्षा कथं करणीया?
(ङ) लोकरक्षा कथं संभवति?
(च) परिष्कृतं पर्यावरणम् अस्मभ्यं किं किं ददाति?

3. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–
(क) **वनवृक्षाः** निर्विवेकं छिद्यन्ते।
(ख) **वृक्षकर्तनात्** शुद्धवायुः न प्राप्यते।
(ग) प्रकृतिः **जीवनसुखं** प्रददाति।
(घ) अजातश्शिशुः **मातृगर्भे** सुरक्षितः तिष्ठति।
(ङ) पर्यावरणरक्षणं **धर्मस्य** अङ्गम् अस्ति।

4. उदाहरणमनुसृत्य पदरचनां कुरुत–

(क) **यथा**– जले चरन्ति इति – जलचराः
स्थले चरन्ति इति – ....
निशायां चरन्ति इति – ....
व्योम्नि चरन्ति इति – ....
गिरौ चरन्ति इति – ....
भूमौ चरन्ति इति – ....

(ख) **यथा**– न पेयम् इति – अपेयम्
न वृष्टि इति – ....
न सुखम् इति – ....
न भावः इति – ....
न पूर्णः इति – ....

5. उदाहरणमनुसृत्य पदनिर्माणं कुरुत-

यथा-वि + कृ + क्तिन् = विकृतिः
(क) प्र + गम् + क्तिन् = ...
(ख) दृश् + क्तिन् = ...
(ग) गम् + क्तिन् = ...
(घ) मन् + क्तिन् = ...
(ङ) शम् + क्तिन् = ...
(च) भी + क्तिन् = ...
(छ) जन् + क्तिन् = ...
(ज) भज् + क्तिन् = ...
(झ) नी + क्तिन् = ...

6. निर्देशानुसारं परिवर्तयत-

यथा- स्वार्थान्धो मानवः अद्य पर्यावरणं नाशयति (बहुवचने)।
स्वार्थान्धाः मानवाः अद्य पर्यावरणं नाशयन्ति।
(क) सन्तप्तस्य मानवस्य मङ्गलं कुतः? (बहुवचने)
(ख) मानवाः पर्यावरणकुक्षौ सुरक्षिताः भवन्ति। (एकवचने)
(ग) वनवृक्षाः निर्विवेकं छिद्यन्ते। (एकवचने)
(घ) गिरिनिर्झराः निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति। (द्विवचने)
(ङ) सरित् निर्मलं जलं प्रयच्छति। (बहुवचने)

(अ) पर्यावरणरक्षणाय भवन्तः किं करिष्यन्ति इति विषये पञ्च वाक्यानि लिखत।

यथा- अहं विषाक्तम् अवकरं नदीषु न पातयिष्यामि।
(क) ....
(ख) ....
(ग) ....
(घ) ....
(ङ) ....

7. उदाहरणमनुसृत्य उपसर्गान् पृथक्कृत्वा लिखत-

यथा- संरक्षणाय - सम्
(i) प्रभवति - ....

(*ii*) उपलभ्यते – ....

(*iii*) निवसन्ति – ....

(*iv*) समुपहरन्ति – ....

(*v*) वितरन्ति – ....

(*vi*) प्रयच्छन्ति – ....

(*vii*) उपगता – ....

(*viii*) प्रतिभाति – ....

(अ) उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं लिखत–

यथा– तेजोवायुः – तेजः वायुः च।
गिरिनिर्झराः – गिरयः निर्झराः च।

(*i*) पत्रपुष्पे – ....

(*ii*) लतावृक्षौ – ....

(*iii*) पशुपक्षिणौ – ....

(*iv*) कीटपतङ्गौ – ....

परियोजनाकार्यम्

(क) विद्यालयप्राङ्गणे स्थितस्य उद्यानस्य वृक्षाः पादपाश्च कथं सुरक्षिताः स्युः तदर्थं प्रयत्नः करणीयः इति सप्तवाक्येषु लिखत।

(ख) अभिभावकस्य शिक्षकस्य वा सहयोगेन एकस्य वृक्षस्य आरोपणं करणीयम्। (यदि स्थानम् अस्ति।) तर्हि विद्यालय-प्राङ्गणे, नास्ति चेत् स्वस्मिन् प्रतिवेशे, गृहे वा।) कृतं सर्वं दैनन्दिन्यां लिखित्वा शिक्षकं दर्शयत।

योग्यताविस्तारः

यह पाठ पर्यावरण को ध्यान में रखकर लिखा गया एक लघु निबन्ध है। वर्तमान युग में प्रदूषित वातावरण मानव-जीवन के लिए भयङ्कर अभिशाप बन गया है। नदियों का जल कलुषित हो रहा है, वन वृक्षों से रहित हो रहे हैं, मिट्टी का कटाव बढ़ने से बाढ़ की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। कल-कारखानों और वाहनों के धुएँ से वायु विषैली हो रही है। वन्य-प्राणियों की जातियाँ भी नष्ट हो रही हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार वृक्षों एवं वनस्पतियों के अभाव में मनुष्यों के लिए जीवित रहना असम्भव प्रतीत होता है। पत्र, पुष्प, फल, काष्ठ, छाया एवं औषधि प्रदान करने वाले पादपों एवं वृक्षों की उपयोगिता वर्तमान समय में पूर्वापेक्षया अधिक है।

(क) **निम्नलिखित शब्दयुग्मों के भेद देखने योग्य हैं-**

सङ्कल्पः - सत्सङ्कल्पः
आचारः - सदाचारः
जनः - सज्जनः
सङ्गतिः - सत्सङ्गतिः
मतिः - सन्मतिः

(ख) **आर्षवचन** - ऋषि के द्वारा कहा गया वचन **'आर्षवचन'** कहलाता है।

(ग) **पञ्चतत्त्व** - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। इन पाँच तत्त्वों से ही यह शरीर बनता है।

समानान्तर श्लोक व सूक्तियाँ

पर्यावरण से सम्बन्धित निम्न उक्तियाँ एवं श्लोक पढ़ने योग्य तथा याद करने योग्य हैं-

- हमारी संस्कृति में वृक्ष वन्दनीय हैं इसलिए वृक्षों को काटना, उखाड़ना वर्जित है।

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः॥ (मत्स्यपुराणम्)

- तुलसी का पौधा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अङ्ग है। न केवल धार्मिक अपितु चिकित्सा की दृष्टि से भी यह रक्षा करने योग्य है। इसीलिए घर के आँगन में इसके रोपण का महत्त्व है। पुराण और वैद्यक ग्रन्थों के अनुसार तुलसी का पौधा वायुप्रदूषण को दूर करता है। कहा गया है-

'तुलसी' कानने चैव गृहे यस्यावतिष्ठते।
तद्गृहं तीर्थमित्याहुः नायान्ति यमकिङ्कराः॥

तुलसीगन्धमादाय यत्र गच्छति मारुतः।
दिशो दश पुनात्याशु भूतग्रामांश्चतुर्विधान्॥ (पद्मोत्तरखण्डम्)

- तुलसी का रस तीव्रज्वर को नष्ट करता है। कहा गया है-

पीतो मरीचिचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः।
द्रोणपुष्परसोप्येवं निहन्ति विषमं ज्वरम्॥

(शाङ्र्गधर)

- वृक्षारोपण का महत्त्व-

तारयेद् वृक्षरोपी तु तस्माद् वृक्षान् प्ररोपयेत्।
तस्य पुत्रा भवन्त्येव पादपा नात्र संशयः॥

0961CH12

द्वादशः पाठः

वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्

प्रस्तुतोऽयं पाठः **"छान्दोग्योपनिषदः"** षष्ठाध्यायस्य पञ्चमखण्डात् समुद्धृतोऽस्ति। पाठ्यांशे मनोविषयकं प्राणविषयकं वाग्विषयकञ्च रोचकं तथ्यं प्रकाशितम् अस्ति। अत्र उपनिषदि वर्णितगुह्यतत्त्वानां सारल्येन अवबोधार्थम् आरुणि-श्वेतकेत्वोः संवादमाध्यमेन वाङ्मनःप्राणानां परिचर्चा कृतास्ति। ऋषिकुलपरम्परायां ज्ञानप्राप्तेः त्रीणि साधनानि सन्ति। तेषु परिप्रश्नोऽपि एकम् अन्यतमं साधनम् अस्ति। अत्र गुरुसेवनपटुः शिष्यः वाङ्मनः प्राणविषयकान् प्रश्नान् पृच्छति, आचार्यश्च तेषां प्रश्नानां समाधानं करोति।

श्वेतकेतुः – भगवन्! श्वेतकेतुरहं वन्दे।

आरुणिः – वत्स! चिरञ्जीव।

श्वेतकेतुः – भगवन्! किञ्चित्प्रष्टुमिच्छामि।

आरुणिः – वत्स! किमद्य त्वया प्रष्टव्यमस्ति?

श्वेतकेतुः – भगवन्! ज्ञातुम् इच्छामि यत् किमिदं मनः?

आरुणिः – वत्स! अशितस्यान्नस्य योऽणिष्ठः तन्मनः।

श्वेतकेतुः – कश्च प्राणः?

आरुणिः – पीतानाम् अपां योऽणिष्ठः स प्राणः।

श्वेतकेतुः – भगवन्! का इयं वाक्?

आरुणिः – वत्स! अशितस्य तेजसो योऽणिष्ठः सा वाक्। सौम्य! मनः अन्नमयं, प्राणः आपोमयः, वाक् च तेजोमयी भवति इत्यप्यवधार्यम्।

श्वेतकेतुः – भगवन्! भूय एव मां विज्ञापयतु।

आरुणिः – सौम्य! सावधानं शृणु। मथ्यमानस्य दध्नः योऽणिमा, स ऊर्ध्वं समुदीषति, तत्सर्पिः भवति।

श्वेतकेतुः – भगवन्! भवता घृतोत्पत्तिरहस्यम् व्याख्यातम्। भूयोऽपि श्रोतुमिच्छामि।

आरुणिः – एवमेव सौम्य! अश्यमानस्य अन्नस्य योऽणिमा, स ऊर्ध्वं समुदीषति। तन्मनो भवति। अवगतं न वा?

श्वेतकेतुः – सम्यगवगतं भगवन्!

आरुणिः – वत्स! पीयमानानाम् अपां योऽणिमा स ऊर्ध्वं समुदीषति स एव प्राणो भवति।

श्वेतकेतुः – भगवन्! वाचमपि विज्ञापयतु।

आरुणिः – सौम्य! अश्यमानस्य तेजसो योऽणिमा, स ऊर्ध्वं समुदीषति। सा खलु वाग्भवति। वत्स! उपदेशान्ते भूयोऽपि त्वां विज्ञापयितुमिच्छामि यत् अन्नमयं भवति मनः, आपोमयो भवति प्राणः तेजोमयी च भवति वागिति। किञ्च यादृशमन्नादिकं गृह्णाति मानवस्तादृशमेव तस्य चित्तादिकं भवतीति मदुपदेशसारः। वत्स! एतत्सर्वं हृदयेन अवधारय।

श्वेतकेतुः – यदाज्ञापयति भगवन्। एष प्रणमामि।

आरुणिः – वत्स! चिरञ्जीव। तेजस्वि नौ अधीतम् अस्तु (आवयोः अधीतम् तेजस्वि अस्तु)।

शब्दार्थाः

प्रष्टुम्	प्रश्नं कर्तुम्	प्रश्न करने/पूछने के लिए	To ask
प्रष्टव्यम्	प्रष्टुं योग्यम्	पूछने योग्य	To be asked
अशितस्य	भक्षितस्य	खाये हुए का	Of eaten
अणिष्ठः	लघिष्ठः, लघुतमः	अत्यन्त लघु अथवा सर्वाधिक लघु	Smallest
अन्नमयम्	अन्नविकारभूतम्	अन्न से निर्मित	Made of food
आपोमयः	जलमयः	जल में परिणत	Made of water
तेजोमयः	अग्निमयः	अग्नि का परिणामभूत	Made of energy

अवधार्यम्	अवगन्तव्यम्	समझने योग्य	to be understand
विज्ञापयतु	प्रबोधयतु	समझाइये	Explain
भूयोऽपि	पुनरपि	एक बार और	Again
समुदीषति	समुत्तिष्ठति, समुद्याति, समुच्छलति	ऊपर उठता है	Goes up
सर्पि:	घृतम्, आज्यम्	घी	Butter oil
अश्यमानस्य	भक्ष्यमाणस्य, निगीर्यमाणस्य	खाये जाते हुए का	Of eating
उपदेशान्ते	प्रवचनान्ते	व्याख्यान के अन्त में	At end of preaching
तेजस्वि	तेजोयुक्तम्	तेजस्विता से युक्त	Glorious
नौ अधीतम्	आवयो: पठितम्	हम दोनों द्वारा पढा हुआ	Learned by both of us

अभ्यास:

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   (क) अन्नस्य कीदृश: भाग: मन:?
   (ख) मथ्यमानस्य दध्न: अणिष्ठ: भाग: किं भवति?
   (ग) मन: कीदृशं भवति?
   (घ) तेजोमयी का भवति?
   (ङ) पाठेऽस्मिन् आरुणि: कम् उपदिशति?
   (च) "वत्स! चिरञ्जीव"– इति क: वदति?
   (छ) अयं पाठ: कस्या: उपनिषद: संगृहीत:?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   (क) श्वेतकेतु: सर्वप्रथमम् आरुणिं कस्य स्वरूपस्य विषये पृच्छति?
   (ख) आरुणि: प्राणस्वरूपं कथं निरूपयति?
   (ग) मानवानां चेतांसि कीदृशानि भवन्ति?
   (घ) सर्पि: किं भवति?
   (ङ) आरुणे: मतानुसारं मन: कीदृशं भवति?

3. **(अ) 'अ' स्तम्भस्य पदानि 'ब' स्तम्भेन दत्तै: पदै: सह यथायोग्यं योजयत–**

अ	ब
मन:	अन्नमयम्

प्राणः	तेजोमयी
वाक्	आपोमयः

(आ) अधोलिखितानां पदानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत-

(क) गरिष्ठः ....
(ख) अधः ....
(ग) एकवारम् ....
(घ) अनधीतम् ....
(ङ) किञ्चित् ....

4. उदाहरणमनुसृत्य निम्नलिखितेषु क्रियापदेषु 'तुमुन्' प्रत्ययं योजयित्वा पदनिर्माणं कुरुत-

यथा- प्रच्छ् + तुमुन् = प्रष्टुम्
(क) श्रु + तुमुन् = ...
(ख) वन्द् + तुमुन् = ...
(ग) पठ् + तुमुन् = ...
(घ) कृ + तुमुन् = ...
(ङ) वि + ज्ञा + तुमुन् = ...
(च) वि + आ + ख्या + तुमुन् = ...

5. निर्देशानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) अहं किञ्चित् प्रष्टुम् ....। (इच्छ् - लट्लकारे)
(ख) मनः अन्नमयं ....। (भू - लट्लकारे)
(ग) सावधानं ....। (श्रु - लोट्लकारे)
(घ) तेजस्वि नौ अधीतम् ....। (अस् - लोट्लकारे)
(ङ) श्वेतकेतुः आरुणेः शिष्यः ....। (अस् - लङ्लकारे)

(अ) उदाहरणमनुसृत्य वाक्यानि रचयत-

यथा- अहं स्वदेशं सेवितुम् **इच्छामि।**
(क) .... **उपदिशामि।**
(ख) .... **प्रणमामि।**
(ग) .... **आज्ञापयामि।**
(घ) .... **पृच्छामि।**
(ङ) .... **अवगच्छामि।**

6. (अ) सन्धिं कुरुत–

(क) अशितस्य + अन्नस्य = ...

(ख) इति + अपि + अवधार्यम् = ...

(ग) का + इयम् = ...

(घ) नौ + अधीतम् = ...

(ङ) भवति + इति = ...

(आ) स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(*i*) **मथ्यमानस्य** दध्नः अणिमा ऊर्ध्वं समुदीषति।

(*ii*) **भवता** घृतोत्पत्तिरहस्यं व्याख्यातम्।

(*iii*) आरुणिम् उपगम्य **श्वेतकेतुः** अभिवादयते।

(*iv*) श्वेतकेतुः **वाग्विषये** पृच्छति।

7. पाठस्य सारांशं पञ्चवाक्यैः लिखत।

योग्यताविस्तार:

यह पाठ छान्दोग्योपनिषद् के छठे अध्याय के पञ्चम खण्ड पर आधारित है। इसमें मन, प्राण तथा वाक् (वाणी) के संदर्भ में रोचक विवरण प्रस्तुत किया गया है। उपनिषद् के गूढ़ प्रसंग को बोधगम्य बनाने के उद्देश्य से इसे आरुणि एवं श्वेतकेतु के संवादरूप में प्रस्तुत किया गया है। आर्ष–परंपरा में ज्ञान–प्राप्ति के तीन उपाय बताए गए हैं जिनमें परिप्रश्न भी एक है। यहाँ गुरुसेवापरायण शिष्य वाणी, मन तथा प्राण के विषय में प्रश्न पूछता है और आचार्य उन प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

ग्रन्थ परिचय– छान्दोग्योपनिषद् **उपनिषत्साहित्य** का प्राचीन एवं प्रसिद्ध ग्रन्थ है। यह सामवेद के उपनिषद् ब्राह्मण का मुख्य भाग है। इसकी वर्णन पद्धति अत्यधिक वैज्ञानिक और युक्तिसंगत है। इसमें आत्मज्ञान के साथ-साथ उपयोगी कार्यों और उपासनाओं का सम्यक् वर्णन हुआ है। छान्दोग्योपनिषद् आठ अध्यायों में विभक्त है। इसके छठे अध्याय में 'तत्त्वमसि' का विस्तार से विवेचन प्राप्त होता है।

भावविस्तार:

आरुणि अपने पुत्र श्वेतकेतु को उपदेश देते हैं कि खाया हुआ अन्न तीन प्रकार का होता है। उसका स्थिरतम भाग मल होता है, मध्यम मांस होता है, और सबसे लघुतम मन होता है। पिया हुआ जल भी तीन प्रकार का होता है– उसका स्थविष्ठ भाग मूत्र होता है, मध्यभाग लोहित (रक्त) होता है

और अणिष्ठ भाग प्राण होता है। भोजन से प्राप्त तेज भी तीन तरह का होता है – उसका स्थविष्ठ भाग अस्थि होता है, मध्यम भाग मज्जा (चर्बी) होती है और जो लघुतम भाग है वह वाणी होती है।

जो खाया जाता है वह अन्न है। अन्न ही निश्चित रूप से मन है। न्याय और सत्य से अर्जित किया हुआ अन्न सात्विक होता है। उसे खाने से मन भी सात्विक होता है। दूषित भावना और अन्याय से अर्जित अन्न तामस होता है। कथ्य का सारांश यह है कि सात्विक भोजन से मन सात्विक होता है। राजसी भोजन से मन राजस होता है और तामस भोजन से मन की प्रवृत्ति भी तामसी हो जाती है।

इस संसार में जल ही जीवन है और प्राण जलमय होता है। तैल (तेल), घृत आदि के भक्षण से वाणी विशद होती है और भाषणादि कार्यों में सामर्थ्य की वृद्धि करती है। इसलिए वाणी को तेजोमयी कहा जाता है।

छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार मन अन्नमय है, प्राण जलमय है और वाणी तेजोमयी है।

भाषिकविस्तारः

1. **मयट् प्रत्यय प्राचुर्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है।**

यथा–	**पुंलिङ्ग**	**स्त्रीलिङ्ग**
शान्ति + मयट्	शान्तिमयः	शान्तिमयी
आनन्द + मयट्	आनन्दमयः	आनन्दमयी
सुख + मयट्	सुखमयः	सुखमयी
तेजः + मयट्	तेजोमयः	तेजोमयी

2. **मयट् प्रत्यय का प्रयोग विकार अर्थ में भी किया जाता है।**

यथा–	**पुंलिङ्ग**	**स्त्रीलिङ्ग**
मृत् + मयट्	मृण्मयः	मृण्मयी
स्वर्ण + मयट्	स्वर्णमयः	स्वर्णमयी
लौह + मयट्	लौहमयः	लौहमयी

3. जल को जीवन कहा गया है। **''जीवयति लोकान् जलम्''** यह पञ्चभूतों के अन्तर्गत भूतविशेष है। इसके पर्यायवाची शब्द हैं–
वारि, पानीयम्, उदकम्, उदम्, सलिलम्, तोयम्, नीरम्, अम्बु, अम्भस्, पयस् आदि।
जल की उपयोगिता के विषय में निम्नलिखित श्लोक द्रष्टव्य है–

पानीयं प्राणिनां प्राणस्तदायत्तं हि जीवनम्।
तोयाभावे पिपासार्तः क्षणात् प्राणैः विमुच्यते॥

अध्येतव्यः ग्रन्थः–

उपनिषदों की कहानियाँ– डॉ. भगवानसिंह, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।